25-26

मामुलिया

म० प्र० तथा उ० प्र० से एक साथ प्रकाशित

आल्हा खण्ड विशेषांक-तीन

- कजरियन को मंगादा
- इंदल का रण में जाने का सैरा
- शिवदयाल कमरिया का आल्हा
- आल्हखण्ड का अवधी पाठ
- महोबा का राजकवि जगनिक भाट और आल्हखण्ड

आल्हखंड

बुंदेलखण्ड साहित्य अकादमी प्रकाशन

बुंदेलखण्ड की संस्कृति
के प्रतीक आल्हा
और लोकजीवन की एक मनोवृत्ति
के प्रतीक माहिल
तथा लोकप्रियता के प्रतीक
जगनिक भाट को
समर्पित।

मध्यप्रदेश शासन द्वारा ग्राम पंचायतों/माध्यमिक/
उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों, महाविद्यालयों,
जिला/क्षेत्रीय पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत

अंक २५-२६

आल्हखण्ड विशेषांक तीन

☐ सम्पादन : नर्मदा प्रसाद गुप्त

☐ सहयोग : वीरेन्द्र शर्मा 'कौशिक', हरिसिंह घोष, डॉ० बलभद्र तिवारी, डॉ० कृष्ण कुमार हूँका, आशाराम त्रिपाठी, डॉ० वीरेन्द्र निर्झर, डॉ० कृष्णबिहारी लाल पाण्डेय, सुरेन्द्र शर्मा, अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', उदयशंकर दुबे

☐ इस अंक का सहयोग रु० 15·00 मात्र, डाक व्यय अलग

☐ अगले विशेष अंक लोककथा, लोकनाट्य, लोकगीत पर केन्द्रित संकलन, पाठ-निर्धारण और संक्षिप्त टिप्पणियाँ आमंत्रित लोकगीतों की स्वर-लिपियों पर विशेष

- सम्पादन : नर्मदा प्रसाद गुप्त
- सहयोग : वीरेन्द्र शर्मा कौशिक, हरिसिंह घोष, डॉ० कृष्ण कुमार हुँका, आशाराम त्रिपाठी, डॉ० वीरेन्द्र निर्झर, डॉ० कृष्णबिहारी लाल पाण्डेय, डॉ० बलभद्र तिवारी, सुरेन्द्र शर्मा, अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'

- प्रकाशन : बुन्देलखण्ड साहित्य अकादमी, छतरपुर-471001, म० प्र०
- सहयोग राशि : वार्षिक—संस्थागत रु० 30/-
  आजीवन—रु० 501/-
  संरक्षक—रु० 2001/-

- मुद्रक : देश सेवा प्रेस, 10 साहित्य सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद-211003

जोग लिखी....

• सागर से डॉ० प्रेमशंकर

भाई प्रिय,

मामुलिया का ताजा अंक आपके श्रम का परिचायक। बुजुर्ग डॉ० रामविलास शर्मा, डॉ० विद्यानिवास मिश्र से लेकर नयी पीढ़ी तक के लोग यहाँ मौजूद हैं। **बुंदेलखण्ड की संस्कृति में मानवीय सरलता के साथ स्वाभिमानी जुझारूपन के तत्व देखे जा सकते हैं। निस्संकोच भाव से कहा जा सकता है कि 'मामुलिया' बुंदेली व्यक्तित्व को उभारने में सफल है।**

शहरीकरण की प्रक्रिया में हम लोकसंस्कृति से दूर होते चले गये हैं, परिणाम यह हुआ कि हमारा देश ही हमारे लिए अजनबी होता गया। **पर माटी से सही ढंग से जुड़कर ही हम समाज को सार्थकता दे सकते हैं।** हर राष्ट्र की अपनी अस्मिता होती है, और बदलते समय में भी उसे जीवित रखना हमारा दायित्व होता है क्योंकि इसमें सामान्यजन की उपस्थिति होती है। आपकी निष्ठा को हम सब सराहते हैं, बधाई।

भाई

प्रेम शंकर,

बी-16, सागर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश

• उदयपुर से डॉ० महेन्द्र भानावत

मामुलिया का बुंदेली लोकसंस्कृति विशेषांक मिला, आभारी हूँ। **यह विशेषांक बुंदेलवासियों की लोकधर्मिता का समग्र चितराम प्रस्तुत करता है।** साथ ही इसकी प्रेरणा भी देता है कि प्रत्येक अंचल की ऐसी महत्वपूर्ण लोकसम्पदा पर अधिक से अधिक जानकारी जनसुलभ हो।

आपका,

महेन्द्र

• कन्नौज से श्री रमेश तिवारी

अंक देखकर मन-प्राणों में प्रसन्नता के पुष्प खिल गए। **आपका यह अनुष्ठान सचमुच ऐतिहासिक कीर्तिमान है।** साधुवाद स्वीकारें।

भवदीय,

रमेश तिवारी,

मकरन्दनगर, कन्नौज, उत्तर प्रदेश

• खण्डवा से श्री रामनारायण उपाध्याय

'मामुलिया' का यह अंक मामूली नहीं, मामूली आदमी को पहचानने का दस्तावेज है। इसे पढ़े बिना बुंदेलखण्ड दर्शन अधूरा है। लोकसाहित्य एवं हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ साधकों के लिए यह गरीब के धन की तरह सहेज कर रखने की अमूल्य निधि है।

रामनारायण उपाध्याय,

साहित्य कुटीर, ब्राह्मणपुरी, खण्डवा, म० प्र०

• प्रतापगढ़ से श्री आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव

प्रिय सम्पादक जी,

'मामुलिया' का 'लोकसंस्कृति विशेषांक पढ़कर मन प्रसन्न हो उठा। इस अंक के सभी सारगर्भित एवं शोधपूर्ण लेख बुंदेली लोकजीवन और उसकी संस्कृति पर समग्र रूप से प्रकाश डालते हैं। विशेषांक का महत्व इस दृष्टि से और बढ़ जाता है क्योंकि यह भारतीय लोकसाहित्य के बीच अपनी अलग अनूठी पहचान बनाता है।

यूं तो हर भाषा के लोकसाहित्य का अपना माधुर्य और सौष्ठव होता है, परन्तु बुंदेली लोकसंस्कृति और साहित्य में इन दोनों के साथ अपरिमित ओज और उमंग भी है।

इस अंक में बुंदेली लोकाचरण, बुंदेलखण्ड के पुराने जेवर, लोकपर्व, बुंदेली लोकचित्रकला, लोकसंगीत, लोकनृत्य, बुंदेलखण्ड के स्थानवाची नामों में लोक-संस्कृति के सन्दर्भ, बुंदेली कहावतों में प्राचीन लोकसंस्कृति आदि लेख रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं शोधपूर्ण हैं। इस विशेषांक में मुझे एक कमी खटकती है, वह यह कि बुंदेली लोककलाकारों, रचनाकारों पर कोई लेख नहीं है। पत्रिका के विद्वतापूर्ण लेख जहाँ उसे साहित्य में स्थापित करते हैं, वहाँ लोककला-कारों की उपेक्षा उसे अपनी जगह जमीन से अलग-थलग करती प्रतीत होती है। बुंदेली लोककलाकारों पर भी 'मामुलिया' का एक विशेषांक निकलना चाहिए, तभी सम्पादक जी का अभियान पूर्ण होगा।

भवदीय,

आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव,

भारतीय स्टेट बैंक, कुण्डा, प्रतापगढ़, उ० प्र०

• आलमपुर से डॉ० कालीचरण स्नेही

श्रद्धेय गुप्त जी,

सादर चरणस्पर्श।

'मामुलिया' का नवीन अंक मिला। पूरे अंक में बुंदेलखण्ड की माटी की गमक तथा उसके पानी की मिठास बगरी है। बुंदेलखण्ड की संस्कृति का आइना है यह अंक। डॉ० सीता किशोर जी खरे, डॉ० बलभद्र तिवारी एवं डॉ० वन्दना जैन के लेख ज्ञान की निधि हैं। वैसे पूरा अंक ही संग्रहणीय है। आपका यह प्रयास हिन्दी लोकसाहित्य की परम्परा की आधारशिला होगा। बुंदेलखण्ड के जनजीवन को पकड़ने का अच्छा प्रयास किया गया है। काश, लेखों की भाषा भी बुंदेली होती।

आपका,

कालीचरण 'स्नेही',

हिन्दी विभाग, शासकीय महाविद्यालय, आलमपुर,

जिला भिण्ड, म० प्र०

• लखनऊ से श्री अवतार सिंह

आदरणीय दद्दा जी,

सादर प्रणाम

'मामुलिया' का 'लोकसंस्कृति' अंक प्राप्त हो गया है। कृतज्ञ हूँ। 'मामुलिया' बुंदेलखण्ड की आत्मा के दर्शन कराती है। बुंदेली संस्कृति की सुरभि सभी को सुवासित कर मानव जाति को कलात्मकता के समीप लाकर जीवन जीने की कला भी सिखाती है।

आपके माध्यम से विन्ध्याचल की उत्तुंग श्रेणियों को वाणी प्राप्त हो गयी है, उन्हें अपना संदेश सम्पूर्ण विश्व को देने दें। जब भी ऋषि अगस्त्य जैसे विद्वज्जन विन्ध्यभूमि पर आये, उसने विनम्र भाव से नतमस्तक हो उनका स्वागत ही नहीं किया, बल्कि उनकी आगामी यात्रा में उनका पथ-प्रदर्शक या सहगामी भी बन गया। आप भावी पीढ़ी की आगामी यात्रा को सहज बना रहे हैं। यह बहुत बड़ा उपकार सर्वदा याद रखा जायेगा।

विनम्र नमन के साथ,

आपका कृपाकांक्षी,

राम अवतार सिंह,

18/62, इंदिरा नगर, लखनऊ-16, उ० प्र०

• महोबा से श्री बाबूलाल गुप्त

आदरणीय भाई साहब,

'लोकसंस्कृति' विशेषांक की प्रशंसा करना मेरे वश का नहीं है, पर इतना जरूर कहूँगा कि 'मामुलिया' बुंदेलखण्ड का हृदय और मष्तिष्क दोनों है। उसे जीवित रखने के लिए बुंदेलखण्ड के सभी साहित्यकारों को संगठित हो जाना चाहिए। यह बहुत बड़ी बात है कि 'मामुलिया' के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। आप आगे बने रहें, हम सब आपके पदचिह्नों पर चलने को तैयार हैं। सभी बुंदेलखण्डवासियों से मेरा अनुरोध छापें कि वे रु० पाँच सौ प्रदान कर 'मामुलिया' की स्थायी निधि में जमा करें और उसे स्थायी बनायें।

आपका,

बाबूलाल गुप्त,

ऊदल चौक, महोबा, जनपद-हमीरपुर, उ० प्र०

• भोपाल से श्री अम्बा प्रसाद श्रीवास्तव

प्रिय श्री भाई नर्मदा प्रसाद जी,

बहुत समय से व्यक्तिश: भेंट न होने पर भी मित्रों के द्वारा आपके विषय में समाचार मिलते ही रहते हैं। इधर 'मामुलिया' के कुछ पुराने अंक देखने को मिले। इसमें सन्देह नहीं कि बुंदेलखण्ड के विषय में जैसी बहुमूल्य सामग्री 'मामुलिया' ने दी है, वह अद्भुत है। बुंदेलखण्ड के प्रति जिज्ञासु जो व्यक्ति 'मामुलिया' नहीं देखते, उन्हें एक बड़े लाभ से वंचित ही रह जाना पड़ता है। मैं चाहता हूँ कि मुझे पत्रिका के सभी पुराने अंक देखने को मिलें।

आपका,

अम्बा प्रसाद श्रीवास्तव,

भूतपूर्व निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क संचालनालय,

48/28, टी० टी० नगर, भोपाल, मध्य प्रदेश

• भभुवा से श्री प्रतापसिंह सचान

आदरणीय गुप्त जी,

आज अपने एक स्नेही मित्र के घर में आप द्वारा प्रकाशित 'मामुलिया' पत्रिका मिली। इस पत्रिका की उत्कृष्टता वर्णनातीत है। यह पत्रिका नवीन विचारधाराओं से समाहित होने के कारण इतिहास एवं साहित्य विषय के अध्येताओं एवं शोधछात्रों के लिए अजस्र प्रेरणास्रोत है।...

आपका,

प्रतापसिंह,

प्रधानाचार्य, आदर्श किसान इण्टर कालेज,

भभुवा (बांदा), उ० प्र०

□□

अपनी धरोहर की रक्षा करें कागज के एक ओर लिखें

लोकगीत-संकलन-प्रपत्र

(प्रत्येक लोकगीत के साथ इस प्रपत्र को भरकर नत्थी कर दें)

- ☐ संकलित लोकगीत/लोकगाथा
- ☐ प्रचलन का स्थान/क्षेत्र
- ☐ जाति या वर्ग जिसमें प्रचलित है
- ☐ किस अवसर पर गाया जाता है
- ☐ किसके द्वारा, स्त्री/पुरुष/दोनों
- ☐ प्राप्त साधन
- ☐ निर्माता का नाम व परिचय
- ☐ गायकी या गायनशैली के बारे में
- ☐ गुरु-शिष्य-परम्परा
- ☐ प्रयुक्त वाद्य
- ☐ गायकी के प्रसिद्ध कलाकार और उनका परिचय, पते आदि
- ☐ स्वरलिपि संलग्न संख्या
- ☐ लोकगीतों की कुल संख्या
- ☐ विशेष सूचनाएँ
- ☐ संकलनकर्त्ता का नाम व पता
- ☐ जाति एवं वर्ग
- ☐ आयु
- ☐ संकलन की तिथि

- संकलनकर्ता का नाम लोकगीत के साथ प्रकाशित किया जायेगा।
- संकलनकर्ताओं में से तीन को पुरस्कृत किया जायेगा।
- अपने क्षेत्र के विशिष्ट गायकों के नाम व पते लिखें।
- अकादमी की कैसेट-संग्रह की योजना को सफल बनाने के लिए लोकगीत टेपांकित कैसेट भेजें। योजना के भागीदारों का नाम प्रकाशित किया जायेगा।

तुम मोरे रैया रन के जुझारू

—नर्मदा प्रसाद गुप्त

• गाड़ीबारे मसक दे बैल, अबैं पुरवैया के बादर ऊन आये

वर्षा आ गई, क्योंकि पुरवाई (हवा) चलने पर बादल छा गए। बुंदेली बाला समझती है कि ये बादल जरूर बरसेंगे, इसलिए वह गाड़ीवान को चेतावनी देती है कि 'गाड़ीबारे मसक दे बैल' (बैलों को जल्दी दौड़ाओ)। इस लोकगीत की आखिरी पंक्ति तो और भी रसमयी है—

> अगम बदरिया ऊनई रसिया, पच्छम बरस गये मेह।
> घूंघटा बदरिया ऊनई रसिया, गलुअन बरस गये मेह।

गाड़ीवान ने गाड़ी दौड़ाई तो होगी, पर बादल कैसे मानते। जिस तरह सामने से आई बदरिया पीछे बरस गई, उसी तरह घूंघट में घिरी बदरिया कपोलों पर बरस पड़ी। वास्तव में वर्षा चाहे बाहर की हो, चाहे भीतर की, किसी की बाट नहीं जोहती।

सजी-धजी 'मामुलिया' भी गति की 'गाड़ी' पर बैठी जा रही है और उसकी इस यात्रा के 24 पड़ाव पार हो चुके हैं। वर्षा के इस मौसम में वह भी 'गाड़ीवान' से बैल दौड़ाने की ताकीद करती है, ताकि वह अपने प्रिय 'लक्ष्य' से अभिसार कर सके। लेकिन गाड़ी तो गाड़ी है (सक्षम सरकारी या प्राइवेट बस नहीं), इसलिए 'प्रिय' को प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी और आप यह निश्चय कर लीजिए कि वह भी 'प्रिय' (पाठक) के विरह में कपोलों पर मोती की तरह जड़े आंसुओं के साथ जब भी मिलेगी, तब और भी सुन्दर लगेगी। आप तो यह देखें कि उसके वियोग में कितनी व्याकुलता है, कितनी तड़पन। और यदि 'प्रिय' को बेचैनी है, तो वह भी करीब आकर उस 'गाड़ी' को वेग दे।

• माई के रोये से नदिया बहत है, बाबुल के रोये बेलाताल

आंसुओं में इतनी ताकत है कि माँ के रोने से नदी बहने लगती है और पिता के रोने से बेलाताल जैसा बड़ा तालाब उफन पड़ता है, भाई के रोने से

छाती फटती है और भौजी का हृदय कठोर है, वह रोती ही नहीं। केवल रुदन से ही परिवार के संबंधों की व्याख्या कर दी गई है। भावात्मकता के कारण ये अतिशयोक्तिपूर्ण पंक्तियाँ हर पाठक को प्रभावित करती हैं। फिर नदी, तालाब आदि से भी प्रेम की माप मापी जा सकती है। इन लोकगीतों का विश्लेषण भावात्मक होता है, तो पाठक या श्रोता उनसे प्रभावित होता है। मेरा मतलब है कि भावात्मक या रसात्मक समीक्षा लोकसाहित्य का प्रमुख अंग रही है। उस दिन एक गोष्ठी में एक विद्वान साथी ने निर्णय दे डाला कि भावात्मक या रसात्मक विश्लेषण में रंजित होने के कारण सभी आलेख बोगस हैं। मैं मानता हूँ कि वैज्ञानिक शोधपरक दृष्टि आवश्यक है, पर रसात्मक या भावात्मक समीक्षा को नकारा नहीं जा सकता। आम आदमी पर असर डालना इसी प्रकार की समीक्षा का धर्म है, वैज्ञानिक समीक्षा तो एक खास चुने हुए वर्ग के लिए है। अतएव यदि लोकसाहित्य को आम आदमी तक पहुँचाना है, उसे परिवर्तन का हथियार बनाना है, तो भावात्मक समीक्षा अनिवार्य है। यह अवश्य है कि वैज्ञानिक पद्धति से बुंदेली (या किसी भी) लोकसाहित्य को जाँच-परख कर, पाठ-निर्धारण कर, काल-निर्धारण करते हुए ऐतिहासिक क्रम से वर्गीकृत कर और युगचेतना के समानान्तर रखकर उसका सही मूल्यांकन किया जाए। कम से कम बुंदेली क्षेत्र में ऐसे शोध का अभाव है। आज विश्वविद्यालयों में होने वाला कार्य भी एक बने-बनाये साँचे में ढला है। 'मामुलिया' वैज्ञानिक शोधपरक कार्य के लिए विद्वानों को आमंत्रित करती है और चुनौती लेकर जुटने वालों के लिए अभिनंदन का थाल सजाये बैठी रहेगी। तब तक, जब तक एक पूरी माला नहीं बन जाती और लोकसाहित्य का सही रूप सामने नहीं आ जाता।

• सखी री मैं तौ भई न बिरज की मोर

एक सखी दूसरी सखी से अपने मन की कसक व्यक्त करती है कि वह ब्रज प्रदेश की मोर क्यों न हुई। आखिर ब्रज प्रदेश की क्यों ? क्योंकि ब्रज में उसके आराध्य कृष्ण क्रीड़ा करते हैं और यदि वे उसके पंखों से मोरमुकुट बना लेंगे, तो उसका जीवन सार्थक हो जायेगा। बुंदेलखण्ड की गोपी और ब्रज की मोर बनने की तीव्र अभिलाषा। कोई क्षेत्रीय भेदभाव नहीं, किसी भी तरह की संकीर्णता नहीं। फिर बुंदेलखण्ड एक संस्कृति-क्षेत्र है अपने कुछ विशिष्ट विशेषकों के कारण। यदि हम किसी संस्कृति-क्षेत्र की लोकसंस्कृति, भाषा, साहित्य, लोकसाहित्य, कला या लोककला आदि का अध्ययन करते हैं, तो यह कोई क्षेत्रीयतावाद या तंग दृष्टिकोण नहीं है। अनेक जनपदों में जनपदीय संस्कृति और साहित्य पर काफी कार्य हो चुका है। अतएव अब तो

अधिक से अधिक करने का लक्ष्य है। अकादमी की तरफ से लोकगीतों का संकलन प्रस्तावित है जिसको पूरा करने के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। आप अपने क्षेत्र के लोकगीत यथावत् लिखकर भेजने का कष्ट करें, जिन्हें आपके नाम से संकलित-प्रकाशित किया जाएगा। यह सब कोई संकीर्ण आंचलिकता नहीं है, वरन् बुंदेली बाला तो यही पुकारती है कि 'सखी री मैं तो भई न बिरज की मोर'।

• धरती माता तैंने काजर दये, सेंदरन भर लई माँग

धरती माता ने काले-काले बादलों से अपनी आँखों में काजल आँज लिया है, और लाल बादलों की ललाई का सेंदुर अपनी माँग में भर लिया है। हरयाली की हरी साड़ी पहनकर जैसे ही वह खड़ी हुई, सारा संसार मोहित हो गया। ऐसी अजब महिमा है धरती की। महिमा तो उस लोकगीतकार की भी है जिसने ऐसा लोकगीत रचा है। धरती के प्रति सहज प्रेम की निश्छल अभिव्यक्ति कोई एक जनपद या क्षेत्र की नहीं, पूरे देश की धरती। तत्कालीन युगचेतना को समेट कर सीधे-सादे लहजे में कह देना। ऐसे सैकड़ों गीत हैं जिनसे युगबोध टपकता है। इसी अंक में एक मंगादा और एक सैरा गीत संकलित है।

• तुम मोरे रैया रन के जुझारू

रैयाराव का अर्थ है छोटे राजा। अब राव-राजा तो चले गए, पर हर आदमी राजा हो गया। राजा का अर्थ हो गया अच्छा, सज्जन और भला। धीरे-धीरे वह एक सम्मानित सम्बोधन बन गया ! रास्ते में चले जा रहे एक मित्र को दूसरा मित्र कहता है– 'कहो राजा...'। तो पहले के रैया आज के सभी युवक हैं ही। रन के जुझारू भी हैं। लोग कहते हैं कि युद्ध की बात मत करो, युद्ध विनाश है। यदि युद्ध विनाश है तो उस विनाश से बचने के लिये भी युद्ध करना ही पड़ेगा। फिर आज तो हर जगह युद्ध है। व्यक्ति-व्यक्ति, परिवार, समाज, पास-पड़ोस, बाजार, गाँव-नगर और देश देश में। पहले के युद्धों से ज्यादा भयंकर। इन युद्धों का कोई ठिकाना नहीं कोई समय नहीं और कोई सिद्धान्त नहीं। ऐसी स्थिति में और कुछ न हो तो जुझारू होना बहुत जरूरी है। बाहर का ज्यादा भरोसा नहीं, तो भीतर की ऊर्जा अनिवार्य है। इसी भीतरी ऊर्जा के लिए ये लोकगीत प्रेरणा देते हैं और बार-बार पुकारते हैं—'तुम मोरे रैया रन के जुझारू, सो फैरैं न घोड़ी बाग हो।'

● जागो गोपाल लाल भोर भये अंगना

हे गोपाल लाल जागो, भोर आँगन तक आ गयी है, जागो। और लोक-काव्य का गोपाल तो हर लाल है जिससे हर व्यक्ति गौरवमण्डित हुआ है। इस कारण जागरण की मानसिकता के पीछे प्रेरणा की नदी हिलोरें ले रही है, अतएव उसे जागना ही चाहिए। भोर इतने पास पहुँचकर प्रतीक्षा करे और गोपाल न जागे, तो भोर लौट ही जाएगी। जगाने वाले हैं लोकगीत, वे जगाकर रहेंगे।

सवाल है लोकगीतों की विरासत के संरक्षण का। उनके संकलन, पाठ-निर्धारण और प्रकाशन का। अकादमी का संकल्प है कि सभी लोकगीत प्रकाशन में आएँ। आपका दायित्व है कि आप पूरा-पूरा सहयोग करें। योजना तभी पूरी हो सकती है, जब आप सब लोकगीत एकत्रित कर भेजें। टेपांकित कर भेजें। अगर **एक-एक टेप हर जगह से आ जाय, तो ऐसा टेप-संग्रह हो जाएगा कि उस पर पूरा अंचल गर्व करेगा।**

● सुगढ़ लोक तो चानें

हमारा लक्ष्य स्पष्ट है और वह है—**लोक के हित में लोक के लिये लोक की अभिव्यक्ति**। एक साफ-सुथरे सुगढ़ लोक को बनाने के लिए। लोक संस्कृति, लोकदर्शन और लोकधर्म को स्पष्ट करते हुए लोकाचरण के बदलाव के लिए। एक लोकदृष्टि और लोकपथ के निर्धारण के लिए। हमारा विश्वास है कि लोकसंस्कृति ही सारे भेदभावों को दूर कर सकती है, सभी विषमताओं को निर्मूल कर सकती है और समस्त समस्याओं का उपचार कर सकती है। इस संकल्प को दुहराते हुए हम सभी **सहयोगियों का अभिनन्दन करते हैं। समस्त पाठकों का। व्यक्तियों, संस्थाओं और पत्रिकाओं का। खासतौर से लेखकों और रचनाकारों का, जो दो-दो वर्ष तक धीरज रखकर हमारे लिए सामग्री जुटाते हैं।**

□

कजरियन को मंगादा

—संकलन : रामस्वरूप योगी शास्त्री
कविता गुप्ता
—सम्पादन : नर्मदा प्रसाद गुप्त

⊙

[तालबेहट-निवासी श्री रामस्वरूप योगी शास्त्री 'अमर' एक ऐसे विद्वान हैं जो लोकसाहित्य के संकलन में वर्षों से लगे हुए हैं और उसके प्रकाशन के बिना वे दुखी रहते हैं। 'मामुलिया' की चर्चा सुनकर उन्होंने अपना संकलन भेजने का संकल्प किया है। 'भुजरियन या कजरियन को मंगादा' उनकी पहली किश्त है। उन्होंने यह गीत नब्बे-पंचानबे वर्ष की एक कृपक वृद्धा से लिखा है।

इस मंगादा गीत के सम्बन्ध में शास्त्री जी का कथन है कि 'इस भुजरियों के मंगादा गीत में मलखान के बहोरन और रैया नामक दो पुत्रों के तुरकियों से युद्ध का वर्णन है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह युद्ध सिरसागढ़ में लड़ा गया था। ऐसी जनश्रुति है कि आल्हा की बहिन और मलना की बेटी चन्द्रावली का डोला भुजरियाँ सिराने के लिए बहुरिया ताल पर गया था। इस गीत में कूँकूँ तलैया और समुद्र की तरह विशाल बहुरिया ताल का उल्लेख आया है। मलखान का पुत्र रैया भुजरियाँ सिराने के समय युद्ध करते-करते उरई के मैदान में दो पोखरों के बीच मारा जाता है।' इस प्रकार शास्त्री जी ने उसके इतिहास पर दृष्टिपात किया है।

जहाँ तक इस गीत में ऐतिहासिकता का प्रश्न है, यह निर्विवाद है कि इसमें भुजरियों या कजरियों से सम्बन्धित ऐतिहासिक घटना को आधार बनाया गया है। यह निश्चित है कि ऐतिहासिक घटना एक ही है जिसमें चंदेल नरेश परमाल (परमर्दिदेव) के पुत्री चन्द्रावलि महोबा दुर्ग के द्वार से निकलकर कीर्तिसागर के तट पर कजरियाँ खोंटने गई थी और पृथ्वीराज चौहान की सेना ने उसे घेर लिया था। दूसरे दिन आल्हा-ऊदल योगी वेश में लड़े थे और कजरियाँ खोंटी गयी थीं। बाद में वीर ऊदल युद्ध करते हुए मारे गये थे। इस घटना को ही केन्द्र में रख कर राछरे और मंगादा गीत रचे गये हैं। इनमें दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ काम करती हैं—एक तो पुरानी कथा के

ढांचे और पुराने पात्रों का मिथकों के रूप में प्रयोग और दूसरी तत्कालीन परिवेश और पात्रों का पुराने ढांचे में गूंथना तथा कथानक के अभिप्रायों को उभार कर अपने उद्देश्य की सिद्धि करना। दोनों की विशिष्ट प्रणाली लोक-शैली की निजी पहचान है।

इस लोकशैली की लोकधर्मिता यह है कि पुरानी कथा का पुराना ढाँचा एक रैखिक चित्र बनाये रहता है, उसमें कोई भी कलाकार अपना रंग भर सकता है। यही कारण है कि उसमें महोबा रतन गढ़, चन्द्रावलि कोई भी पुँमर दे, चौहानों की फौज कोई भी आक्रमणकारी, आल्हा या ऊदल कोई भी भैया, कीर्तिसागर कोई भी सागर, बेला कोई भी विधवा हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में कथानक के विशिष्ट सामान्य बनकर आ जाते हैं। इस स्थिति में एक प्रश्न उठता है कि इसी की बार-बार पुनरावृत्ति क्यों होती है। उत्तर स्पष्ट है कि किसी भी आक्रमण के खिलाफ कभी व्यक्तिगत वीरता की जरूरत होती है और कभी सामूहिक वीरता की। रैया पहली का प्रतिनिधि है और उसे जाग्रत करने के लिए लँड़ू और नाहर की प्रतियोगी चुनौती दी जाती है। संगठित शौर्य के लिए एक पंक्ति देखिए—'ऐसो तो है कोऊ जा नगरी में ल्यावै भुजरियाँ सिराय।'

गीत की प्रासंगिकता के लिए लोककलाकार तत्कालीन परिवेश और चेतना का समाहार करता है। उदाहरण के लिए कचैरी, दरबार और जमीदार जैसे शब्द मध्यकालीन परिवेश को उजागर करते हैं तथा सतगढ़महला या रंग-महला अपनी घर-बखरी को अतिशयता की नींव पर खड़ा करने की प्रवृत्ति है। चौहानों की सेना को तुरकिया या फिरंगिया फौज करने से गीत का अर्थ ही बदल जाता है और अर्थ का यह बदलाव उसे तत्कालीन लोकचेतना से जोड़ देता है। कूंकूं तलैया और समुद्र की तरह लम्बा-चौड़ा बहुरिया ताल जिस विषमता का संकेत करता है, वह भी लोकसमझ का एक नमूना है। वैसे बहुरिया ताल वह है जिसका नामकरण किसी वधू के आधार पर हुआ हो अथवा जहाँ बहुएँ ही स्नानादि के लिए जाती हों। आल्हा-ऊदल, बेला आदि से पाठक इतिहास-चेतना के करीब आकर कथा की सच्चाई की खूँटी से टँगा रहता है।

जहाँ तक सम्पादन की बात है, मैंने दो पाठों को पढ़ा है और दोनों में लगभग 20 पंक्तियाँ एक-सी हैं। पहले में मध्यकालीन मिथकों का प्रयोग ज्यादा है, तो दूसरे में लोकसंस्कृति का प्रतिबिम्ब। दोनों के सम्मिलन से यह गीत

अधिक सजीव बन पड़ा है। लोकनारी का सौन्दर्य-चित्रण पूरे गीत को भावमय बना देता है। दोनों पाठों की पंक्तियों में बुंदेली शब्दों के विभिन्न रूप मिलते हैं। तालबेहट और छतरपुर के शब्दरूपों के मिश्रण से पाठ एक व्यापक क्षेत्र का द्योतक हो गया है। अन्य अंचलों के पाठ आने से लोकभाषा में और भी व्यापकता आएगी। मंगादा विधा का विश्लेषण और कभी करूँगा। मंगादा की गायकी में हर पंक्ति के अर्द्ध भाग का अंतिम शब्द या एक ही शब्द दुहराया जाता है और पंक्ति के अन्त में मंगादा जोड़ दिया जाता है। जैसा कि इस पाठ की प्रारम्भिक पंक्तियों में किया गया है। शेष भी इसी तरह पढ़ा जाय।—**नर्मदा प्रसाद गुप्त**]

⊙

मेंड़न-मेंड़न[1] फिरत मिड़ैया[2], अरे वीरा[3], खेतन फिरत किसान, मंगादा।1
काये खों माई फिरत मिड़ैया, मिड़ैया, काये खों फिरत किसान, मंगादा।2
मेंड़े खों वीरा फिरत मिड़ैया, मिड़इया, खेता खों फिरत किसान, मंगादा।3
मेंड़े खों वीरा लड़त मिड़इया, खेता खों लड़त किसान, मंगादा।4
मेंड़े खों दैहों छिरिया-त्रुकरिया[4], खेता खों मद की छांछ[5], मंगादा।5
सोने की नाँदन पोतनी गरइयो[6], महल तो दइयो पुतवाय।6
सावन भुँजरियाँ जमाँइयो बेटी, भादों में दइयो सिराय।6
काये को बीज गराइयो रैया[7], काये के दौना मँगवाय।8
काये की खाद गराइयो रैया, लयें तो भुँजरियाँ बुवाय।9
गौंजी[8] के बीज गराइयो बेटी, बरिया[9] के दौना मँगाय।10
गुबरा[10] के खाद गराइयो बेटी, दइयो भुँजरियाँ बुवाय।11
टेरो बुलाओ नाउन बिटिया, दौना तो लियो मँगाय।12
संजा[11]-सबेरे बई[12] हैं भुजरियाँ[13], उनई[14] हैं भर आधी रात।13
ऐसो तो है कोऊ जा नगरी में, ल्यावै भुजरियाँ सिराय।14
टेरो बुलाओ नउआ को लरका, नगर बुलौआ री देय।15
खोरन-खोरन सरिया[15] फिरत हैं, गलिन-गलिन असवार।16
ऐसो तो है कोऊ नगरी में रइया, ल्यावै, भुजरियाँ सिराय।17
नगर बुलौआ सबरईं हो गओ, सजे हैं सूरमाँ वीर।18
देसन-देसन की फौजें सज गयीं, गाँउन के सजे जमींदार।19
बेगई सजियो बहुयें री बिटियाँ, कर लेव सोरऊ सिंगार।20

बेगई तो सजियो बहना पुंमर दे, कर लेव सोरउ सिंगार ।21

ननद—भुजइया मन की मिलनियाँ, फुलका[16] अन्हा रईं[17] दोई केस ।22

गोरी की गोरी देखी पीड़ोनी[18] धुबिया, सिर के लछारे[19] नौने केस ।23

धुबिया का धोबै चुनरी रैया, देखई रये लुभयाय ।24

धुबिया कों मारै सिलतर[20] दाबै, धोबिन दई हरकार ।25

सपर-खोर[21] बेटी घरई खों डिगरीं,[22] धुतिया बिरछ की डार ।26

कानाँ तो धरे माई तेला-फुलेला, कानाँ तो चुटबंध डुरिया[23] हो ।27

सींकन[24] धरे बेटी तेला-फुलेला, घुल्लन[25] चुटबंध डुरिया हो ।28

कानाँ धरे माई ककई हो ककवा, कानाँ डबारी[26] नौने बीज हो ।29

कानाँ धरे माई सुरसी के जोरे[27], कानाँ तो सोरई सिंगार हो ।30

कानाँ तो धरी माई सुरसी चुनरिया, कानाँ तो सोरई सिंगार हो ।31

टिगारन[28] धरे बेटी सुरसी के जोरे, सुरसी चुनरिया, सो चुलियन[29] सोरऊ सिंगार हो, मंगादा ।32

बारन-बारन मुतियाँ हैं गोये, सैंदुर से भरा लई माँग हो ।33

लहर-लहर बेटी डोला सजाये, पचरंग लई है है चौड़ेल[30] हो ।34

कानाँ तो बंधे माई घुड़ला[31] बैंदुलिया, कानाँ तो टँगी है लगाम हो ।35

कानाँ तो धरे माई जीनाँ-पलैंचा[32], कानाँ सिरोही-तरवार हो ।36

कानाँ तो धरे माई पाग-पिछौरा, ल्याबै भुजरियाँ सिराय हो ।37

घुड़सारैं बंधे बीरा घुड़ला बैंदुलिया, घोरन[33] टँगी है लगाम हो ।38

आरन[34] धरे बीरा दीनाँ-पलैंचा, कोंनन सिरोही-तरवार हो ।39

चुलियन धरे बीरा पाग-पिछौरा, ल्याओ भुजरियाँ सिराय हो ।40

टेरो बुलाओ माई नऊआ को लरका, घोड़ी तो देव पलान हो ।41

छींकत रैया घुड़ला पलाने[35], गरजत भये असवार हो ।42

झूला झूलंतो[36] हटकै बहिनियाँ, बीरा सगुन साधें जाव हो ।43

असगुन-सगुनन वेई जो चलहैं, हारैं बे हर लैंकें जात हो ।44

झूला-झूलंती हटकै बहिनियाँ, दूधा कलेऊ[37] करैं जाव हो ।45

दूधा-कलेवा वेई जो करहैं, बीरा जो ब्याहुन जात हो ।46

भीतर हटकै गोरी सी धनियाँ, स्वामी कलेऊ करें जाव हो ।47

दूधा-कलेवा जबइँ गोरी करहों, रन तो जूझ घरै आयें हो ।48

बैठी तो रइयो रनियाँ रंगमहल में, खइयो डबन[38] के री पान ।49

जो हम आयें जियत जेइ घरियाँ, सेंदुर भराउँ तोरी माँग ।50

जरैं-बरैं[39] स्वामी तोरे सतमढ़ला[40], पानन परैं तुसार हो ।51

तोरे अकेले स्वामी जियरा बिना हो, सूनो तो सब सिंसार हो ।52

जो तो गोरी मोरी लौटी घरैं बहुरों, नौबत[41] दियो झड़वाय[42] हो ।53

गुरजन-गुरजन गोरी दियला उजारियो[43], नौबत तो दियो झड़वाय ।54

बाजन लगी हो रंग-बाँसुरिया, घूमन तो लगे हैं निमान ।55

बेगई तो सजियो बउयें-बिटियाँ, छिन-छिन हो रई अबेर[44] ।56

बउअन-बिटियन डोला सजाये, लरकन सजायी चौंड़ेल ।57

आगें तो आगें डोला चलत है, पीछूं सें चल रई चौंड़ेल ।58

डोला तो उतारे बारू-रेत में, चौंड़ेलें तला के पार हो ।59

उतरी भुजरियाँ समुद ढिक धर दईं, समुद हिलोरैं री लेत ।60

खौंटी भुजरियाँ देई-देवतै चढ़इयो बेटी, कुँअरन तो दइयो बँधवाय ।61

देसन-देसन की फौजें तो आईं, लये हैं रतनगढ़[45] घेर ।62

भगनै होय तो भगियो पुंमर दे, आई है तुरकिया[46] की फौज ।63

कै तो बहिन चौपर खेलैं[47] पर गयी, कै तो तुरकिया के हाँत[48] ।64

नाँ तो बहिन मोरी दियला उजारियों, नाँ तो नौबत झड़वाय ।65

अब का होबै मोरे जियना कों, डूब गये आजुल[49] के नांव ।66

अब का होबै मोरे जियन कों, डूब गये बाबूल[50] के नांव ।67

अब का होबै मोरे जियन कों, डूबे तो काकुल[51] के नांव ।68

हाड़न हड़सी[52] पुर गई रैया, बह गई रकत की तो धार ।69

सबकी भुजरियाँ बीरा पोंचीं अथइयाँ, हमरीं तो धरीं ललात[53] ।70

माइ की कुखिया[54] पथरा परतो, होती जनम खों री बाँझ ।71

नाहर के जाये बेटा लैंड़ू[55] पजे हैं बीरा, धरी हैं भुजरियाँ ललात ।72

काये खाँ कुखिया पथरा परतो, काये खों होती बाँझ ।73

नाहर के जाये बहिना नाहर पजे हैं[56], दैहों भुजरियाँ सिराय ।74

सब तो सिराबैं कूंकूं तलैया[57], हम तो बहुरिया के ताल[58] ।75

तुरकिया तो लड़ैं इड़ियन-छिड़ियन[59], रैया लड़ैं मैदान हो ।76

ऐंती तो सैंती[60] सालै ना रैया, सालै ना तेगा-तरवार ।77

कीला तो सालैं पौरा दोर के[61], ठट गये माँझ लिलार ।78

तुम तो रैया रन के जुझारू, सो फेरैं न घोड़ी बाग हो ।79

तुम तो रैया रन के जुझइया, सो फेरैं फेरैं रनई लै जात ।80

हाड़न हड़सरी पुर गई रैया, बह गई रकत की धार ।81

माँयें सें आ गयी घोड़ी घुड़सारैं, धनियाँ[62] ना देखी जाय ।82

तोरी तो काटों घोड़ी बचखुरी[63] री, काटों कनक किरवार[64] ।83

काये खों काटी बचखुरी मोरी, काये खों कनक किरवार।84
तुमरो रइया रन को जुझइया, सो फेर न जानै मोरी बाग।85
फेरई ना जानी मोरी बाग हो रनियाँ, सो फेरै रनई लै जाय।86
सरग भमन्ती[65] चील भवानी, तूं तो आधे सरग मँडराय।87
लोथई बता देव रैंया जसरथ की, सोनैं मढ़ा देउँ चौंच री।88
औंजर-जौंझर[66] दो पोखरा हैं, मांझ उरई के खेत।89
लोथ तो डरी रैंया जसरथ की, सोनैं मढ़ा देव, मोरी चोंच।90
मोरे कौन पाप आड़े[67] परे, भर ज्वानी में हो गयी राँड हो।91
फूलत भटोई टोरी नई, नाँ चरत बिडारी कौनउँ गाय।92
नेवते बामन री बिसारे नई, बेला[68] कौनै पाप भई राँड।93
नगर महोबौ[69] देखो नई, नाँ देखी मल्हनदे[70] सास।94
ननदी को लीपो नाको नई, कौना पाप भई राँड।95
रोबै तो बिसूरै अरी किल्ला करै[71], धर मारै सपीलन मूँड़[72]।96
कौना नें हर लये ताल बगरिया,[73] कौना ढाल-तरवार।97
रैंया से बेटा कौनें हरे की-की लग गयी मोरे सेंदुर खाँ सराप।98
बारन-बारन में मुतियां बिछुर गये[74], सेंदुर से बिछुर गयी माँग।99
करम करे ते का ऊ जनम में[75], कै छोड़ गये मोरे नाथ।100

⊙

अर्थ-संकेत :

1. खेतों की सीमाएँ 2. मेंड़ वाला, सीमा की रक्षा करने वाला व्यक्ति या देवता 3. भाई के लिए बहिन का संबोधन 4. बलि के लिए बकरी 5. महुओं की शराब निकल जाने के बाद बचा छोक 6. गिराना 7. रैंयाराव का संक्षिप्त रूप, सरदार या छोटे राजा के लिए संबोधन और बाद में किसी भी योद्धा या क्षत्रिय के लिए प्रयुक्त 8. गोजई=गेहूँ और जौ का मिश्रण 9. बरगद 10. गोबर 11. संध्या 12. बोई 13. कजरियाँ 14. उग आईं 15. पैदल सैनिक? 16. फुलक कर 17. धो रहीं 18. पिंडुली 19. लमछारे, लम्बे 20. पत्थर के नीचे 21. स्नान 22. निकलीं 23. केशबंध 24. संस्कृत शिक्य से व्युत्पन्न, छींका 25. घोड़े की आकृति

के खूंटे 26. डिब्बी 27. सुरसी नामक वस्त्र के लँहगे 28. टिपारे=ढक्कन दार डलियाँ 29. ढक्कनदार छोटी डलियाँ जिनमें शृंगार-प्रसाधन रखे जाते थे 30. चौडोल से व्युत्पन्न, आयतकार डोला जिस पर पर्दा पड़ा 31. घोड़ा 32. घोड़े पर रखने की गद्दी या काठी, ज़ीन (फारसी) से जीना और जीना से दीनाँ पाठ अनजाने ही हो गया था 33. घोड़ों की आकृति के पत्थर या लकड़ी के बने खूंटे 34. आले 35. तैयार हुए 36. झूलती हुई 37. कलेवा 38. डिब्बों 39. नष्ट हो जाय 40. सात खण्डों का प्रासाद 41. एक वाद्य 42. बजवाना 43. प्रकाशित करना 44. विलम्ब 45. एक अच्छे नगर का प्रतीक, महोबा के लिए संकेत 46. तुर्क आक्रमणकारी 47. युद्ध रूपी चौपड़ खेलने के लिए विवश होना 48. हाथ 49. अजा, पिता के पिता 50. पिता 51. काका 52. अस्थियों से भर जाना 53. लालायित 54. कोख 55. कायर 56. उत्पन्न 57. एक कल्पनात्मक तलैया, छोटी-सी सामान्य तलैया का प्रतीक 58. कीर्तिसागर जहाँ चंदेलों और चौहानों में युद्ध हुआ था, बहुरिया ताल के पाठान्तर में अच्छे-बड़े तालाबा का बोध लेकिन ऐतिहासिकता का नहीं 59. छोटी गलियाँ, कुलियाँ 60. सैंथी से सैंती=शक्ति और सेंती पर बल देने के लिए ऐंती जैसे निरर्थक शब्द का प्रयोग 61. पौंर का दरवाजा, पहले हर बड़े घर के मुख्य द्वार में कीला जड़े किवाड़ रहते थे जिन्हें खोलने के लिए व्यक्ति अपनी बलि देता था। वह किवाड़ों से चिपक जाता था और मदमस्त हाथी उसे हूदा देता था, तभी किवाड़ टूटकर गिर पड़ते थे। यह मौत बड़ी असम्मानजनक थी 62. पत्नी, स्वामिनी 63. खुरों की रक्षा के लिए पहनायी जाती है 64. घोड़े का एक आभूषण 65. आकाश में भ्रमण करने वाली 66. उजड़े हुए (?) 67. बाधा देना 68. बेला पृथ्वीराज चौहान की पुत्री का लोकप्रचलित नाम, एक प्रमुख नारी का प्रतीक 69. महोबा चंदेलों की राजधानी रहा है 70 परमर्दिदेव की पटरानी 71. चिल्लाना 72. खंभों (?) 73. छोटा महल 74. सौभाग्य के प्रतीकों या चिह्नों से विलग होना 75. पूर्व जन्म के कर्मों के फल पर विश्वास।

—तालबेहट, ललितपुर, उ० प्र०

इन्दल का रण में जाने का सैरा

—संकलन : रामस्वरूप शास्त्री
—सम्पादन : नमंदा प्रसाद गुप्त

⊙

अब जेई भूंम के भुमियां[1] मना लेव, नाव न जानें तुम्हार।
सरन तुमारे देवता गाइये, मोरी भाखा ना मारी जाय[2] ॥1
भुमियां मना लेव अरे जेई गांउ के, खेरे की खैर वहेर[3]।
सरन तुमारी सारदा गाइये, मोरी भाखा ना मारी जाय ॥2
अब कण्ठेसुरी[4] माई कण्ठन गा लेव, जिबिया[5] जती हनुमान।
सोरठ गा लेव वीरा हनुमान के, भज लेव राम के नांव ॥3
अब रामायनी राम की गा लेव, जसरथ की वलिहार।
सोरठ गा लेव वीरा हनूमान के, गढ़ लंक पौंर के द्वार ॥4
अब सदा तो भूमांनी अरे दायनी रयें, सनमुख रयें तो गनेस।
पांच देव तो अरे रच्छा करें, विरमा[6] बिसुन महेस ॥5
अब ग्यांन कथन्ते अरे ग्यांनी गये, दान करन्ते जजमान।
राज करन्ते अब राजा गये, लंकापति गये कर अम्मान[7] ॥6
अव भोरई सें अरे डुवरी[8] उड़ी, भर दुफरें लटन[9] की मार।
व्यारी की विरियां मुरका[10] उड़े, अधरातै भुंजे मौअन[11] की भरभार ॥7
अव नांय के समैया[12] अरे नई सें रये, कछु आंगू खों लियो वढ़ाय।
जौंन समैया अरे गाउन कओ, मोरी कड़ी-कड़ी मिल जाय ॥8
अव गोवर लये रे गोबर लये, सोरा[13] गऊ के अव गोबर लये,
ढिकधर अंगना लिपाय।
अव कलस घड़ूलना[14] रानी धरवा दये, गजमुतियन चौक पुराय ॥9
अव मन डेढ़ सौ कतरी सुपारी, खैंर बँटे असरार[15]।
अव पांच पान के अरे वीरा रचे, धरवा दये थार मँझार ॥10
अव भीतर गये उठ कें उदलसीं, अबै भीतर गये,
सुन लेव माता बात।
अव पांच पान के अरे वीरा रचे; कोऊ चावै जूझ के पांन ॥11

अव बातें करै, बोलै रे दिवला[16], अव बातें करै,
तुम सुन लेव ऊदलसी बात।
सिंह के जाये अरे लैंड़ू[17] पजैं, धरै तिरियन के मत लेंय ॥12
अव बातें करै बोलै उदलसी, अव बातें करै, सुन लेव माता बात।
अव सिंह के जाये तो सिंहई पजैं, धरै जेठन के मत लेंय ॥13
अव आजुल[18] लये, पैंले जो वीरा, तोरे आजुल लये,
दूजे कका उर बाप।
अब तीजे वीरा अरे तुम चावियो, कुरखेत करो तरवार ॥14
अव कछुक विड़ेरे[19] तोरे आजुल करैं, कछुअक करैं कका उर वाप।
अव कछुअक विड़रे अरे वेटा तुम करो, कुरखेत करो तरवार ॥15
अव बावन हाथिन पै हौदा धरे, काये हौदा धरे, सुन लेव हौदा धरे,
अरे ऊदल कसे ते कसाव।
अव बारे इंदलसी अरे बिरजे[20] फिरें, कै हम चलहैं ककाजू के साय ॥16
अव सध है नईं करिया-कटरिया, बेटा सध है नईं,
नईं नौ गैंड़ा की ढाल।
अव घोड़ा करसला[21] सोऊ डँट है नईं, कैसें खेत करौ तरवार ॥17
अव करौं[22] करें करिया-कटरिया, अव करौं करें,
करीं ढाल तरवार।
अव घोड़ा करसला खों ऐंठा करों, कुरखेत करों तरवार ॥18
अव हौदा धरे बावन हथियन पै हौदा धरे,
ऊदल कसत कसाव।
वारे इंदलसी अरे विरजै फिरें, अव कक्का चलहौ तुमारे साय ॥19
अव बातें करै, वोलै उदलसी, अरे अव बातें करै,
तुम सुन लेव इंदलसी बात।
हुकुम जौ नइयां आल्हा दादा कौ, अब जिन चलौ हमारे साथ ॥20
अब वातें करै, वोलो इंदलसी, अव बातें करै,
तुम सुन लेव ककाजू बात।
हुकुम जौ मिल गओ दादा को, अब चलहैं तुमारेई साथ ॥21
अव रो-रो मरै कांटे के लगतन, अरे रो-रो मरै,
घामो लगें कुम्हलाय।
जव दल हांकै धांधू चौड़िया, तब वेटा सुमरौ कौन की मांय ॥22

अब कुच मैल[22] के कोटे जो हुहहै, दादा कुच मैल के,
धामो बदरिया की छाँय।
अब दल होंकें घोडू चौड़िया, दादा सुमरों सारदा माँग ॥23

अब बालूरेत में गंगा जमुन की, इंदुल मचा रये सेल[24]।
हुकुम जो नइयाँ दादा आल्हा को, चढ़ मारो गाजला[25] वार ॥24

अब लगुनें लईं काये खों स्वामी, मोरी लगुनें लईं,
काये खों रचे ते ब्याव।
अब दिन आये हँसी खेल के, मरबे जा रये ककाजू के साथ ॥25

अब लगुनें लईं ब्याव के काजें, अब लगुनें लईं,
साके[26] खों रचे ते बियाव।
जब हम लौटें अरे रन जूझ कें, तोरी मुतियन भरा देहों माँग ॥26

अब उतरी नईं तेल की फरियाँ, अब उतरीं नईं,
नईं छूटे हरद के दाग।
हाँत के कंकन अब छूटे नईं, मरबे जा रये बलम परदेस ॥27

अब बहुतक पँरे हरे लीलिया, बहुतक सेत - सपेत।
एक ना सोई संगै ब्यावता[27], मोरो टूट टूट मन जाय ॥28

अब सुमरन करों तोय कारी बदरिया, तोय सुमरन करों,
सुअरी खों मद की धार।
अब तनक बरस जा जई देसा में, मोरे स्वामी छोद धरैं हतयार ॥29

अब बैठी रऔ सतमढ़ला पै, अब बैठी रऔ,
खइयो अगिनियाँ[28] पान।
जब हम लौटें अरे रन जूझ कें, तोरी सेजन परहों आय ॥30

अब सदा तो तुरैया ना बन फूलै, अरे सदां ना साउन होय।
सदां न जोधा अरे रन जुझैं, उर सदां ना जीवै कोय ॥31

अब बारा बरसें अरे कूकर जियैं, उर तेरह बरसें जियत सियार।
बरस अठारा छत्रिय जीवै, अरे आँगू जीवै तो धिक्कार ॥32

अब सुघर दुलैया अरे हरवाये[29] की, खेतई नींदन जाय।
उर कोरे घइलनन को पानी पियै, रूखी रोटी खाय ॥33

अब जरियो-बरियो तोरे सतमढ़ला, स्वामी तोरे सतमढ़ला,
पानन लै परियो तुसार।
अब तोरे अकेले के जियरा बिना, सूनी लगै सिसार ॥34

अब गैंड़े[30]खों दैहों छिरिया-चुकरिया, सुअरी खों मद की छाँक[31]।
अरे तनक बरस जा मोरे देसा में, स्वामी छोर धरें हतयार ॥35

अब सात समुन्दर अरे आड़े डरे, ठाँड़े जती हनुमान।
अरे खबर न पैहैं अरे सिया जू की, अधकर जैहैं सबन के प्रान ॥36

अब चार दिना की चाँदनी रयै, फिर अँदयारी रात।
मोरी कही स्वामी मानत नयीं, अरे कैसें बचें जे प्रान ॥37

अब नाँय के समैया अब नईं सें रये, काये नईं से रये,
उर औरनू के सुनो हवाल।
अब रन जूझन कुँवर इंदलसीं, जबरईं जा रये ककाजू के साथ[32] ॥38

⊙

संदर्भ एवं अर्थ-संकेत :

1. भूमि के देवों में सबसे प्राचीन हैं भूदेवी (आंचलिक नाम भुइयाँ रानी)। इस अंचल में भुइयाँ रानी के आधार पर भुइयाँराने (पुरुष) देवता भी प्रतिष्ठित हो गये हैं। अल्हैतों के भूमियाँ का अर्थ भी भूदेवता (पुरुष) है। देखिए मेरा लेख — 'बुंदेलखण्ड के लोकदेवता' 2. भाषा रुक न जाय। मारो का अर्थ मंत्र से रोकना भी होता है। गायक से ईर्ष्या होने पर मंत्र द्वारा कण्ठ अवरुद्ध कर दिया जाता है 3. खैर का अर्थ कुशल-मंगल और बहेर (बहोर) का लौटाना अर्थात् कुशल-मंगल रखना या देना 4. कण्ठ की देवी = वाणी = सरस्वती 5. जीभ 6 ब्रह्मा 7 अभिमान 8. महुओं से बनी खीर 9, महुओं को कूट कर बनायी गयी टिकिया 10. महुए का चूर्ण 11. महुओं 12. सामयिक या समयपरक गीत। बुंदेली में अनेक छोटे-छोटे युद्धकाव्य कटक, लड़ाई, समय आदि नामों से रचे गये हैं 13. सुरहिन = कामधेनु

14. घड़ा 15. निरंतर 16. देवलदे, आल्हा-ऊदल की माता 17. कायर 18. पिता के पिता अजा 19. तितर-बितर या नष्ट करना 20. मचले 21. काला 22. दृढ़ता 23. स्तन के कृष्णवर्णी अग्रभाग के 24. एक शस्त्र 25. बड़ा ढ़ेर 26. शौक के लिए 27. ब्याहता = विवाहिता 28. अगहन या अगन मास के पान 29. हलवाहक से निस्तृत 30. मेंड़ का देव 31. महुए की शराब निकलने पर शेष सामग्री 32. यह सैरे का एक छोटा भाग है। सैरे गीतों पर शोधपूर्ण टिप्पणी या लेख बाद में प्रकाशित होंगे।

—तालबेहट, ललितपुर, उ० प्र०

शिव दयाल कमरिया:
उनका जीवन, आल्हा और संगीत[1]

—डा० लक्ष्मी गणेश तिवारी

आज से लगभग सौ वर्षों पहले प्रसिद्ध आल्हा रचयिता एवं अल्हैत शिव दयाल (उर्फ शीवू दा) पुछी करगुवाँ ग्राम के कमरिया ठाकुर परिवार में पैदा हुये थे। बचपन से ही उन्हें कविता और आल्हा गाने का शौक था। बड़े होने पर उन्होंने बहुत सी फागें तथा आल्हा की कुछ वर्णनाओं की रचना की थी। शीवू अपने समय के बुर्जुग आल्हा गायक अछरजू को अपना गुरु मानते थे। अछरजू को वह अपना रचित आल्हा सुनाते थे। अछरजू उस आल्हा को साज सवाँरकर तथा घटनात्मक त्रुटियाँ सही करके शीवू को प्रोत्साहित करते रहते थे। अछरजू बुन्देल ठाकुर थे। शीवू पढ़े लिखे नहीं थे, अतः वह अपना आल्हा कंठस्थ गाते थे। उन्होंने आल्हा की रचना लगभग 25-30 साल की उम्र से करनी शुरू की थी। उनका लिखने का नाम 'पजन' था।

शीवू के विषय में निम्नलिखित घटना बहुत प्रचलित है। कहते हैं कि शीवू के पुत्र रामकिसुन द्वारा आपसी लड़ाई में एक ब्राह्मण की हत्या हो गई थी। समाचार पाते ही शीवू ने अपने पुत्र को महाराज टीकमगढ़ के पास भेजकर अपराध कबूल करने की आज्ञा दी। रामकिसुन ने टीकमगढ़ जाकर अपराध स्वीकार किया और आजन्म कैद की सजा भुगतने लगा। तीन-चार महीने बाद शीवू अपने भाई गोरे लाल के साथ टीकमगढ़ पहुँचे और दीवानखास में ठहरे। दूसरे दिन तड़के शीवू ने अपना आल्हा गाना शुरू किया जो महाराज प्रतापसिंह के कानों तक पहुँचा। महाराज ने गायकों के विषय में अपने वजीर खानबहादुर से दरबार में पूंछतांछ की और शाम को आल्हा गायन सुनने का हुक्म दिया। शीवू का आल्हा सुनकर महाराज बहुत ही प्रसन्न हुये और उनके रहने तथा खानपान की व्यवस्था राजदरबार में कर दी। इस तरह शीवू अपने भाई के साथ महाराज को अक्सर आल्हा सुनाकर खुश करते रहे। कुछ दिनों बाद खाना बनाने वाले पंडा ने उनके खाना पकाने में आलस्य करना शुरू कर दिया। इस पर शीवू ने महाराज के सामने यह साखी गाई :

अरे कह महराज की ना मरजी भई, के पण्डा ने करो हतफेर ।
भरी सभा में तो अरे हम गावें, जासे पर गओ सेर में फेर ।।

साखी सुनकर महाराज ने शीवू से पंडा की लापरवाही की जानकारी प्राप्त की और पंडा को भविष्य में सावधान रहने की चेतावनी दी । इस प्रकार शीवू लगभग एक महीने दरबार में रहे । एक दिन प्रतापसिंह ने शीवू से पूंछा कि भाई तुम एक महीना से हमें आल्हा सुनाते आ रहे हो । जहाँ छोड़ते हो, वहीं से फिर दूसरे दिन शुरू करते हो । तुम्हारा आल्हा खत्म कब होगा । इस पर शीवू ने उत्तर दिया कि आल्हा का सौन्दर्य ही यही है कि श्रोता उसको सुनते-सुनते थकान या बोरियत न महसूस करे । महाराज उत्तर सुनकर खुश हुये ।

संयोग बैठा कि महाराज को इसी समय एक पुत्ररत्न—वीरसिंह, की प्राप्ति हुई । पैदाइश की धूमधाम चारों ओर थी । इस खुशी में शीवू ने भी यह साखी गाई :

अरे गोड़ा में तो मोय मोड़ा मिले, अरे अब कोप करो महाराज ।
दास जान तो अरे किरपा करो, मोरो मोड़ा दियो छुड़वाय ।।

महाराज को साखी का गूढ़ अर्थ समझ में नहीं आया तो उन्होंने वजीर से पूछा । वजीर को यह मालूम था कि शीवू का लड़का आजीवन कैद भुगत रहा है । वजीर ने महाराज को साखी का अर्थ समझाया । तब महाराज ने राज फरमान जारी करके पुत्र की खुशी में सभी आजीवन कैदियों को रिहा कर दिया । इस तरह शीवू के पुत्र के साथ नौ अन्य आजीवन कैदी भी रिहा कर दिये गये थे । इस घटना के बाद से शीवू की ख्याति आसपास के इलाके में काफी फैल गई थी[2] ।

आल्हा का गायन वह स्वयं सारंगी बजाकर करते थे । उनके भाई गोरे लाल तबले पर संगत करते थे । शीवू अपना आल्हा गायन राजाओं महाराजाओं के दरबार में या निमंत्रित समाज के लिये करते थे । जनसाधारण के लिये वे नहीं गाते थे ।

वे मौजी और चिड़चिड़े स्वभाव के थे । यों कह लें कि अपनी धुन में खोये रहते थे । कभी-कभी सिर्फ लंगोटा पहने ही गाँव में घूमते फिरते थे तो कभी चूड़ीदार पैजामा, अचकन, साफा, और तलवार टाँगकर टहलते थे । निम्नलिखित घटना शीवू के गर्वित होने का परिचय देती है ।

जब शीवू के पुत्र द्वारा ब्राह्मण की हत्या हो गई तब शीवू के परिवार को बिरादरी से बाहर निकाल दिया गया था । कुछ दिनों बाद बिरादरी के पंचों ने शीवू के सामने यह प्रस्ताव रखा कि अगर वह बिरादरी की जमात में आल्हा गा दें तो बिरादरी उन्हें वापस ले लेगी । शीवू गाने के लिये राजी हो गये और गाने के लिये बैठने पर उन्होंने पूछा कि जमात कौन वर्णना सुनना पसन्द करेगी । इस पर बिरादरी के मुखिया ने कहा कि जो भी शीवू को ठीक लगे वही जमात सुनेगी । यह उत्तर शीवू को खराब लगा और वह यह कहकर कि हमें ऐसी जमात में नहीं गाना, जहाँ लोग हमारी कविता का महत्व नहीं समझते । हमें बिरादरी वापस ले या न ले इससे कोई फर्क नहीं पड़ता और बिना गाये घर चले गये ।

बुढ़ापे में उनको गठिया तथा आँखों से कम दिखाई पड़ने लगा था । उनकी इस अवस्था को देखकर टीकमगढ़ नरेश प्रतापसिंह ने यह फरमान जारी किया था कि शीवू की निर्विघ्न यात्राओं के लिये प्रत्येक गाँव चार आदमियों का प्रबन्ध करेगा जो उन्हें खाट या पालकी द्वारा एक जगह से दूसरी जगह पहुँचायेगा । महाराज प्रतापसिंह उन्हें अक्सर आल्हा गायन के लिये टीकमगढ़ आमंत्रित करते थे । शीवू दतिया भी काफी जाते थे ।

वृद्धा अवस्था में शीवू ने एक औरत को अपने पास रख लिया था[3] । यह औरत पढ़ी-लिखी और गाना भी जानती थी । शीवू ने अपना आल्हा उसके द्वारा लिखवाया था । औरत ने उसे मुड़िया अक्षरों में लिखा था, अतः उसे सिर्फ देवसिंह (अछरजू के सुपुत्र) ही पढ़ पाते थे । साक्षात्कारियों ने कहा कि यह आल्हा की हस्तलिखित पुस्तक दतिया के बड़े बहादुर के पास पहुँच गई ।

एक अन्य समय में रामकुमार बरुआ ने यह कहा कि शीवू की वृद्धा अवस्था में उनके कुछ घनिष्ट मित्रों ने उनसे आल्हा और कवितायें लिखवाने का आग्रह किया । तब शीवू ने वृन्दावन पटवारी को आल्हा लिखाना शुरू किया । बीच में शीवू और वृन्दावन में कुछ कहासुनी हो गई जिससे आल्हा का लिखवाना रुक गया । वृन्दावन सिर्फ कुछ ही वर्णनायें लिख सके थे । वृन्दावन ने उस आल्हा की दो प्रतियां बनाई थीं । एक प्रति शीवू के पास रही और दूसरी वृन्दावन ने अपने पास रखी । ऐसा अनुमान किया जाता है कि शीवू की प्रति रखैल औरत द्वारा बाद में पूरी लिखी गई थी ।

शीबू का देहान्त 70-80 वर्ष की अवस्था में हुआ था। मृत्यु के पश्चात टीकमगढ़ महाराज ने शीबू का आल्हा गानेवालों की तलाश की पर शीबू का आल्हा गाने वाला कोई न मिला। शीबू के लड़का रामकिसुन ने आल्हा नहीं सीखा था। महाराजा की आज्ञा से शीबू के घर की खोज करने पर वृन्दावन पटवारी द्वारा लिखी आल्हा पुस्तक प्राप्त हुई जो टीकमगढ़ दरबार पहुँची। वहाँ से ओबरा के देशपद (जिनको टीकमगढ़ से देश निकाला हुआ था) द्वारा सम्भवतः शीबू के आल्हा की यह पुस्तक दतिया पहुँची, जहाँ देशपद देश निकाले के बाद रहा था।

अछरजू के पुत्र देवसिंह शीबू के पास काफी रहते थे, अतः उनको शीबू का आल्हा काफी कंठस्थ था। एक दिन देवसिंह ने वृन्दावन पटवारी के लड़के नारायण से घर में आल्हा की प्रति खोजने को कहा। खोज करने पर एक जीर्ण तथा दीमकों द्वारा नष्ट हुई पुस्तक मिली। यह वह पुस्तक थी जिसे वृन्दावन ने अपने लिये लिखा था। इस प्रति में जो बचा था उसका सहारा लेकर देवसिंह ने नारायण द्वारा शीबू का आल्हा लिखवाया। यह प्रति अपनी जीर्ण अवस्था में मौजूद है[4]।

जहाँ तक आल्हा का सवाल है, आज शीबू द्वारा रचित कुछ वन्दनायें, माहिल की चुगली, आल्हा ऊदल का महोबा छोड़ना, पृथ्वीराज की महोबे पर चढ़ाई, मनियादेव का सपना, आल्हा वापसी और महोबे का कजरी उत्सव आदि वर्णनायें ही वर्तमान गायकों को मालूम हैं।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि शीबू दा आल्हा का गायन स्वयं सारंगी बजाकर करते थे तथा उनके भाई तबले पर संगत करते थे। वर्तमान अल्हैतों के अनुसार यह गायकी काफी रियाज और अच्छी संगत चाहती है। इसी कारण से इन अल्हैतों ने शीबू दा के गाने की धुन अपनी सुविधा के लिये बदल ली है। जिस धुन में ये तीनों अल्हैत गाते हैं, वह नीचे दी जा रही है। इसके गायन में सिर्फ ढोलक द्वारा संगत होती है। शुरूआत में लय स्थिर नहीं है, इसलिये धुन बिना ताल के दी गई है।

शीबू दा के गायन की क्या धुन रही होगी, इस विषय पर काफी आग्रह के बाद इन्हीं अल्हैतों ने शीबू की धुन, जो इन लोगों को देवसिंह से सुनने को मिली थी, गाकर सुनाई। धुन गाते समय हारमोनियम (प्रभूदयाल पटवारी) तथा तबला (सालिग राम पुजारी) द्वारा संगत की गई थी।

आल ऊदल का महोबे से निकलना तथा पृथ्वीराज की महोबे पर चढ़ाई[5]

आल्हा : किलो कलीजर को देखन गये महाराज महोबे वार।1[6]
बम्म सवारी सिर बन्दी संगै धवल उधल उर आल।2
कालीजर के जे मेंड़े पर करिया नाग काट गयो गैल।3
सोच बनाफर अपने मन है कछु होनहार बिगरैल।4
मृगा दाहिने सें डेरे भये और दल में हो लेत उड़ान।5
जैसे पलकिया झूला की आवै जावै जिमी असमान।6
असगुन जान के गरुये आल ने हैबर डारो हिरन के साथ।7
हिरन चौकड़ी भगतन में दोनों सींग पकर लये हाथ।8
कानन लगकै जा परिमाल में माहिल बात कही अपनाय।9
जैसे बछेरा इनके पाँच हैं तैसे नृप के एकऊ नाय।10
घोड़े मांगलो आल उदल सें इनके बदले औरये देव।11
हुकम आपको मानै नहिं तो कागज से कमी कर देव।12
बात चंदेलो ने गुन राखी बोलो नाहीं वचन जरूर।13
होनहार तो ता जोरावर राजै मत उपजी अति क्रूर।14
देख कलीजर जब घर आये औरि बीत गये दिन चार।15
लगी कचहरी जा चंदेल की बैठे भले भले सिरदार।16
आल उदल खों बुलवायो महाराज महोबे वार।17
हाजिर हो गये दरबार में जोधा नय नय करैं जुहार।18
शीश नवा के गादी को जोधा बैठे आयुस पाय।19
तरफ हेर के गरुये आल की राजा बोलो बचन उचार।20
पाँच बछेरा जो तुमरे हैं सो तुम हमको मांगे देव।21
उनके बदले पैड़ा से घोरे दस चाहे ले लेव।22
सुनत बनाफर अरेबोलो नहिं अरे उर जरन लगे सब गात।23
तमक ऊदलसीं उठ बोलो रे महराज महोबे बार।24
घोड़े सिपाहियन के मिलहैं ना जामें बहुत परै तकरार।25
हमें हमारे प्यारे लगें अपने बांधे रहो तुखारं।26
सुनके बानी ऊदल की भाई चित्र लिखे से गात।27
खिचो सनाको दरबार में भाई सुनलो हमारी बात।28
लिखी नाथ की मेंटे को भैया होनहार की बात।29
उठो लाड़लो जसराज को लैकें इन्दल उदल कों साथ।30
अपनी राउर को चल डिगरो सब दिवला से कहो हवाल।31

माहिल भूपति की चुगली से पीछे माँगत है परिमाल ।32
समझ दिखदे अपने मन में रानी हिरदै करो विचार ।33
छत्री होके दीजो नहि बेटा हैवर उर तलवार ।34
घोड़े बनाफर दीजो नहि भाई सुनलो हमारी बात ।35
मिलो जाय कै जैचन्द नों इन दुश्मन को तजो समाज ।36
रखत बखत तो सजवायो अल्लन तजो महोबो अस्थान ।37
ठकुरानन की डोलन संग गढ़ कनवज को करो पयान ।38
सिया डिरिया संगे लयो राजा धवल उदल बलवान ।39
द्वार भड़ोहर माहिल की ताको धुवाँ गयो असमान ।40
जो जागीरें अरे माहिल की ऊदल कर दई सत्यानाश ।41
घड के हेरै माहिल भूपत आला छोड़ी देश की आस ।42
(रियायत लूटत चन्देलन की सारे उर बरत गाँव तमाम) ।43
घाट उतर के जमुना कों अल्लन बसो कनवजा धाम ।44
जाकै पहुँचो जैचन्द नों सब महोबे को कहो हवाल ।45
जो जो बातें भई चंदेल से ते सब कहीं बनाफर आल ।46
सुनके बानी अल्लन की राजा सुनलो हमारी बात ।47
हँस के बोलो गरुये आल से यहाँ तुम बास करो सुखपाय ।48
मैं सब दे देयों तुम्हें जागीर अरे उर बैठारो निज पास ।49
करो रजाइस कनवज में नित नये कीन्हों भोग बिलास ।50
ऊदल डिरैया को गाँजर दई सीहा को दई गुजरात ।51
कोट पथरिया गरुये आल को और गज बिजहट देस बिलात ।52
देस बंगाले पर आड़बै गयो जोधा अल्ल ऊदल बलवान ।53
विधा पूरी रानी जानवै सबरी फौज करी परवान ।54
हाथी घोड़ा अरे पथरा भये सो वह अचरज कही न जाय ।55
बूड़ी हथिनिया लाखन की मस्तक डूब रही हरसाय ।56
जादू जगायो अर सीहा ने भानैज कुडरिया वार ।57
सो रण जीतो सीहा ने जा विध्या के धनी तलवार ।58
गांजर मार से गैयर भयो बिजहट मारे मड़ा को आल ।59
पूजी भुजबल राजा ने तन मन पायो वैरी शाल ।60
कोट पथरिया को सर कर दई उर फते करी गुजरात ।61
जीतो बंगाले गोढ़न को उर गोरन की जीती बिलात ।62
जो जो वदले हतें जैचन्द से ते वस करे आल वलवान ।63

मनमथ दीनों राजा ने कह अल्हन बीड़ा प्रमान ।64
इनने मनमथ उनको हते तिनको रयो न मान गुमान ।65
अबके ठाकुर रिस भये तिनको कामों करो परवान ।66
राई दिमागी कहूँ मिल जावे युद्ध राम राम नई मैंव ।67
बीड़ा मकोड़ा पीछे फिरो मौत दमड़ी एक न देय ।68
(पैग लगाये बंगलन में टेढ़ी बाँधे अनोखी पाग ।69
तिनकी उपमा को कवि कहे मानो सिया सबी सुरांग ।70
वस्तु पराई तक पावें तो हरबे की करें उपाय ।71
जौन तरीं से मिल पावे निरदई कबहूँ न छोड़े ताय) ।72
यहाँ की बातें येहीं रहीं पाछें कहहू औसर पाय ।73
सुरता सच्चों करिये न दूजी लगी बातों आय ।74
(सहज गुनैपन को लागत है है कठिन आल को काम ।75
पान तमाखू की उड़ जाने दो इक टुक कर लीजै विश्राम) ।76
नगर महोबे के रियासत के अल्ल उदल दोई खम्भ ।77
उनने बछेरा माँगे न दये उनने नेक न खाई गम्म ।78
आल ऊदल दोऊ सामन्त गढ़ कनवज गये रिसाय ।79
माहिल भूपत पाती लिखी अरे उर ऐसो अवसर पाय ।80
चुगल नारि रिपु चूकें नहीं भाई अवसर बीते आय ।81
करिया छत्री छोड़े नहीं अपनो दाँव परे तब आय ।82
विविध भाँति पाती लिखी सबरी समाचार समझाय ।83
घायल तुम्हरे मारे गये अपनो वैर बहोरो आय ।84
आल ऊदलमों हैं नैयाँ गढ़ कनवज गये रिसाय ।85
अनुरस हो गई चन्देल से मलखे गयो कनारो खाय ।86
ब्रह्म चंदेलो अबै लरिका है वो क्या खेत करे तलवार ।87
बारा बरष की उम्मर है कोऊ नइयां पीठ रखवार ।88
माहिल भूपति दोई भइया सो ना आड़ी करें तरवार ।89
हुक्म के चाकर चौहान के तुमरे चरनन के आधार ।90
दई पत्रका धावन को राजा पृथ्वीराज पै जाव ।91
नगर सामरे दसवें दिन धावुन द्वार करी गुहराय ।92
द्वारपाल ने जाहिर करी राजा पृथ्वीराज पै जाय ।93
आज्ञा हो गई चौहान की आतुर लीन्हों दूत बुलाय ।94
मुजरा करकें पाती दई धावुन बैठो आयुस पाय ।95
भूपत बाँची जब पत्रका अपने सब सामन्त बुलाय ।96

सांजमरा को बुलवायो धांधू हाहुल राव हमीर ।97
करन कंका अरु चामान्डरा उर पजन नन्द पुन्नीर ।98
केमत राना को बुलवालो उर बड़ गूजर लखन पमार ।99
बीजानगर के कछूवाड़े गोबिन्द नन्द उर पड़हार ।100
राव सुदामा को बुलवालो गोपी मल्ल वीर सतकेस ।101
खेते दऊ अर मन्नू भाऊर अचलेस वीर लवलेस ।102
राना निठरी को बुलवायो रावल सबल सिंह सरदार ।103
आताताई मा जी साहब उर जादों को खेता खँगार ।104
सब सामन्तन को बुलवा के राजा कहत पिथोरा राय ।105
झेल बिलम्ब के करना ना आतुर रण की बम्म बजाय ।106
कहत पिथोरा अरे दरबार मैं उर सुनो बात सब सूर ।107
बैर हमारो चन्देल से घायल मारे बिना कसूर ।108
छड़ीदार को ललकारो तुरतई आयो राव दिमान ।109
जाहिर हो गई चौहान की सुनतन उठ बैंठे बलवान ।110
खबरें पर गईं लश्कर मैं कढ़ आये सूर निशंक ।111
बाची पत्रका दरबार मैं भयो सब लशकर मैं आतंक ।112
कहत पिथोरा दरबार मैं भाई बात सुनो सब सूर ।113
चन्देलन की स्याही पर लोहा बरषे झूरा झूर ।114
शीश नवाकें अर चोड़ा ने विनय करी कर जोर ।115
लगे मोरचा गढ़ महोबे मैं राजा साधन चारऊ ओर ।116
आज्ञा दे दई चौहान ने दल सब साज भयो तैयार ।117
चार दिशा के मौरा को दल की चारों अनी बनाव ।118
सूर पिथौरा के निन्नान्वें तिनमें सोरा बढ़े सामन्त ।119
पीठ न देवे दुश्मन को जोधा बड़े बड़े बलवन्त ।120
वे वे विलनियाँ चौहान की जोधा भले भले बलवान ।121
पृथीराज के लश्कर मैं दो सौ मुकुट बन्द चौहान ।122
तोप सवा सों जिन्सी की तिनमें गोलन्दाज हजार ।123
भागे कवायज के वार से रण में बड़ी करें भरमार ।124
सिक्ख बिलाती मकरानी सिन्धी पारसी सब बलवान ।125
पीठ न देवैं दुश्मन को सांगे करें घोर घामशान ।126
ढ़ालें गड़ी हैं पल्टन की निशदिन वजै विगल भरसूर ।127
सुर सुने से आनंद वैठे, थर थर कांपे कायर कूर ।128

बनी पल्टेने पट्टन की उपमा छिय कचूल (?) ।129
धौरी टोपी ऐसे लगें जो सरबर में फूली गदूल ।130
पृर्थीराज के सामन्त सब बोल उठे एक ठौर ।131
देर न करने दिल्लीसुर नौबद झड़ने दो बड़े भोर ।132
श्री निध प्यासे मारे साइक हैं भाई फरकत है भुज दोय ।133
चन्देलन से रणभूमि पै हम से समर कौन दिन होय ।134
कहत पिथोरा गुरूराम से स्वामी धरो महूरत देव ।135
कुशल राज तो रैयत रहे राजा उपजै परम बिरोध ।136
गिनै उंगरिया सुर सादै प्रातः समय सुभ जान ।137
ऐसी घरी में भेंटें भई पाछे गिरा नींद रये आन ।138
गयारह सो चालीस को सम्पत सर पर नाम ।139
वदी असाढ़ की गुरू त्रिदोसी दिल्ली वाहर करो मकाम ।140
गढ़ दिल्ली में खलवल पर साजत है चौहान ।141
आठ पहर नौबद झड़ै घूमत फिरे निशान ।142
(सजे रासाले शिवखन्न के अर नाल अरु बान ।143
जाँग जुरै रण मन्डिल पै भारी करै घोर घमसान ।144
हरी उजर गई पृर्थीराज की परजा हो गई काग उड़ान ।145
धकपक हो रही भसियन को सबके बिगर गये औसान ।146
धमक पिथौरा की हो रई है सब नर नारिय मन शंक ।147
पृर्थीराज के सूरन को हो रयो लशगर में आतंक ।148
दाबै तमन्चा सतनाली अंटा दो पैसे भर खाय ।149
तमक तर्जनी के ताने से धोके से पार कर जाय ।150
तीस पल्टनें जन्डेलि जंगी करतब में भरपूर ।151
जंग जुरै मे रन मंडिल पै पट्ठा देवे काम जरूर ।152
करै फैर फिर बरकैना गोली आर पार हो जाय ।153
खबर शूरमा अरे पावैं नहीं पाछे झदा पीठ हो जाय ।154
हो रई त्यारी पृर्थीराज की बज रये नांद निशान अपार ।155
उढ़ानौ बदन पै डरवा दये धोसा बोले धिक्कार धिक्कार ।156
अलियन गलियन कामछरा फिरै डेरा डेरा मे बोलै नकीब ।157
टोलन टोलन त्यारी हैं जहँ तहँ शरवीर बलसीव ।158
हाथिन होदा बद रये हैं उटलन पै लदे पलान ।159
साज साज तो हो रई है ताकी हो रई पलान पलान ।160

काऊ काऊ हाथी पर होदा बदे काऊ पै मेक डमक फाराय ।161
मान म्हातम हातिन पै झन्डा जरद नेत फाराय ।162
हरे गोरोना पियरी धब्ज दर आई नेत फाराय ।163
डेरन में तैयारी जाँ ताँ बदन लगे हथियार) ।164
अलियन गलियन कामछरा फिरै डेरा डेरा में बोलै नकीब ।165
टोलन टोलन त्यारी हैं जहँ तहँ शूरवीर बलसीव ।166
जोड़ी छूट गई हलकारन दल की हो रई समार समार ।167
बदे सवैया नरवर के लाहौरी एकै एक हजार ।168
पृर्थीराज के लसगर में प्यादे एक पच्चीसह हजार ।169
बे वे बिलिनिया पृर्थीराज की जोधा भले भले बलवान ।170
पृर्थीराज के लश्कर में दो सौ मुकुट बन्द चौहान ।171
बल्लम फरसा खर्दा लये बड़े बड़े पट्टे दीने हाथ ।172
सब कत्ता तो कलकत्ता के पत्ता से पार हो जाय ।173
कच्छ भुजंग के खाड़े दये भाई घोप आगरे वार[7] ।174
ले वे दुधारा नरवर के नामी सैद सिरसिला वयार ।175
सद्दी मुसद्दी राजन के भाई रोषन कलम वाजीर ।176
सूरत मूरत मैं दीखत है भाई दिल के बड़े अमीर ।177
करता धरता राजन के भाई खास कलम दीमान ।178
सरत सो म्याने की गर्क परी अमलावारिन के घमसान ।171
मेजर साहब काजी जी भाई मदद मेक मुखत्यार ।180
राय बहादुर लायक वर जिनकों करबो को अधिकार ।181
मुन्शी मुंसरम बहुतेरे अरे उर पेशगार सिकदार ।182
लालू वक्शी कानीगो बाबू और सिरस्तेदार ।183
सिक्का डारे हाकिम के तिनके पाछे डाक सवार ।184
लाल छड़ी मैं कारे गुदरा रियासत की परे चिनार ।185
झन्झड़ झन्झड़ बाजे बजे रन के बजे झाँझ तम्बूर ।186
सूर सुने से आनन्द बड़े थर थर कापे कायर कूर ।187
मोनी जन्तुर सर मन्डल सरगम बाजे बांसुरी बीन ।188
ज्यो सरवर मैं निशगढ मैं जा बिधि चमक रही संगीन ।189
ढोकर पीढी मसलत करे तोपे दई जुताय जुताय ।190
लगे मसाले पेटन मैं उर वर वन्देज लगाय ।191
तोप पचासक जिन्सी की गोला सात सेर को खाय ।192।

सूके बादर से गरजत हैं गोला कोस कोस नो जाय ।193
काछा पैरे लुंगी को हनमन्ती कसे लंगोट ।194
तोप लगावें सरियत सें तिनकी कभौं न चूके चोट ।195
जिन्सी की तोपन के पाछे भाई लाल पल्टनें सात ।196
सेत दुआलन में पेटी डरी उर लये रफल्ला हाथ ।197
झिलमिल झिलमिल होय संगीने पचरंगी कड़े निशान ।198
किर्चे घूमें कम्मर मैं बगलन में चली जाय कृपान ।199
पहले नगाड़े में जिनबन्दी दूजे बाँध लये हथियार ।200
तीजे नगाड़े ड़का भये, सब साज भये तैयार ।201
राते बछेरन रातब दये और अधरात चनन की दार ।202
होत भुन्सरा मिर्चे दई घोड़े मजल न डारें लार ।203
भरी हैं सुईयाँ होदन में उठलन मैं कोकिया बान ।204
गुर्जे भर लई गाड़िन मैं तोमर शक्ति सूल कृपान ।205
बर्धा केनिया गाड़िन मैं सूरत के बड़े कबूल ।206
सींग मढ़े हैं सोने से ऊपर बनाती की झूल ।207
दर्ज चढ़ी है खीरी की जापे चक्का न ठोकर खाय ।208
लूम लगत है बर्धन की जो इंजन सों ढ़ड़कत जाय ।209
ढाल बजारू कड़वा दई अपनो हाँकन लगो गोदाम ।210
कड़े रसाले तोपन के उर बद चली बराबर लाम ।211
तुपक बनाई लुकमान ने भाई जानत है संसार ।212
बात बतादें मजलस मैं कीनी पैदा करी तरवार ।213
सात भगौती के गुण औगुण तिनके नाम कहों समुझाय ।214
तब दुर्गा को कर लीजे भाई देखो चित्त लगाय ।215
नाप खड़ग खों निज अगुरन से तामें तेरा देय मिलाय ।216
भाग हरे सें फादिल बचै तिनके नाम कहों समझाय ।217
एक बचे तो नापै से तासे बालक हँसैं ना कोय ।218
जाय बाँद कै जौं जौं ज्यो ताँ ताँ आदर होय ।219
बचै दोय तो गौरी कपै भाई असुवर रहे ना सोय ।220
अशं न जावै नीचे खों जौ नौ पास भगौती होय ।221
तीन बचे तो भट्टी कपै देखत भूत प्रेत भग जाय ।222
चार बचे तो सांकिन है सांपिन निज स्वामी को खाय ।223
पाँच पदमिनी जो कर में धरै घर में दुःख रहे भरपूर ।224

छट्ट दुखन की केते हैं घर में पैसा रहै न मूर ।224
सात बचें तो कल्यानी पूरन करै सो मन के काम ।226
जाय बाँद के रण को चढ़ै छत्री जीत अवै संग्राम ।227
हीरा जवाहर साजै धरी घोड़े दये सजाय सजाय ।228
स्याम करन तों सुरका सिन्दुरी औरसंजाब्र सेत फुलबार ।229
(समद संदली और सुरमई सबजा सुरंग सुनैरो तुपार) ।230
चिगिर चिनियाँ नवगारों चम्पा चौधर लैहरवा बंस ।231
गीदा गुलाबी गुलदारो ताजौ हरो हिर मिर्जा हंस ।232
केरा केहेरिया किसमिसी के सें कारे से कुल्ला कुमेत ।233
................मगसी है मोती भट्ट सुफेद सफेद ।234
लहरदार तो बादामी गर्रा तूषी दरयाई तुरंग ।235
लक्खी लखरो बोलतारी पंचरंग कुरंग तरंग ।236
तिरका तेलिया तीर सर अवलख उर परन्द ।237
निम माल उर घुमाल सुर नख जरदा उर जरन्द ।238
गढ़ दिल्ली के नर नारी धाये सकल छोड़ के काम ।239
एक एक से पूछत हैं जे तोपन के बतादो नाम ।240
शंकर भुवानी हरशंकर घन घूमें धरा धसकन्त ।241
वाम बज्री खलखंटी काली दुर्गा उर बीजली बसन्त ।242
सिंह गुजारन रन झाड़न नवरंगा बाज झपाट ।243
काल ताड़का गज डंकी बिजहट कलकील पाट ।244
बान विहँगा लहुरंगा दल थम्म न घन नाद ।245
कुदरू सौपिन जम डाकिन जमदूती बान बिराद ।246
बामन छत्री की भरती है उर न कोनऊ जात ।247
तरुण अवस्था जुवानन की विजिया पाव पाव भर खात ।248
दुबे तिवारी तिरवेदी चौबे गोत मियाँ भागोर ।249
मिशुर गंगेले भोड़ेले बिदुवा कानकुब्ज शिरमौर ।250
पाड़े पटेरया पियरैया पाठक उर पारासर झार :251
सुकुल समेले सिया मिसुर सो न कईया कचुवार ।252
दीखत देवलिया बिलगैया उर टिमरैया एक झार ।253
काँकर रिछारिया अड़जरिया झार खरिया लिटोरिया आर ।254
सेसा समाधिया सिरवैया और उदनिया झार ।255
दगोरे बबेले मिसरेले नायक उर निप सैया झार ।256

सगया पचौरी गकराड़िया और कटेरे बारीश ।257
नाम नगायच बर मेले मुड़िया गुगरिया यो दीस ।258
रावत रावल मुघरैया बाजपेई उपध्या झार ।259
भट्ट गुसैंगी गोकलिया बकना उटा मनाढ्य झार ।260
बारा रैयाँ तेरा पटा उर महिमा अपरम्म पार ।261
वचन कुलस सम जिनके हैं तापर हाथ लये हथियार ।262
करो कलंकी चन्द्रमा उर खारो जल निधि कीन ।263
मुनि पुलस्तय को कुल नासो माथे सुना सीर को चिन्ह ।264
सूरज बन्सी रघुवन्सी चन्दावन्सी उर अमान ।265
तौर बघेल कछुवाये झाला रायठौर चौहान ।266
गोड़ बनाफर चन्देले पापुक जादों उप जैवार ।267
हाजगसी सोलंकी सीसोदिया सैंगर खागर उर पड़िहार ।268
वैस वनोधा के जिनमें हैं धारा के धार पमार ।269
राना उदयपुर के रनवाते वे बे सिकर वार सिरदार ।270
रावल भदौरिया कनवजिया गहरवार गहलात ।271
समर भूमि मैं मोरा जुर छत्री हेरे रिपु की मौत ।272
सहज सुनैयन लागत है जामें अटल काल को काम ।273
पान तमाकू की उड़ जाने दो एक टुक कर लीजे विसराम ।274
पीलवान को ललकारो राजा हुकुम दयो फरमाय ।275
झेल न करने बँगला मैं आदभयँकर ल्यायो सजाय ।276
दौरे माउती हाथी के, उर अंकुस लै लै हाथ ।277
दग दग दग दग माउती करे हाथी बैठ जाहि इहि भाँति ।278
कर लयें दुपट्टा हाथी की तन की धूरा दई उड़ाय ।279
लाल हरीले जंगाली लीले पीले रंग मिलाय ।280
लिखी पुतरिया कानन मैं उर सुन्दर रूप बनाय ।281
रचना वरणौं मजलस मैं मोसे शोभा कही न जाय ।282
माँज सूड़न तो नागिन लिखी सा परतीव रूप दिखाय ।283
दोनों दाँत के दुबचे होय मनो चली शीष पै जाय ।284
दाँत माँज दये हाथिन के कच्चन मुहाले दये चड़ाय ।285
कलगी धर दई शीषन पै शोभा हमसे कही न जाय ।286
गेंडा की ढालें माथे धरी मस्तक धरी जमाय जमाय ।287
मस्तक पोतो सेंदुर से ऊपर लाल धुजा फहराय ।288

मूरत थापी महावीर की गज के शीष बिराजो आय ।289
गादी जमा दई बानाती शोभा मोसे न बरणी जाय ।290
श्री सरस्वती जड़तारी मुतियन की कोर दिखाय ।291
झूलें डार दई मखमल की जरतारी भरे भराव ।292
झेला डार दये गर्दन में दोनों घण्टा दये हरकाय ।293
होदा जड़ाऊ धरवा दये रतनन के जड़े जड़ाव ।294
डोरी तान दई रेशम की होदा तनक चाव न खाय ।295
बाला कानन हाथी के राजत जंगाली रूमाल ।296
हाथी घूमें हाथिन में सूरत के बड़े कबूल ।297
साकर दीनी हाथी को उपमा कौन कहे कवि लाल ।298
इन्द्रलोक को हेरत हैं मानों गजराज फेर रयो माल ।299
(चारऊ उड़ेरन तरकस बँदे दो मुलतानी लाल कमान ।300
गोला गांसी गजबेल की पौनी जे बेदत परिवान) ।301
दे परिक्रमा हाथी को अपने गुरू गोविन्द मनाय ।302
सुमरन करके सारद को होदा बैठ गयो सुख पाय ।303
दयो इशारो कउती ने तत तत हाथी दयो चलाय ।304
गेल पकर गयो महोवे की मन में करे युद्ध की चाय ।305
(चलो पिथौरा दिल्ली से मन में कर युद्ध की चाय ।306
लोट न हेरे पीछे को हाथी चील झप्पटन जाय) ।307
खबरें पर गई गढ़ दिल्ली में कढ़ गयो पृथ्वीराज बलवान ।308
अपने अपने वाहन चढ़ सब दल सिमट चलो मैदान ।309
तातें तमुअन के अरांटे हो रई झांजन की झनकार ।310
बजे नगरिया तासन की जंगी ढोलन की धुधकार ।311
जिनके पिछारू असवारी घोड़न गसी बाग सो बाग ।312
कलंगी से कलंगी रगड़त है रगड़त जात जाँग से जाँग ।313
ये वे बिलनिया बखतरिया क्षत्री भले भले बलवान ।314
ध्वजा पताका मन मोहन जारी बटका के घूमें निशान ।315
बोले जागड़ा बगलन में और हातन में लये रबाब ।316
करखा गा रये रजपूती के सुन सुन होय सुभट मन चाव ।317
चोरे गाड़रे सी लोटत हैं डंका किड़ी दुम्ब जब होय ।318
खिचो सिनाखो लशकर में पटतर दीजे तो अब सोह ।319
लाख बछेरन सरांटे गरदा उड़त दिखावै आंख ।320

तीन कोस गे ऐरी मिलो बोले ओरन कैसी पाँख ।321
फिरे कूँच भओ चौहान को और महोवे को करो पयान ।322
आधी रात के अमला में सब दल परो महोवे जाय ।323
खबरें पर गई महोवे में सब रॉड़ कुण्ड के झार ।324
नगर महोवे के नर नारी सब मिल देवें पियोरे गार[9] ।325
बेटी बिहाई चढ़ि आयो भड़ुवा नाद निसान बजाय ।326
नीत धरम तो बरतो ना पापी तेरो बुरो हो जाय ।327
(आल्ह निकार के फल पायो महाराज महोवे बार) ।328
मरै पुतौना माहिल को जाको नेक न आवै लाज ।329
कर कर चुगली महाराज सें कड़वा दये आल उधराज ।330
(गढ़ महोबे में खलबल परी कैसी आज करें करतार) ।331
सामंतन सों धन खों के भाई दुःख की करी खरीद ।332
धकपक हो रई चन्देल खों माहिल सोवै छिमासी नींद ।333
बन्द दुकानें हो गई हैं पर गई बस्ती में हड़ताल ।334
ऊँचे सूरज के ढावन पै जातों ठाड़े कुँवर हरनाम ।335
नजरें कर रई चौगिरदा बेटी हेरें नगर पसार ।336
कै तो मारवे बंगला चुन औ कैं फूले भदैयाँ काँस ।337
मैं तोय पूँछों वादी उरवसी जे बनजारे कहाँ के आय ।338
हात जोर के अर बेटी से चन्द्रावलि राजकुमारि ।339
ना तो महात्में बंगला चुन और न फूले भदैयाँ काँस ।340
मेले मवासी सांमर के बेटी ताल किरतुवा पार ।341
कड़ै कजरिया महोबे सें डोला लैं जै राजकुमार ।342
सुन के बानी बाँदी की बेटी धरन गिरी मुरझाय ।343
घरी धूप में चेतन भई गदबद दे गई राव रनिवास ।344
बैठी मतारी डियोढ़ी में और मलना के पहुँच गई पास ।345
रोवै बेटी चन्देल की भाई करुणा बचन सुनाय ।346
बारा बरसें बाँदी रही तेरह ल्याये कुँवर उधराल ।347
मुझे बुलाके बांदो से फजियत करी ताल के पार ।348
बारा दौना सालीना तेरह दै दै उदल के नांव ।349
धरी कजरिया महोबे में, कोरी धरी धरी मुरझांय ।350

मूरत थापी महावीर की गज के शीष विराजो आय ।289
गादी जमा दई वानाती शोभा मोसे न वरणी जाय ।290
श्री सरस्वती जड़तारी मुतियन की कोर दिखाय ।291
झूलें डार दई मखमल की जरतारी भरे भराव ।292
झेला डार दये गर्दन मैं दोनों घण्टा दये हुरकाय ।293
होदा जड़ाऊ धरवा दये रतनन के जड़े जड़ाव ।294
डोरी तान दई रेशम की होदा तनक चाव न खाय ।295
वाला कानन हाथी के राजत जंगाली रूमाल ।296
हाथी घूमें हाथिन मैं सूरत के बड़े कबूल ।297
साकर दीनी हाथी को उपमा कौन कहे कवि लाल ।298
इन्द्रलोक को हेरत हैं मानों गजराज फेर रयो माल ।299
(चारऊ उड़ेरन तरकस बँदे दो मुलतानी लाल कमान ।300
गोला गांसी गजबेल की पौनी जे वेदत परिवान) ।301
दे परिक्रमा हाथी को अपने गुरू गोविन्द मनाय ।302
सुमरन करके सारद को होदा बैठ गयो सुख पाय ।303
दयो इशारो कउती ने तत तत हाथी दयो चलाय ।304
गेल पकर गयो महोबे की मन मैं करे युद्ध की चाय ।305
(चलो पिथौरा दिल्ली से मन मैं कर युद्ध की चाय ।306
लोट न हेरे पीछे को हाथी चील झप्पटन जाय) ।307
खबरें पर गई गढ़ दिल्ली में कढ़ गयो पृथ्वीराज बलवान ।308
अपने अपने वाहन चढ़ सब दल सिमट चलो मैदान ।309
तातें तमुअन के अर्राटे हो रई झाँजन की झनकार ।310
वजे नगरिया तासन की जंगी ढोलन की धुधकार ।311
जिनके पिछारू असवारी घोड़न गसी वाग सो वाग ।312
कलंगी से कलंगी रगड़त है रगड़त जात जाँग से जाँग ।313
ये बे बिलनिया बखतरिया क्षत्री भले भले बलवान ।314
ध्वुजा पताका मन मोहन जारी बटका के घूमें निशान ।315
वोले जागड़ा बगलन मैं और हातन में लये रबाव ।316
करखा गा रये रजपूती के सुन सुन होय सुभट मन चाव ।317
चोरे गाड़रे सी लोटत हैं डंका किड़ी दुम्ब जब होय ।318
खिचो सिनाखो लशकर में पटतर दीजे तो अब सोह ।319
लाख बछेरन सर्राटे गरदा उड़त दिखावैं आंख ।320

तीन कोस से ऐरो मिलो बोले ओरन कैसी पांख ।321
फिरे कूंच भओ चौहान को और महोबे को करो पयान ।322
आधी रात के अमला में सब दल परो महोबे जाय । 323
खबरें पर गई महोबे में सब राँड़ कुण्ड के झार ।324
नगर महोबे के नर नारी सब मिल देवैं पियौरे गार[9] ।325
वेटी विहाई चढ़ि आयो भड़ुवा नाद निसान वजाय ।326
नीत धरम तो वरतो ना पापी तेरो बुरो हो जाय ।327
(आल निकार के फल पायो महाराज महोबे वार) ।328
मरै पुतौना माहिल को जाको नेक न आवै लाज ।329
कर कर चुगली महाराज सें कड़वा दये आल उधराज ।330
(गढ़ महोबे में खलवल परी कैसी आज करें करतार) ।331
सामंतन सों धन खों के भाई दुःख की करी खरीद ।332
धकपक हो रई चन्देल खों माहिल सोवै छिमासी नींद ।333
बन्द दुकानें हो गई हैं पर गई वस्ती में हड़ताल ।334
ऊँचे सूरज के ढाबन पै जातों ठाढ़े कुँवर हरनाम ।335
नजरें कर रई चौगिरदा वेटी हेरैं नगर पसार ।336
कै तो मारवे बंगला चुन औ कैं फूले भदैयां कांस ।337
मैं तोय पूँछों वादी उरवसी जे बनजारे कहाँ के आय ।338
हात जोर के अर वेटी से चन्द्रावलि राजकुमारि ।339
ना तो महात्में बंगला चुन और न फूले भदैयां कांस ।340
मेले मवासी सांमर के बेटी ताल किरतुवा पार ।341
कड़ै कजरिया महोबे सें डोला लै जै राजकुमार ।342
सुन के बानी बाँदी की बेटी धरन गिरी मुरझाय ।343
घरी धूप में चेतन भई गदबद दे गई राव रनिवास ।344
बैठी मतारी डियोढ़ी में और मलना के पहुँच गई पास ।345
रोवै वेटी चन्देल की भाई करुणा वचन सुनाय ।346
बारा वरसें बाँदो रही तेरह ल्याये कुँवर उधराल ।347
मुझे बुलाके बांदो से फजियत करी ताल के पार ।348
बारा दौना सालीना तेरह दै दै उदल के नांव ।349
धरी कजरिया महोबे में, कोरी धरी धरी मुरझांय ।350

बिन ऊदल के जियरा बिन दुस्तर हो रओ किरतुवा पार ।351
बोलै मतारी समझावै बेटी सुन लो हमारी बात ।352
भैया तुम्हारे बरमा हैं जें तो अरजुन को अवतार ।353
राखी बाँध लो बरमा कों तुम्हरी पवनी देंय कराय ।354
रनैया खातरी बरमा की ओर का छोड़े अलोईदार ।355
बिन ऊदल के जियरा बिन दुस्तर हो रओ किरतुवा पार ।356
आधी रात के अमला में रे चन्द्रावलि राजकुमारि ।357
लैके कटरिया बूंदी की बेटी डिगर चली तिहवार ।358
मनिया देव के मंदिर कों बेटी चलै लगै ना बार ।359
दै परकरमा मड़िया कों बेटी अर्ज करी बिलखाय ।360
जो रहतुलियाँ ठाढ़ी भई मेरी अरज सुनो चित लाय ।361
जब जब संकट ऊदल परे देवा तब तुम भये सहाय ।362
साज सांकरी मो पै पड़ी अब संकरे में हो जाव सहाय ।363
नगर महोबे घेरा दै चौदस बाजै नाद निसान ।364
ताल किरतुवा बंधिया पै सावन लुटन कहै चौहान ।365
लाज राखियो खेरे की मेरी अर्ज सुनो महराज ।366
तुम्हरे भरोसे तुम्हरे बल आजावें आल उधराज ।367
भई अवाजैं मन्दिर से बेटी सोच करो बेकाज ।368
ताल किरतुवा बंदिया पै मैं बुलवा दौं आल उधराज ।369
आ गई खातरी बेटी को राउर बदल चली सुख पाय ।370
मनिया देवता महोबे से कनवज की पकड़ गो राय ।371
पवन निकल गई मड़िया से पत्थर पड़ो रहो मड मांय ।372
देर न लगी देवा को छिन में कनवज पहुँचो जाय ।373
बनो बंगला ऊदल को ऊपर लाल ध्वजा फहराय ।374
अतर पुतो हैं खम्भन पे झोंका उड़ै पवन के साथ ।375
बारादारी बंगला बनो साकू के जड़े किवाड़ ।376
कलस धरो है कंचन को सोने सांकर हरके द्वार ।377
बंगले झंझरी चौगिरदा जिनमें कांच आगरे बार ।378
सिगमरमरी पथरा लगो हेरा फूल रही फुलवाड़ ।379
तनों चंदेवा मखमल को जिनमें सांचे भरे जरतार ।380

कारी पीरी धौरी झालरें बैजानी लाल गुलनार ।381
पलंग डरो है साकू को रेशम की बुनी निवार ।382
गिलम गलीचा मुल्तान को तिनमें दरी आगरे वार ।383
नरम गदेला अतलस को ऊपर धौरो पिछौरा डार ।384
चार गेडुवा मिसरू के सो पलका पे धरे बिचार ।385
आधी रात के अमला में हाड़ी फानुस के उजियार ।386
सोवै लाड़लो जसराज को बगलन धरी ढ़ाल तलवार ।387
नींद छिमासी ऊदल के ऊपर रै गयो पिछौरा डार ।388
सोवत सपनो मनिया दै तुम सुन लेवौ ऊदल बलवान ।389
ते सुख सोवै कनवज में संकट परो धनी परमाल ।390
जाके धनी पे संकट है ऊदल चाकर कों धिक्कार ।391
नगर महोबे घेरा दहें चौदिस बाजै नाद निसान ।392
ताल किरतुवा की बंधिया पैं सावन लुटन कहत चौहान ।393
बाग बगीचा कटवा लै भो लोटा भदैंया आम ।394
पुरहिन कटा लइ कीरति की राजा कर रहो मन के काम ।395
जहाँ रसोइयां देवला की भूरा तुरत पछारैं गाय ।396
जहाँ बैठके गरुए आल की ताकी ईंट दई खिसकाय ।397
ठाकुर पूजा की चौतरिया जापै घोटैं भंगेड़े भाँग ।398
तोरे अखाड़े नाहर के जाँ चौड़ा ने ठटा दई सांग ।399
काँ गई राई काँ गई रुकमनि काँ गई द्रोपदी रान ।400
कोंता के अरजुन क्याएँ गये जिनने सरग भेज दये बान ।401
(वे जरजोधन क्याएँ गये जिनकों बड़े हते अभिमान) ।402
आल ऊदलसीं क्याएँ गये ऐसी कह रहो राव चौहान ।403
राजा चंदेलो गइया भओ नाहर हो रओ पिथौरा राय ।404
ताल किरतुवा की बँधिया पै राजे जबरै टोरे खाय ।405
रानी मलनदई दुलहिन भई दूल्हा बने सांवरी राय ।406
परें भावरें कीरत पे ऊदल सौंप दाय जो जाय ।407

जो न चलत हो महोबे को ऊदल फिर पाछें पछिताव ।408
नांव छोड़ दीं मैं तुम्हरो जियत न लेहों नांव ।409
बैठ ऊदल के कंठन गओ, देवा समझायो बहु भांत ।410
काज संवारन चंदेलन को, भैया चलो हमारे साथ[10] ।411
चली दुलैया ऊदल की कर सोरउ सिंगार ।412
बारा भूषन तन राजें हो रइ किंकिन की झनकार ।413
परी अबाई फुलवा की ऊदल के बंगलन मांय ।414
पायल ठनकी छिड़िया पै मनियर बैठो तीरकस जाय ।415
दै परकरमा स्वामी कों और चरनन पर शीश नवाय ।416
पांव पलोटें सेवा करै रानी बहुत भांति सुख पाय ।417
सोवत लाड़लो जसराज को आल्हा को लहुरवा भाय ।418
नींद हुमस गई जोधा की ठाकुर उठ बैठो अकुलाय ।419
हाथ जोर कै स्वामी से रानी अरज करी मुसक्याय ।420
(सोवत बातें कीसे कही स्वामी मोसो कहो समुझाय ।421
पैली पावन आवती भई दूजी भई बरसात ।422
तीजी पावन सावन भई बरमा करी हमारीं याद) ।423
सोवत सपने मनिया दै मोय बुलवायो बृह्मकुमार ।424
कैसे के साउन महोबे करे कजली बैंधी करतुवा पार ।425
सुनत दुलैया मुसक्या गई भाई बहुत भाँति सुख पाय ।426
सेवा करके स्वामी की राउर बदल चली सुखपाय ।427
मनिवा देवता कनवज से महोबे की पकड़ गओ राय ।428
सपनो खातिर कर बेटी को फिर मड़िया में विराजो जाय ।429
जब से सपने मनिया दये तब से नींद न आई ताय ।430
राजकरन की पारी में मुरगा दीनी बांग ।431
उठो लाड़लो जसराज को जौनो बोले कारे काग ।432
सिया डेरइयें ललकारो रे महराज महोबे बार ।433
लाखन की राउर चल डिगरे बगलन लगी ढ़ाल तलवार ।434
लगो पँचमा लाखन को भाई हालऊँ भई जगार ।435

तीनिउ सूरमा द्योढ़ी पै नै नै करें जोहार ।436
छड़ीदार को ललकारो तालन मियाँ लए बुलवाय ।437
पाचो सूरमा जुड़ बैठे द्योढ़ी पर करें सलाय ।438
शीश नवा के लाखन से ऊदल विनय करी सिरनाय ।439
कैसे के सावन महोबो करै कजली बाँधे किरतुवा पार ।440
(फाग उड़ीसा की बरनी है कौतुक देखें दुनिया दौर) ।441
नवमी अवधपुर बरनी हैं जाँ बैकुण्ठ धाम की ठौर ।442
दीप मालका गोकल की जैपुर की गनगौर ।443
साउन बरनों महोबे कों ऐसो होत न कौनो ठौर ।444
राम के मंत्री जामामुर और परमाल महिल पड़िहार ।445
आला के मंत्री तालन हैं ऊदल मंत्र सिया सिरदार ।446
कहै भनेजा ऊदल से मामा सुनो महोबे वार ।447
डारो उकावें कुडिहर की कजली बँधे किरतुवा पार ।448
खबर बनाफर पावें ना ना सुन पावें भूप जैचन्द ।449
आधी रात पै चल दीजै अपने करके ये छरछन्द ।450
बोलै दुलैया लाखन की ठाकुर सुनो महोबे बार ।451
स्वामी हमारों लैं जात हो तुमकों चुरियन को है भार ।452
सुनके बानी रानी की हंसके कहै डेरैया राय ।453
स्वामी आपनो समझा लो विरथा मरन महोबे जाय ।454
तीरथ यात्रा है नै या जासे सुफल होत हैं गात ।455
गौनो पढ़ौनो है नैयां ना बन ब्याउन आई बरात ।456
मड़वा नैयां ना तो मायनो ना तो ऊदल जात ससुरार ।457
मोरा जुरत है चौहान सें रानी ताल किरतुवा पार ।458
सुख की सावन है नैयां जातों करें मेहरियाँ गान ।459
ताल किरतुवा बँधिया पै परवी जानों जीव की खान ।460
दोऊ तरफ से दल उमड़े भाई रन की बम्म बजाय ।461
सन्मुख दै देंव लाखन को दुलहिन जियरा रहै चाहै जाय ।462
पढ़ी दुलैया लाखन की भाई बाँचे पोथी पुरान ।463

करम लिखन्ते कन्ता बावरे है दलै खूटों राव चौहान ।464
(सुन कें बानी डेरू की मन में करे बिचार) ।465
तरफ फेर के लाखन की तिरिया बोली बचन उचार ।466
आये बिरेतिया फेरे ना वर्यों धरवालो नारियल हाथ ।467
काये सुतकरा मानन करी काहे लगुन धरा लइ हाथ ।468
कील काय खों चढ़वायो काहे कंकन बाँधो हाथ ।469
बाँद मोरिया सोने की सर पर सेहरो झोंका खात ।470
बनरा बनके ब्याउन गये अपने लैके संग बरात ।471
पड़े पाँवड़े मंडप तरे बम्हन बेद पढ़े बहु भाँत ।472
गाँठ जोरा के फेरा फिरे संगै परीं भाँवरें सात ।473
बनछोरन को मचले हते तुमने बहुत करे छरछन्द ।474
बुला मुसद्दी बाबुल ने कर दई सात गांव की सन्ध ।475
डारी उकावें कुडिहर की अब तुम मरन महोबे जाव ।476
डोला फँदा के बेदर्दी मेरो काय कों लाये चलाय ।477
.... लये जूझन चले महोबियन साथ ।478
मजा चलाये को देखो ना रे सेजिया पे दिना दो चार ।479
जूझन महोबियन संगे चले नाहर कस बांधे हथियार ।480
सोला बरस की उम्मर है नये जोबन की उठी मरोर ।481
स्वामी तुम्हारे जियरा बिन गासी कढ़ै करेजो फोर ।482
बेंदी फूल रही माथे पे पैंयाँ पाँवपोस छबि देत ।483
पियर चढ़ी है हरदी की एड़न मावर मन हर लेत ।484
गोरे कपोलन तिल राजे मानो भौंरा लेत पराग ।485
अरुण कमल पै छबि छाजत निरखत भूल जाय बैराग ।486
घरी घरी से दिन घाटै स्वामी तारे गिन गिन रैन ।487
स्वामी तुम्हारे जियरा बिन मोंखों पल भर परै न चैन ।488
देह धरे की संसार में ना तो करो संग रस भोग ।489
बारी बयस में छोड़त हो करकै भांवर को संजोग ।490
जो तुम जात हो महोबे को मोरो डोला करालो तैयार ।491

आंगे हथिनिया तुम्हरी चलहै पाछे डोला चलै हमार ।492
नटवा नैयां ना हम नट बेड़िया रानी सत्य सुनो मम बात ।493
हँसी करैगो चन्देलो लाखन ल्याये कबीला साथ ।494
(बैठे रहियो सतखण्डा पै सुख चखो डबन के पान ।495
जीत जिगरिया घर बावरे तोरी मोतन से भरदौं मांग ।496
बारौं जारी सतखण्डा पानन पै परे तुषार ।497
तोरे अकेले के जियरा बिन मोको सूनो लगे संसार) ।498
जल की शोभा कमलै है स्वामी दल की शोभा फील ।499
धन की शोभा धरमै है भाई गुन की शोभा शील ।500
रुचि से राँधे फीके लगें स्वामी बे सांभर के साग ।501
नारी की शोभा जौं लौं है कंथा जौं लौं रहे सुहाग ।502
रजनी सूनी चन्दा बिन और कमलन बिन सूनो ताल ।503
गिरवर सूनो भंवरा बिन भाई टेन बिना करछाल ।504
हिरदो सूनो विद्या बिन और तरवर बिन सूनो पात ।505
कानन सूनो केहर बिन महंत बिन सूनी जमाद ।506
सूनो बगीचा कुयेल बिन भाई सांग बिन सूनो बान ।507
आश्रम सूनो भामिनि बिन और पानी बिन सूनो निबान ।508
भैया बिन तो लगे मायको सूनो पिया बिना एबात ।509
व्यंजन सूनो सांभर बिन और बे दूल्हा सूनी बरात ।510
(सूनी सवारी डंका बिन बे दूला सूनी बरात) ।511
सुन सुन करना रानी की रे महराज महोबे बार ।512
गंगा उठा लइ ऊदल ने माथे धरी नगिन तलवार ।513
लाख दुहाई जसराज की और देवला को दूध हराम ।514
जैसे लाखन लै जात हौं मैं पहुँचादों तुम्हारे धाम ।515
आगैं खातिरी ऊदल की भाई मन मानो बिस्वास ।516
उठी दुलैया द्योढ़ी सें दाखिल हो रइ जहाँ रनिवास ।517
मुजरा करके लाखन से रे महराज महोबे बार ।518
अपनी राउर चल डिगरे बगलन लगी ढ़ाल तरवार ।519

कारी बदरिया सुमिरन करें भाई लोका के बल जायँ ।520
आज वरस जा कनवज घर कंथा एक रात रह जाय ।521
कारी बदरिया लागें भियावनी घुमड़ घटा घहराय ।522
पिया बेदर्दी माने ना चाहे महोबे लों बरसत जाय ।523
दिया की सेलन रातव दई और अधरात चनन की दार ।524
होत भुनसरा मिरचै दई घोड़े मजल न डारें लार ।525
राजा करन के पारे में ज्वानन करे बछेरा त्यार ।526
तंग खेंच दई घोड़न के ऊपर दै दै गासियां डार ।527
सुमिरन करके शारद को सूरन बांध लए हथियार ।528
खुलो फाटको कनवज को पांचो निकल गये सिरदार ।529

पृथ्वीराज का कीरत सागर आना और आल्हा मनौआ (ब्रह्मा ने मलखान को चिट्ठी लिखी और मलखान ने आल्हा ऊदल को कन्नौज चिट्ठी लिखी)[11]

हर भले हिरना भले और सगुना भले किसान ।530
अरजुन रथ को हांक तो तुम्हारी भली करे भगवान ।531
आल की पत्रका मलखान ने दई हरसिंह के हाथ ।532
कहत मलारो हरसिह भाई धावो दिन और रात ।533
देर न करने रस्ता में भैया तंत्र मंत्र की बात ।534
विदा मांग के अरे जयचन्द सें लाओ आल उदल कों साथ ।535
मुजरा करके अरे हरसिह ने भाई करो बछेरा त्यार ।536
मातरें कुला को सुमिरन कर आधी रात भयो असवार ।537
हरिसिंग जोधा कनवज गयो जाँहाँ बसै आल रनधीर[12] ।538
मुलरा करके पाती दई और जा कही महोबे भीर ।539
सुनत बनाफर अरे झर्रा गयो भाई तिरछे करके नैन ।540
तरफ हेर कें हरिसिंग की ऐसी कही बनाफर बैन ।541
पहुनाई आयो है अरे पहुनाई करो भाई तुम्हरे करत की आय ।542
लुवावे बुलावे को चन्देल सें हरिसिंग कौन हमारो काम ।543
देश निकार दयो चन्देल ने और कुटुम सहित परिवार ।544

कमी करा दई कागज सें कटुवा दये राज से बार ।545
खोरन खोरन वंमई फिरी और गलिन फिरे असवार ।546
रोम न कसको परमाल को हमें भर दुफरै दयो निकार ।547
बाड़े बमुरिया टिमरों की जौंरन बासन मारे घाम ।548
आवे जैबे को चन्देल में हरिसिंग कौन हमारो काम ।549
जेठ मास के भर दुपरै और संग हतो रनवास ।550
खबर न भूलै या दिन की बारो ईदल मरो प्यास ।551
तीन रोज तों कीरत रये और नेक न बूजी बात ।552
पानी उठायो कीरत को अबका नगर महोबे जात ।553
ग्यान मान सें बिगरत है और मंत्रिन बिन बिगरें राज ।554
जती कुसंगत सें बिगरत है और सुरापान सें लाज ।555
दाता बिगारे सूंमन ने घट करनी ने बिगारे नूर ।556
सभा बिगारी तो अरे कौरन ने और कायरन ने बिगारे सूर ।557
दूध बिगारे बछला नें मछली नें बिगारे नीर ।558
पुष्प बिगारे अरे भुमरा ने प्रमदा ने बिगारे फकीर ।559
गांव बिगारे अरे डंडी ने और काई ने बिगारे ताल ।560
माहिल भूपत की चुगली में राजा बिगर गयो परमाल ।561
प्रथीराज सें रोरी है भाई करो युद्ध को ठाट ।562
सूर विसालें लरवे खौं लाला कर लाहौरी हाट ।563
मेला बटेसुर को जाहिर है जाँ बहुतेरे सूर बिकाँय ।564
चातुर पारखी को पठवा दों सो लै आवै सूर विसाय ।565
दमरी दमरी के दो दो बिकैं पैसा के सोरा बिकाँय ।566
चतुर पारखी अरे माहिल है दो एक रूंगन में मिल जाय ।567
कांटो कसौ ना में कम्मर सें ना कनवज से करों पयान ।568
गमन महोबे कर हों ना हमको गुर गोरख की आन ।569
लाख दूहाई जसराज की और दिबला को दूध हराम ।570
चन्देले ढिग जैहों ना जांने तुलसी सालिक राम ।571
सुकने बानी अल्लन की हरिसिंग बोलै बचन उचार ।572

भली बिचारी दादा आलदे हमको छोड़ दये मजधार ।573
दे कै नगारो कनवज में अरे उर छोर धरे हतियार ।574
चन्देलन की रियासत को दादा मोरे सिर पर भार ।575
मोजें करत रयो तुम कनबज में खाओ दूद ओर भात ।576
पान बिदा को मोह मिल जावै मैं लौट महोबे जात ।577
नोंन उजार करों परमाल का परगन खेल दिखाय ।578
समर सामरी सें निरभय करो पाछें रियासत रयें चाहे जाय ।579
(लाज शरम जिनकें नहीं ते नर जीवत मरे समान) ।580
बन्दे पलेंबा मोरे छूटें ना ना करों अन्न उर पान ।581
नगर कनवजा में बिलमों ना मोय बच्छराज पिता की आन ।582
अब उठ मिल लो दादा आलदे और निगा करत रयो साय ।583
जियत रहेंगे तो फिर मिलबें नहि सुरालोक में हुएँ मिलाप ।584
हरिसिंग ठाड़ो मिलबें खों अल्लन उठकें मिलो नहि जाय ।585
धोका बिचारी अल्लन करै मन में एक आबै इक जाय ।586
टप टप आंसू टपकन लगें अरे उर रयों धरन तन हेर ।587
खाई कूप के दुपचे परों भई गत सांप छछूंदर केर ।588
सुन-सुन बानी हरिसिंग की दिवला धरे डबरियन नीर ।589
अभई अबईयां सिजीया सें चल आई अल्ल के तीर ।590
दै परकरमा तो अरे हरिसिंग नें भाई लगत छुये दुइ पांय ।591
बांय पकर के हरिसिंग की दिवला लीनों कंठ लगाय ।592
कहत दिवलदे गरुये आल से बेटा वचन सुनो परवान ।593
टटुवा चाकर हते परमाल कें और टूटे फटे सामान ।594
बूड़ी हथिनियां अदरू हती तापर फटी टाट की झूल ।595
पांच गांवो के ठाकुर हते वा सुध गई भूप को भूल ।596
नदी नरबदा के करके धरें और जमुना की धरें करार ।597
राज करा दयो तें चन्देल खों बेटा जानत जग सिंसार ।598
जिसकी करनी जिसके संगै अपनी करनी अपने साथ ।599

इन्द्रप्रथाप कें चन्देल खों बेटा कैसो कनारो खात ।600
जा दिन बनाफर तें जनमत लये अरे उर डल्लन आई दूब ।601
नाचन आई मलना दे परमाल दान दये खूब ।602
आगे बुलीवां चन्देले और घले डयोण दुवार ।603
टीका पटा तो हम सब बिधि करे और बटे बसाता दुवार ।604
बचन हार दये में चन्देल सें राजा महोवा के अवनीश ।605
तोरे काज में अर्पन है राजा मोरे कुंवर के सीस ।606
सीस तुम्हारे हम दै राखे अब जो जानों तुमे दिखाय ।607
दये दान जो घर राखें सो नर कुम्भी नरक को जाय ।608
त्रेतायुग में दसरत सें कैंकई मांगे दो बरदान ।609
बचन तो उन ना निरफल करे तापर दसरथ तजे प्रान ।610
नाहर को जायो तें लेंडू भयों और मरवे खो भौत डराय ।611
मन चाये कनवज रये और मन मोंज महोबे जाय ।612
चलन महोबे माता कहैं दिवला सीक उपाय ।613
बिदा होंन तैं राजा जैत सें चले जावो दोनों भाय ।614
रखत बखत तो सब सजुवा लो भैया कंकन अंग हुलाया ।615
हरसिंग जोधा संग लैकें आल्हा चलो रजन के पास ।616
दरबानन नें जाहिर करी सब इतहांस समार ।617
ठाड़ो बनाफर दरबाजे तुमरो करन चहत दरबार ।618
इतनी सुनकें राजा जैयत ने और लीनों अल्ल बुलाय ।619
हंस मुजरा लै पूंछत भये अब क्यों आये बिना बुलाय ।620
ना तो किसी सें टंटो भयो अरे उर ना हंकार पुकार ।621
मैं तोय पूछो गरुये आलदे कां को बांदे जात हथयार ।622
शीश नवा के अरे जैचन्द पै अल्लन बिनय करी सिर नाय ।623
लुवावन हरिसिंग अब मोय आयो राजा नृप परमाल बुलाय ।624
आंख बदल कें राजा जैयत ने कही भूप रिसयाय ।625
जिये हमारी रियासत में अब का मरन महोबे जाय ।626

चाकर चन्देलन के साकिन के तिन ना कीनों कछू बिचार।1627
कमी करा दई कागज सें कढुवा दये राज सें बार।1628
सरन हमारी जब तुम आये अरे उर कुटुम सहित परिवार।1629
जान सिपाही में बिलमा लये बिपदा काटी हमारे दुवार।1630
में सब दै दयो जागीरें अरे ओर बैठारे निज पास।1631
करीं रजाइस तुम कनवज में नित नये कीनों भोग बिलास।1632
बिदा काए खूं अब मांगत है समझ देख मन मांय।1633
जाही के घर में ओंड़ो करे जाही से साइत पूंछन जाय।1634
बैल सरप ने काटो हतो निज धनी बैठ गयो भाव।1635
छोड़े न छोड़े तो जोते का अल्लन समझ देख सत भाव।1636
डारो छावोनी तुम कनवज में मोंजें करो हमारे पास।1637
नावो छोड़ दो गढ़ महोबे को तजो चन्देलों की आस।1638
बिन अनुसासन राजा जैयत की कनवज सें करो पियान।1639
बंद नवारे करवा दयों जमुना घाट न पावो जान।1640
गैलें बंदा दयों गढ़ महोबे की झोरी झंडा सब लै लैंव।1641
जैसे हालन सें आये हते में कड़वा दैयों ज्यों के त्यों।1642
सुनके बानी राजा जैयत की ओर कही वनाफर आल।1643
बोलचाल में कड़ने का गढ़ कनवज के महिपाल।1644
सरन कौन की हम रहते हैं औ न काहू के आधार।1645
गुरू गोरख की कृपा सें परभूम बजी तरवार।1646
कोंड़ी तुमारी हम खाई ना ओर सेवा करी हमेस।1647
आप उमर भर तुमें मिलौना हमनें फतों करे ते देस।1648
जी जी गढ़िया को मूंदे भये नाद निशान बजाय।1649
मार बहादुरी सें सर कर दये अपनी चौथ लई बंधवाय।1650
जे जे मवासी बदले हते हम वस करे भुजन सें जाय।1651
रखा जापता दई कनवज में तुमरी सेवा दई करवाय।1652
जाके कुल की अब जैसी है राजा लयें रात है तौन।1653

सिंग बाज के छीनन खो भूपति मार सिखावे कौन।1654
लघुताई में चतुर नर राजा रावत गुनन छिपाय।1655
नख नाहर के हैं अंत कर देते राजा प्रगटते अवसर पाय।1656
संका किसी की हम मानें ना और यह हमरे कुल की रीत।1657
लरें सामने दुश्मन के अरे उर हार होय चाये जीत।1658
श्याम धरम के दल पांगुरे अब सब लाज शरम गई छूट।1659
जुध महोबें पीछे करें पहिले कनवज पुर लेंय लूट[13]।1660
सुन सुन बानी गरूये आल की राजा मन में करें विचार।1661
इनें दवायें में चाये हते अरे उर कुटुम सहित परवार।1662
जे जे मवासी बदले हते ते ते तिसरा दये लगाय।1663
जोधा घर का सो जोरावर जाय जो ल्यायो बंधवाय।1664
साय जान को इन गह लीनां जाके नव्वे लाख सवार।1665
जो वरदानी है दुर्गा को जासें कौन बड़ावै रार।1666
ऐसी समझ कें दल पांगुरे राजा फिर नहिं वचन उचार।1667
कही आल की पाछें करी जानत भूपत के गुन चार।1668
तरफ हेर कें हरिसिंग की राजा कहत कनबजा वार।1669
प्रथीराज उर चन्देल सें तुम कवो कैसें बड़ गई रार।1670
सुनके बानी राजा जैयत की हरसिंग विनय करी सिर नाय।1671
पा अनुसासन राजा जैयत की ओर कही कथा समझाय।1672
समद सिकर गढ़ कों चढ़ कें गयो राजा प्रथीराज बलवान।1673
आन बीच में रण झिल बड़ो शाह दीन सुल्तान।1674
सूर पचासक घाइल भये और फिर पकर लयो सुल्तान।1675
ते भट फेरे दिल्ली को राजा संग दसी गुनवान।1676
दुन्द भयो जब परमाल से उर वे जूझ गिरे भट राय।1677
सो सुध कीनी दिल्ली सुर अब चड़ आयो निसान बजाय।1678
तासों भूपत अब सुक पाकें अल्लन देयो पठाय।1679
मदद करकें परमाल की पाछें बिदा करो सुख पाय।1680

सुनके बानी अब हरसिंग की महाराज कनवजा वार ।1681
तरफ हेर कें हरसिंग की हंस कें बोलो बचन उजार ।1682
डेढ़ स्यानों है सिसार में कब कहते चतुर सुजान ।1683
आप समंगल समझत है औरन आधे से घट जान ।1684
ऐसो भोरो को सिसार में जान परै अंध कूप ।1685
आप फूंकले मुखड़ा सों और दै राखे और कें सूप ।1686
हान लाभ में जो समझै ना जग में ऐसो मूरख कोय ।1687
दे के बैठे बछिया सी अपनों सब धन डारै खोय ।1688
पूंतन पराये पुत नोते जग में देखे सुने न कोय ।1689
सरप पाहुने पकरें नहो मागे के बरन न पावन होय ।1690
फौज आपको दै राखों मरबे को परदेस ।1691
हमें तीरथन पठवा दो लाला धर जोगी को भेस ।1692
बार बार में तुमसें कही यहां से अल्ल न जावो कोय ।1693
अब सुध लीजै ना चन्देल की ठाकुर में समझांऊ तोय ।1694
सुनके बानी राजा जैयत की बोलो बच्छराज की नन्द ।1695
लोहे की लंका गढ़ महोबो है तुम सुनों भूप जैचन्द ।1696
बृम चंदेलो सो राजा जां जाके मुख पर बरसत नूर ।1697
ठाकुर चाकर परजा को राजा प्रान सजीवन मूर ।1698
जगनक जल्हन के सांउत जहां प्रोहत के सब राय ।1699
ढेंगर दउवा भारामल उर जां माड़िल भूपत राय ।1700
नागा हजूरी मड़िया को सुरकी राय वसन्त ।1701
देवकरन से जोधा जां अरे उर बच्छराज बलवन्त ।1702
जा दिन बिचले कीरत पर जे तेरा सामन्त ।1703
इनकी बरनी को जग धरनी जैसें जरासिन्ध भगवन्त ।1704
बड़े-बड़े जोधन के माथे की उड़-उड़ जावें खपरिया फूट ।1705
टूट-टूट सिर धरनी गिरें करें अवछरा लूट ।1706
नचें जोगनी खप्पर लयें बेताल अलापें राग ।1707

नगर महोबो जानों जिन राजा घुल्ला पै की पाग ।1708
आसपास के भुमियां सब जागीरदार सिरदार ।1709
सबै बखत पै हम शामिल रहें हमसे सबसें भैयाचार ।1710
कई तुम हमको कई हम तुमको ऐसो अरस परस ब्योहार ।1711
ऐसी जान कें दल पांगुरे मोय पठवायो बृम कुमार ।1712
राखोंबनाफर रयो कनवज में मोय मिल जावै विदा को पान ।1713
ताल किर्तुवा की बंदिया पै हम चल देखों रावो चौहान ।1714
चाकर नहियां हम चन्देल के एक देस प्रीत की रीत ।1715
समर सामरी नूरभै करें चाहे हार होय कै जीत ।1716
कुमक अपनी हम चाहत ना ना तोप बान हथियार ।1717
ताल किर्तुवा की बंदिया पै कृपा करो कनवजा वार ।1718
कोतुक देखो कजलियन को एकह एक प्रचार ।1719
प्रथीराज के सूरन सों हमसें झड़ने बेरी मार ।1720
आवै कजलियां महोबे में नारी गावें मंगलाचार ।1721
देखो तमासो तुम बंदिया पै को कैसी करै तरवार ।1722
फाग उड़ीसा की बरनी है वहु तक देखत दुनियां दौर ।1723
नोमी अवधपुर की बरनी है और बैकुंठ धाम को ठौर ।1724
दीप मालका गोकल की और जैपुर की गनगौर ।1725
साउन बरनों महोबे को ऐसो होत ना कोनऊं ठौर ।1726
सीस नवा कै जैचन्द से अरे उर कही बनाफर आल ।1727
ताल किर्तुवा की बन्दिया पै बैकुन्ठ रचो परमाल ।1728
बार-बार में बिनती करों राजा कोप करो बे काज ।1729
स्वामी साकरे मेरे परों तासें कृपा करो महाराज ।1730
स्वामी को तो संकट परे अरे उर चाकर को सुक होय ।1731
कोट जनम तो नरकै परै राजा जा कहते बुध लोग ।1732
जो जाके सननें रचै अरे·····ती को ताकी लाज ।1733
मीनधार तो सामी चड़ै और बधे जात गजराज ।1734

कानन केहर को जोरा है और स्वामी सेवक ऐव ।1735
घाट रिपट नों उतरन कयो राजा दै लहिया की जेव ।1736
स्वामी समरथ चहियत हैं जैसे रगपत कृपा निवास ।1737
सकत दसानन की सन्मुख लई पाछै मेलो विभीषण दास ।1738
कुमक दवे को सिसार में राजा सुजस तुमारो होय ।1731
रण जीते की······याँ में राजा मिलै बढ़ाई मोय ।1740
देर न करनें दल पांगुरे मरजी हो जावै झटपट ।1741
आधी रात के बारा बजें धरनें गढ़ महोबे की बट ।1742
आल हरसिंग की बिनती सुन राजा खुसी भये जैचन्द ।1743
मंद मंद तो मुशक्या कें कर दई सात गांव की सन्द ।1744
पांच बछेरा सज दो हाती और दीनें अति आनन्द ।1745
चूरा सिरो पावो दै दोई भैरन राजा बिदा करे जैचन्द ।1746
दे परकरमा गरुये आल नें और विनय करी कर जोर ।1747
हुक्म के चाकर हम कदमन के राजा पूजो मनोरथ मोर ।1748
स्वामी हमारे को संकट परो कीजै आप सहाय ।1749
कुमक आपनी मिल जावें तो हम नगर महोबे जाँय ।1750
तोप पचासक संगै देव ऊँट नाल और बान ।1751
एक लाख तो सिर बन्दी रन इच्छा के घमशान ।1752
राय वहादुर को संगै देवी ज····जंग और मुनीर ।1753
मुकट सिरोमन चूरामन और समसीर जंग रणधीर ।1754
अनी रावो और चामडरा रन दूला दिमान मुसाब ।1755
जंग वहादुर वंका जू नंसवदार मियाँ जू साब ।1756
हरी भावो और दल पतरा आपा साव राव रघुनाथ ।1757
रावो वहादुर जीवा जी मुवाभाऊ साव शिवनाथ ।1758
रावो कालका मोंरा जी मुवारांक धुनी बलभट ।1759
मोर टंटरी उजधक सिंग दोनों भाई केहरी कंट ।1760
हरसिंग बिरसिंग गांजर के और बैरा विझोटे बार ।1761

लोधी घरू·····गै देयो रनपत सिंग पथरिया क्यार ।1762
मांधान दांगी नरवर को गढ़ माड़ो की रतन पमार ।1763
मानिक दऊवां मंगसी को मेंना मेंन पहारिया क्यार ।1764
समद सिकर को काले खाँ मिरजा कोड़ा जहानाबाद ।1765
कोंच कालपी की मंगल खत्री और काइथ हर प्रसाद ।1766
पूंछ पहार को बड़ गुंजर कुरहट को खेता खगार ।1767
मिसरी पुर को भारामल बैरी साल बनौधा वार ।1768
शहर मानिकपुर को सरवद खाँ सैयद नगरें कोटरा वार ।1769
अकबरपुर को अनवर खाँ मियना···············14 ।1770

शीबू दा के आल्हा गायन की वर्तमान धुन

वन्दना :

ऩी ऩी — ऩी सा सा रे सारेसाऩी सा सा — सा मा सा
भु जा — चा र तो — — अ रे — सुं द र

सा ऩी — ऩी सा सा — सा — सा सा — सा —
त न — ओ — भै — या — भु जा — चा —

रे सा — सा — सा — सा रे सा सा सा रे सा
र तो — जे — सुं — द र त न दे खो सुं

—सा रे सा सा नी·····················
—द र त न ················ ····

ऩी ऩी ऩी ऩी — मा मा रे रे — — मा मा रे रे मा
ति ल क चं — द ए क दं — — त जि न को ध्या

सा सा ऩी सा सा रे सा सा मा रे सा रे ग सा रे रे
न तो — अ रे — हि र दै — ध रे — क ई ए

सा सा — सा सा सा — सा सा सा — सा
क मू — ढ भ ये — गु ण वं — त

ताल कहरवा (यहाँ से लय स्थिर होने लगती है)

+		+	
ऩी ऩी ऩी ऩी	ऩी ऩी सा रे	ग — — ग	— रे रे सा
सु र प त	ग न प त	— — — आ	— व ध प
रे सा — सा	— ऩी सा सा	सा रे रे सा	सा सा — सा
त भैं — या	— सु र प	त ग न प	त जे — आ
— रे रे सा	सा सा रे सा	— सा रे सा	सा — — —
— ब ध प	त दे खो आ	— व ध प	त — — —
ऩी ऩी ऩी ऩी	ऩी ऩी ऩी सा	सा रे रे —	— सा सा र
औ र ख ग	प त की —	स म ना —	— य अ ह
रे सा सा सा	सा सा ऩी ऩी	ऩी — सा रे	रे रे सा रे
प त प शु	प त क म	ला — प त	नि स दि न
रे रे सा —	सा रे सा सा	सा — — सा	(अन्य लाइनें भी
ज पे न —	र ह त स	हा — — य	इसी तरह)

आल्हा

सा सा — सा	रे — सा सा	सा — सा —	रे रे सा सा
कि लो — क	ली — ज र	को — दे —	ख न ग ये
सा रे सा —	सा रे सा सा	— — — —	ऩी ऩी ऩी ऩी
दे खो दे —	ख न ग ये	— — — —	औ र म ह
ऩी सा सा रे	रे — रे —	रे — — साऩी	सा रे रे सा
रा — ज म	हो — वे —	वा — — रे	ब — म्म स
सा — सा —	— ऩी ऩी ऩी	ऩी सा सा रे	रे — सा —
वा — री —	— — सि र	बं — दी —	सं — गे —
सा रे रे स	सा सा सा सा	सा — — सा	
ध व ल उ	ध ल उ र	आ — — ल	

(धीरे-धीरे लय बढ़ती है और अन्त में धुन का रूप निम्नलिखित हो जाता है)

सा रे रे सा	सा सा सा —	— — ग ग	ग — ग —
आ — ल उ	द ल को —	— — बु ल	वा — यो —
रे — सा रे	रे ग ग रे	रे ग रे —	सा — — सा
रे — म ह	रा — ज म	हो — बे —	बा — — र

आल्हा की धुन जिसमें शीबू दा गायन करते थे

सा............ऩी ऩी ऩी ऩी ऩी सा ग रेग रे सा — ग ग ग —
आ... ......ह र भ ले हि र ना — भ ले — स गु ना —

ग ग रे सा रे — — रे रे ग रे सा सा रे ऩी — — — प़ ऩी ऩी सा
भ ले — कि सा — — न अ र जु न र थ को — — — अ रे भा ई

ग — रे सा सा रे सा — ग ग — रे सा रे ऩी ऩी सा — — — —
हाँ — क तो तु म री — भ ली — क रे — भ ग वा — — — —

— — सा
— — न

ताल कहरवा

सा — ऩी सा	ग — — —	— — — रेसा	रे — ऩी —
हाँ — — —	— — — —	— — — —	— — आ —
ऩी ऩी — ऩी	— ऩी सा —	ऩी सा ऩी सा	ग — — रे
ल की — प	— त्र का —	अ रे म ल	खा — — —
रे ग रे ऩी	सा — — —	— — — —	— — सा सा
— — — न	ने — — —	— — — —	— — उ र
ग ग ग ग	ग ग रे सा	रे — — रे	रे ग रे सा
द ई ह र	सिं ग के —	हा — — थ	क ह त म
सा रे ऩी —	— — — —	प़ ऩी ऩी सा	ग ग रे —
ला — रो —	— — — —	अ रे ह र	सिं ग से —
ऩी — सा —	ग — रे —	सा रे ऩी ऩी	सा — — सा
भा — ई —	धा — वो —	दि न औ र	रा — — त

(तबला यहाँ रुक जाता है। यहाँ से धुन बदलती है और अल्हैत दो दल बनाकर गाना शुरू करते हैं।)

(क) म···म म म म म म ग ग रे र रे रे रेग गग गग रेसा ऩी ऩी
हाँ···दे र ना क र ने अ रे र स्ता में भै या तंत्र मंत्र की बा त

ताल दादरा

+			०			+			०		
नी़	नी़	सा	रे	रेग	ग	मग	-रे	ग	सा	-सा	सा
—	बि	दा	माँ	गके	के	अरे	-ज	य	चौं	-द	से
—	सा	रे	ग	ग	ग	मग	-रे	सा	नी़	—	नी़
—	ता	ओ	आ	ल	उ	दल	-को	—	सा	—	थ
—	नी़नी़	सा	रेरे	-ग	—	मग	-रे	ग	रेस	-सा	सा
--	मुज	रा	कर	-के	—	अरे	-ह	र	सिग	-ने	—
—	सा	रे	ग	ग	ग	मग	-रे	मा	नी़	—	नी़
--	भा	ई	क	रो	व	छे	-रा	—	त्या	--	र
—	नी़	सा	रे	रेग	--	मग	रेग	--	रेसा	-सा	सा
—	मा	त	रे	कुला	—	को	-सु	मि	रन	-क	र
—	सा	रे	ग	ग	ग	मग	-रे	सा	नी़	—	नी़
—	आ	धी	रा	त	भ	यो	-अ	स	वा	—	र
--	नी़नी़	सासा	रे	ग	ग	मग	रेग	—	रेसा	सा	सा
—	हर	सिग	जो	धा	तो	अरे	-क	न	वज	ग	यो
—	म	म	म	म	म	—	म	म	ग	—	रेसा
—	जाँ	तो	ब	से	आ	—	ल	रण	धी	—	र
रेग	ग	—	सरे	सा	--	—	नी़नी़	सा	रे	-ग	ग
मुज	रा	—	कर	के	—	—	अरे	पा	ती	-द	ई
—	रेरे	ग	म	प	म	ग	-सा	नी़	सा	—	सा
—	ओर		क	ही	म	हो	-वे	—	भी	—	र

(इस तरह से आल्हा की कुछ पंक्तियां गाकर एक गायक खत्म करता है और दूसरा गायक इसी धुन में आगे की लाइनें गाता है। शुरू-शुरू में धुन मध्यम ([illegible]) से उठाई गई थी पर बाद के पूरे गायन में यह धुन प...प प प प प प म म ग ग ग ग गम मम मग रेसा नी़ नी़ ऐसे गाई गई है)

संदर्भ-संकेत :

1. इस लेख की सामग्री मार्च 30,31,1985, दिसम्बर 31,1985 तथा जनवरी 1,1986 के दौरान श्री रामकुमार बरुआ, श्री मथुरा प्रसाद बरुआ, तथा प्रभूदयाल पटवारी से साक्षात्कार करके एकत्रित की गई थी। जहाँ तक मैं खोज कर सका हूँ आजकल सिर्फ इन्हीं तीन व्यक्तियों द्वारा ही शीवू का आल्हा सुना जा सकता है। साक्षात्कार की व्यवस्था श्री सूर्य प्रताप सिंह, बिजना के द्वारा सम्भव हो सकी थी। लेखक इन सबके सहयोग का आभारी है।

2. देखिये **'मामुलिया'** 3 (9) : 102-103, 1983. **मामुलिया** के इन पृष्ठों में दिया आल्हा किस तरह प्राप्त हुआ यह स्पष्ट नहीं है।

3. प्रभूदयाल के अनुसार औरत लिटोरिनी जाति की थी और वह दतिया से थी। मथुरा प्रसाद ने उसे कहीं पूरब की ओर की कहा।

4. रामकुमार बरुआ ने कहा कि यह सब उनके सामने हुआ था। देवसिंह से रामकुमार ने कुछ सुनकर सीखा, कुछ लिखवाते समय याद किया और इस प्रकार आज जो भी शीवू का आल्हा ज्ञात है वह कंठस्थ हुआ था। बाद में रामकुमार ने अपने भाई मथुरा प्रसाद को भी सिखाया। प्रभूदयाल को भी साथ में ढोलक बजाते बजाते काफी आल्हा याद हो गया है। ये तीनों अल्हैत जिस धुन में आल्हा गाते हैं, वह धुन शीवू की धुन से भिन्न है। आजकल ये अल्हैत अपनी बनाई धुन में गाते हैं जो उनके कथनानुसार गाने में सरल है। इसके गाने में सिर्फ ढोलक की आवश्यकता होती है।

5. अल्हैतों ने निम्नलिखित वन्दना तथा साखी गाकर शीवू दा का आल्हा गाया :

   भुजा चार तो सुन्दर तन तिलक चन्द एक दन्त।1
   जिनको ध्यान तो अरे हिरदय धरै कई एक मूढ़ भये गुणवंत।2

सुरपत गनपत अवधपत नागपत कीस मनाय ।3
अहपत पशुपत कमलापत निसदिन जन पे रहत सहाय ।4
तुम्हें मनालूं देवी सरसुती सब देवन की सरताज ।5
ध्वजा नारियल अर्पण है दुर्गा तोय बाने की लाज ।6
श्वेत वस्त्र तुम धारण करै गल मोतिन की माल ।7
श्वेत छत्र माथे है मैया वाँहन चढ़ी मराल ।8
सेवा पूजा जानों ना हो जाओ सरसुती दयाल ।9
साको गालौं जो सूरन को दुर्गा दीजे बुद्ध विशाल ।10
गन अगनन में जानो ना अक्षर अर्थ न जानौं एक ।11
साको गालौं जो मजलस में जो तुम राखो शारदा टेक ।12
पाटी लेके न विद्या पढ़ी पिंगल अमर कोष न देख ।13
तुलसीकृत के जा सुनने में कछु कढ़िआई पुरातन रेख ।14
(नगर महोबे के मनिया देव तुमसे बिनय करूँ सिरु नाय ।15
जो कछु साको महोबे भयो भूले अक्षर देव बताय ।16
सूरत से कीरत भली बिन पंखन उड़ि जाय ।17
सूरत मूरत रम जैहै तुम्हरी कीरत कहीं ना जाय) ।18
मौनी सदा शंकर जी जिनकी जटन बिराजै गंग ।19
पारवती सी अर्द्धांगिनी मल मल भसम चढ़ावै अंग ।20
नंदि वाहन तौ गिरिजापति पटभूषन व्याल कपाल ।21
तिलक चन्द्र तों माथे हैं तुम्हरे गर मुण्डन की माल ।22
बाघाम्बर पै आसन है भाई मूरत परम बिशाल ।23
सेवा पूजा जानौं ना सेवौं शंकर दीन दयाल ।24
बाम अंग पे गिरिजा सोहै भाई पीवे भंग की रंग ।25
कर में डोरू राजत है तुम्हरे जटन बिराजै गंग ।26
पदम झनंकै चरनन में भाई सोहै अंग भभूत ।27
कर त्रिशूल तो अनियारो तुम्हरे संग समाज है भूत ।28
काशी निवासी कैलासी अवनासी करो मेहर ।29

काज संवारे देवन के तुमने पिये हलाहल जहर ।30
काशीपुरी की करों वन्दना सेवा करें सिद्ध मुनि धाय ।31
विश्वनाथ के दरशन हैं भाई जनम सुफल हो जाय ।32
गिया गजाधर को कर जोरों जागत पावे जीव निकाय ।33
पिण्ड दये को मातम है पापी प्रीत जौन तर जाय ।34
अवध नगर की करूँ वन्दना जाँ हरि कीन्हों बाल बिनोद ।35
ब्रह्म निरंजन अवनासी खेले कौसल्या की गोद ।36
चित्रकूट की करूँ वन्दना जाँ तप करत सिद्ध मुनि धीर ।37
लखन जानकी रघुनंदन वहरे पैसरनों के तीर ।38
सुरग नसेनी त्रिवेणी भाई तीरथराज मनाय ।39
मकर नहावे नर नारी बिन श्रम परम धाम को जाय ।40
गंगा जमुना गोदावरि सरजू सिंध सरसुती ध्याय ।41
जिनके सपरे पातक नसे भाई छुवत अधम तर जाय ।42
शीश शारदा नारद कहे और तब पंडत करें बिचार ।43
तुलसीदास तो भागीरथ कर गये दुनियाँ कों आधार ।44
दया धरम तो है नैयाँ का सुन पावे वेद पुरान ।45
कलजुग के तो नर नारी तारे गंगा और रामान ।46
सतजुग त्रेता द्वापर में रै गई नीत धरम नर नार ।47
कलजुग प्रगटे दुनियाँ में जब सें बन्द भये बीहार ।48
नीच करम तो उत्तम हैं बामन लेवैं दान कुदान ।49
देव पितर गुरु कोऊ माने ना हरजन बाँचें वेद पुरान ।50
सिंह रूप तो राजा भये मंत्री हो रये बाघ समान ।51
गीध रूप तो चाकर भये परजा हो रई काग उड़ान ।52
परगुन सुनके हिरदो जरे परदुःख देख बहुत हरसायँ ।53
नगर बसावें अपने पाप को और परखेरो सहो न जाय ।54
बैन भनैजे कोऊ माने ना नर रह नारी के आधार ।55
सास ससुर सें नातो है ना सबरे बन्द भये ब्योहार ।56
पंच भये हैं परपंची और मुह देखी करें पंचात ।57

ठाकुर सोहाती मीठी लगे साँची बात करें जर जात ।58
साँची सज्जन फाँके करें भाई लाबर लड्डू खाय ।59
सादी औसर घर बाहर परसा परसें भातन भात ।60
राजी महरिया बोलन लगी और जावे खसम से रूठ ।61
गावें दादरे गलियन में सब लाज शरम गई छूट ।62
माता अंजनी की करू बन्दना जिनने जायो पूत सपूत ।63
राम काज तो जनमत भये और बल पोरख बड़ो अकूत ।64
जनमत उड़ गओ आकाश को भाई भच्छ करो रवि जाय ।65
सकल सुरन को संकट परो ता छिन भान दयो मुकराय ।66
जनकसुता खों खोजन गये सब कपि बैठे देख हरसांयं ।67
सकल कपन की तन राखे लीला खूंध गये निधि आय ।68
जनकसुता खों लंका में भाई बाढ़ो सूझ्य अपार ।69
कर पल्लव में बैठी हतीं ता छिन दई मुन्द्रिका डार ।70
सोच नेबारो सीता को निशचर सैन करी छक छुरं ।71
अक्षय कुमारै संहारो रावण मुख कों रहो न झुरं 72
लंका जलाई एक छिन में सीतै धीरज दीन ।73
लैके निसानी चूड़ामणि फिर गमन राम पै कीन ।74
सकती लागी लछिमन खों रघुबर भई सोच भरपूर ।75
सोच नेबारो संकट हरो तब लै आये सजीवन भूर ।76
बैठे पेताले अहिरावण भाई हनो निशाचर जाय ।77
राम लखन खों ले आये और सुख दयो कटक मै आय ।78
राम बिरह निघ डूबत हते न तो परै धरत ते धीर ।79
जलजहान तेह अवसर जोनो आय गये महावीर ।80
लाल लंगोट कर सोंटा ताखों चढ़े सीर सिन्दूर ।81
धूप लगत है कूघर की हनुमत कारज करें जरूर ।82
जनकसुता की आयुस है भाई राम करें अति छोय ।83
व्रत्त करत हैं मंगल को दंगल जीत सकै ना कोय ।84

माता अंजनी शहजादी राजा रामचन्द्र के दूत ।85
धीर हठीले रणबांकुरे हनुमत शील सुजान सपूत ।86
काज कठिन का संसार में तुम सब नायक हो रणधीर ।87
बाबा पजन की सुध लीजे मोरी पक्षि करो महाबीर ।88

साखी : जब से कानन जा मैंने सुनी अधम उधारन नाम ।1
तब से मैंने ज्यादा कर स्वामी घट करनी के काम ।2
अधमन ने तो तुम खों दो अधम उधारन नाम ।3
अधम न होते संसार में तो फिर किये कारते राम ।4
नाकी साकी ना सैरे पाछे कहवे अवसर पाय ।5
सुरता सन्सो करने ना दूजी लगी वारता आय ।6

6. इन अल्हैतों के पास एक हस्तलिखित आल्हा की पुस्तक है जो कि अत्यंत जीर्ण अवस्था में है। यह प्रति शीत्रू के देहान्त के बाद प्राप्त हुई थी। इस प्रति के कई शुरूआत तथा अन्त के पन्ने फटकर खत्म हो चुके हैं। इस हस्तलिखित आल्हा को हाल ही में एक रूलदार कापी में उतार लिया गया है। इस कापी पर शीर्षक है :

आलाखण्ड बन्दना की कापी
आलाखण्ड के रचयिता
श्री श्री श्री शिव दयाल कमरिया उर्फ बाबा पजन
ग्राम पुछी करगुवाँ पोस्ट पुछी करगुवाँ
परगना निवाड़ी जिला टीकमगढ़, मध्य प्रदेश

यह कापी 5-10 साल पहले उतारी गई थी। हस्तलिखित प्रति, हाल में लिखी गई कापी तथा गाये हुये अल्हा इन तीनों में शब्दों तथा पंक्तियों का थोड़ा पाठान्तर है।

7. हस्तलिखित प्रति यहाँ से मिलती है। इसके पहले के पन्ने लापता हैं।

8. यहाँ गायकों ने विश्राम लिया। दूसरे दिन साखी गाकर फिर आल्हा पकड़ लिया :

चिंता करे सें देखो चतुराई गई और सोच करें बलहीन
गरव करें सें अरे माया गई ऐसी कै गय दास कबीर
लंका में बाढ़े लंकेश्वरी और मथुरा में बाढ़ गओ कंस

राजा बाढ़ गओ जो चित्तौड़ को आड़ी दे गयों पनीरापंस
बावन गढ़िया राजा रन्धीर की जिनके सूबा डेढ़ हजार
जिनमें जन्में जे गजमोतिन पूरा रूप दयो करतार
नाकी साकी ना सेरे पाछे कहबे अवसर पाय
सुरता सम्सो करने न अब दिल्ली का सुन लेव हवाल

9. यह भाग मुझे अल्हैतों द्वारा (संख्या 1 से 529 तक) अलग-अलग अवसर पर दो बार सुनने और टेप करने को मिला। एक बार अल्हैतों ने संख्या 1 से शुरू करके संख्या 411 पर खत्म किया। दूसरी बार संख्या 325 से शुरू करके संख्या 529 पर खत्म किया। इन दोनों पाठों में शब्दों का हेरफेर तथा कुछ लाइनों की जगह बदल गई है। दूसरी बार गाने से पहले अल्हैतों ने टिप्पणी 5 की वन्दना की 1 से 18 पंक्तियां गाकर आल्हा शुरू किया था।
10. रात अधिक हो जाने के कारण अल्हैतों ने यहां समाप्ति की। दूसरे दिन टिप्पणी 5 की वन्दना की 19 से 32 पंक्तियां गाकर आल्हा की कड़ी जहां छोड़ी थी वहीं से फिर पकड़ ली।
11. यहां से अल्हैतों ने शीबू दा की धुन में हारमोनियम तथा तबले के साथ गाया।
12. पंक्तियां 538 से 602 तक **'मामुलिया'** 1 (2) : 19-21, 1981 में प्रकाशित शीबू दा के 'आल्हा मनउवा' के समान हैं। कुछ शब्दों का हेरफेर और कुछ एक लाइनों की जगहें भिन्न हैं।
13. अल्हैतों ने यहां तक ही आल्हा गाया। उसके बाद का आल्हा हस्तलिखित प्रति से उतारा गया था। अल्हैतों ने अन्त में यह वन्दना गाकर गोष्ठी समाप्त की थी :

अधम अनेकन अरे तारे हते तिनके कौंन बखानों नाम
वेद पुरानन अरे साकै डरी आखिर परत राम से काम
लंका बंका तारे प्रहलाद को और ध्रुव कों अटल पद कीन
सूरदास खों अरे दरशन दये स्वामी दास आपनो चीन
घना जाट की बारो जमी राखी पीपा की परतीत
भये सारथी अरे पारथ के जिनने लय लये कौरवा जीत
छुहनी अठारह अरे दल कट गओ भाई समर कहो ना जाय
अड़ा बचालै अरे भारई के और घंटा दये रूरकाय

तारी अहल्या मीराबाई करमा और द्रोपदी नार
निज पद दीनो सौरी को हरि ने नेक न कीन बिचार
तारी पूतना अरे गोकुल में और गोपन संग कीन बिहार
सुवा पढ़ावत गड़का तारी हो गई भवसागर से पार
अधम अनेकन अरे तारे हैं तिनके कौन बखाने नाम
अरजी मोरी मैं गरजी हों मरजी तुम्हरी कोसलाधीश
बाबा पजन की अरे सुध लीजे ठाकुर तुलसीदास के ईश
अधमन ने तो तुमको दयो स्वामी अधम उधारन नाम
अधम न होते अरे दुनियां में तो फिर किये कराते राम

14. हस्तलिखित प्रति यहीं तक मिलती है।

—528, Humboldt Street, Santa Rosa
C A 95404 U. S. A.

'आल्हा खण्ड' का अवधी पाठ

—डा० विद्याविन्दु सिंह

१

'आल्ह' के जितने पाठ मिलते है, उनमें भाषा के साथ ही साथ कथ्य में भी विविधता और अलग-अलग रंग है। जगनिक का 'आल्ह खंड' कितना लोकप्रिय था, इसका प्रमाण प्रस्तुत करते हैं ये विविध पाठ। यहाँ अवधी क्षेत्र में प्रचलित आल्हखण्ड का एक उदाहरण प्रस्तुत है—

सुमिरनौ : श्री गनेस सुमिरन करो जासो बुद्धि प्रकासा,
सिद्ध सदन गज बदन हो आहो विघ्न करिनासा ॥
अहो विघ्न करि नास हो हम पर अनुकूला।
हम पर होव सहाय मदा मंगल औ मूला।
कह गिरधर कविराय अहो बन्दों सब लायक।
हम पै होव सहाय सदा गिरजा गन नायक।
तुहरे सिउ कां सुर नर मुनि सब ध्यावैं।
नाना निगम पुरान बेद तुम्हरो जस गावैं ॥
अहो मात तुम अगम अखण्डी।
हम पै होव सहाय सदा गननायक औ चण्डी।
तोहि सुमिर जगदम्बिका करिहौं आल्ह खण्ड परकासा।
हम पै होय सहाय सदा करो बिघ्न कर नासा।

आल्हा : छूटि सुमिरनी गै देवन के सैरा सुनौ सूर वन क्यार।
पाँचों पण्डा पैदा होइगैं एहि कलियुग के बीच मझार।
कहौं लड़ाई माड़व गढ़ कै वीरो सुनि लौ कान लगाय।
भारत देस मां एक माड़व गढ़ है, जहँ लोहे क किला दिया बनाय।
तीन ओर से नदिया बहि जाय एक ओर बबूली वन परै देखाय।
दुश्मन जाय न पावैं माड़व मा, कोटिन कोटि करै उपाय।
गांव महोवा एक भारत मा जह मा बसे चन्देला राय।
ताकर लरिका ब्रह्मा, अभयी कहा सुनाय।

ताही घर में जैसराज और बच्छराज ने दरबानी लियो लिखाय।
आल्ह रूदल ताकै लरिकै औ मोहवा में कहा सुनाय।
एक समय के अवसर मा माड़व गढ़ से करिया चढ़्यो फौज बनाय।
सोवत बान्ह्यो जैसराज औ बच्छराज कां औ मोहवा लियो लुटाय।
जैसराज औ बच्छराज को जियतै हाथी पै लियो बिठाय।
लैके चला गयो माड़व मा देंहियां कोल्हू मा दियो पेराय।
खोपड़ी काट लियो ठकुरन कै औ बरगद मा दियो टंगाय।
खोपड़ी झूल रही बरगद मा कौआ टोड़ मार रहि जाय।
ओहि समया ओहि अवसर मा आल्हा बाल परयो देखाय।
रूदल ठाकुर थे पेटे मा उनका देवला लिहिन बचाय।
कुछ दिन गुजरि गयो मोहबा मा मोहबा रह्यो सनाका छाय।
हिम्मत नाय पुरवै केहु ठकुरे कै कि माड़व में लेय बाप कै दाँव।
बारह साल बीत गयो मोहबा मा मोहबा रहयो सनाका छाय।
सोलह साल कै आल्हा होइगै बारह क रहयो उदय सिंह राय।
साथे घूमें चन्देला के औ जंगल के बीच मझाय।
करन सिकार जाय चन्देला साथे आल्हा, उदल का लियो लेवाय।
कुछ दिन बीत गये मोहबा मा, आल्हा उदल भयौ हुसियार।
केहू-केहू से रूदल सुनि लेंय कि तेरो बाप को मार्‍यो करिंगा राय।
उदल सोचें अपने मन माँ कैसा करिया, कैसा माड़व कहवाँ बसा
माड़वर गाँव।
मन मा सोचै आल्हा उदल कब लै लेई बाप कै दाँव।
एक दिन बोले चन्देला से दादा सुनौ हमारी बात।
करन सिकार हम दोनों भैया जाबै संग मां फौज का लेब लेवाय।
बोला चन्देला तब उदल से भैया सुनौ हमारी बात।
थोरी उमिरिया कै रूदल हैं मुँह से चुवै दूध की धार।
करन सिकार के लायक तुम नाहि हो इतनी मानौ हमारी बात।
हाथ जोरि के रूदल बोलैं दादा सुन्यों हमारी बात।
बारह बरिस ले कुकुर जिएँ औ तेरह ले जिएँ सियार।
बरिस अट्ठारह छत्री जियैं आगे जीवन का धिक्कार।
छत्री होइके धर मा मरि जाय तौ रौरवा नरक होई जाय।
छत्री जूझे खेते मा साका रहै देस मा छाय।
करनि सिकार का हम जाबै दादा सुनौ हमारी बात।

कहा चन्देला तब रूदल से रूदल सुनौ हमारी बात ।
तीन दिशा मा तूं भलि जाया दखिन दिसा मा जाया नाय ।
अहिसन कहिके बोला चन्देला तब रूदल का सुनौ हवाल ।
जौनै कहबा तौनै करबै अपने मन कै करैया नाय ।
हुकुम पाइ गयौ चन्देला कै आपन डंका दिह्यौ बजाय ।
हाथ जोड़िके रूदल बोलै बड़कै भैया गोल बनांव ।
हमहूँ तूहूँ चलब सिकार का औ जल्दी से होव तैयार ।
एक घोड़ा पर आल्हा चढ़िगै औ दूसरे पै चढ़े उदय सिंह राय ।
कूच कराय दिह्यौ मोहबा से औ सिकार का भयो तैयार ।
रूदल सोचा मन अपने मा औ आगा पीछा किया विचार ।
दक्खिन दिसा का दादा रोकैं औ दखिन का होब तैयार ।
दक्खिन दिसा मा खेलब सिकार यू ही मन मा कियों विचार ।
सात कोस का धावा मार्यो औ उरई मा विराज्यौ जाय ।
उरई देस आहै माहिल कै ओ ताही मा पहुँच्यो जाय ।
बना बगीचा रहा माहिल कै चौतरफा से बेर्ह लगाय ।
फाटक बना रहै उत्तर मा तापर रह्यो चौकीदार ।
रूदल पहुंच गयौ फाटक पर औ नौकर से कहा पुकार ।
फाटक खोल देब एठबर पै एतनी मानौ कही हमार ।
बगिया देखबै हम माहिल कै एतना मानों कही हमार ।
हाथ जोरि के नौकर बोला ठाकुर सुनौ हमारी बात ।
हुकुम नाय बा माहिल सिंह कै, केहु बगिया मा हल्यो अनारि ।
इतना बात सुना रूदल ने औ मन के बीच लियौ ठहराय ।
रूदल का घोड़ा परधारी है ता से सोच्यौ उदय सिंह राय ।
घोड़ा उड़ाय देयँ ऊपर काँ औ बगिया मा विराज्यो जाय ।
दीन इसारा पर धारी का अम्मर पँख दीन फहराय ।
सुम्म दवया लीन छाती मा ऊपर उड़यौ बछेड़ा जाय ।
सीधे उड़िकै आसमान से औ बगिया में विराज्यो जाय ।
सागर बना रहै बगिया मा तापर जुट्यो उदय सिंह राय ।
घोड़ा लैके सागर मा हलिगयौ सागरौ पानी दिह्यौ मथाय ।
तौ कै निकारि पर्यो बहिरे काँ कपड़ा बदल्यौ उदय सिंह राय ।
घोड़ा बांध दिह्यौ बगिया मा धनुप बान का लिह्यौ उठाय ।
हरिनी मिरगा रहैं बगिया में ताकर करिने लगा सिकार ।
हरिना मिरगा वहुको मार्यो औ बगिया में कीन्ह चिग्घार ।

बोला सिपाही तब बगिया के कहना मान लेव चौहान ।
सीधे चला जाव बगिया से नाही तौ अड़बंग बात होइ जाय ।
खबर जनाइब जौ माहिल का जियरा परे सकेते जाय ।
मूड़ काट लेंय तोहरो ठाकुर औ जियते ना पड़बो जाय ।
यह कारन से समझाइत हैं डेरा कूच देव करवाय ।
यतनी बात सुना रूदल ने औ नौकर से कहा सुनाय ।
सीधे चला जाव माहिल लग अब ना तनिको देर लगाव ।
खबर जनाय देव माहिल का मन के मंसा लेव मिटाय ।
इतनी बात सुना नौकर ने आप कूच दिह्यौ करवाय ।
कूद बछेड़ा पै चढ़ि बैठा लै के रामचन्द्र जी का नांव ।
डेढ़ कोस के धावा दइके उरई जुटा बराबर जाय ।
जेह पर फाटक मालिक सिंह के नौकर अटा बराबर जाय ।
घोड़ा से उतरि के भुईं का होइगै घोड़ा थाम लिह्यौ थमवार ।
मोही महल से शीश महल माँगै औ पहुँचा रंग महल माँ जाय ।
जहाँ दरबार रहा माहिल के नौकर जुटा बराबर जाय ।
कहीं तैयारी जौ बंगला के बरनत ढेर बेर होइ जाय ।
मजा चुनरमी कै अइहैं ना जेहि विधि जूमि चलै तलवार ।
सात हाथ से लिखा लपेटा आगे हाथ जोरि भै ठाढ़ ।
नरम जबानी नौकर बोलै सून ला दीन बन्धु महराज ।
घूमि गरदना गै माहिल कै औ नौकर पर परी निगाह ।
डांट जबानी माहिल बोला नौकर सूनी हमारी बात ।
बगिया छोड़ि के कैसे आया सच्ची बात देव बतलाय ।
बोला सिपाही तब माहिल से राजा सुनौ हमारी बात ।
न जानी कहाँ से ठाकुर दुई आये दूनौ घोड़े पर असवार ।
उनका घोड़ा परधारी है उनका पंख दिहे भगवान ।
भई तकरारें अब फाटक पर बोला फाटक देव खोलाय ।
फाटक हम ना खोला बगिया कै और हमसे कीन टकरार ।
घोड़ा उड़ाय दीन फाटक से बगिया में जुट्यौ बराबर जाय ।
पानी मथि डार्यौ सागर के औ जीव जन्तु गये घबराय ।
जबरन कीन शिकार वहि बगिया मा बहु मिरगा का दियो मराय ।
खबर सुनावन हम आयन हैं राजन सुनौ हमारी बात ।

जरिकै माहिल रावट होइगै सिकुड़ा पर्‌यो माथ पर जाय ।
बगले बैठि रह्यो लड़िका जाकर अभयी नांव धराय ।
डांट जबानी कहा अभयी से अभयी सुनौ हमारी बात ।
सीधे चला जाव बगिया का अब ना तनिको देर लगाव ।
मुसुक बँधाव लेव पाजिन कै हमरी नजर गुजार्‌यो लाय ।
इतनी बात सुना अभयी ने अच्छा कह्यो मुजाका नाय ।
दीन सलामी बादसाह से आपन कूँच देत करवाय ।
दस हजार पल्टन का लैके आपन फौज दिह्‌यो सजवाय ।
कूच कराय दिह्यो उरई से बगिया धुरा दबायो जाय ।
फौजें घुस गई अब बगिया में अभयी कह्यों पुकार-पुकार ।
गोला दै दो मोरे तोपन मा इन पा जिन का दिह्‌यो उड़ाय ।
लिहे लुकाठा सोहदै घूमें तोपिन मा आग लगावैं जाय ।
अरे-रे-अ-रे-रे गोला दमकै जोजन अ-रे-रे सहा ना जाय ।
जीव जन्तु सब ऊबन लागें वानर पँछी गयो घबड़ाय ।
सुना हवालि बध रूदल कै अब बिन कहे रहा ना जाय ।
पीठ ठोक दिह्यो पर धारी कै अम्मर पंखा दिह्‌यो फैलाय ।
सुम्म दबाय लिह्यो छाती मा आधे सरग गह्यो मेड़राय ।
ना भुई उतरैं न सरगै जावैं जैसे कला कबूतर खाय ।
सवा घडी भर गोला दमका वहि बगिया के वीच मझार ।
मार बंद होइगें गोला ओहि बगिया के बीच मझार ।
अभयी देखें न ठकुरन के अभयी करैं कौन मनसाय ।
अभयी बोलै फिर नौकर से नौकर सुनौ हमारी बात ।
डरि के मारा भागि गै सारे औ नजरन न परें देखाय ।
बात कहत मा देरि लागि गै रूदल जुटत देरि ना लाग ।
इतने में रूदल दाखिल होइगै वोहि बगिया के बीच मझार ।
अल्हा रूदल दोनों भैया बगिया किहे चिघार-चिघार ।
पानी तमाली जैसे कतरैं जैसे खेती तुलै किसान ।
उदल उतरै रण खेते मा केतनौ का मारि करै खरिहान ।
उत्तर से पहूंटा दक्खिन होइ जाय औ पूरब से पच्छिम होइ जाय ।
मारै औ ललकारै मोहवा वाले गोल बनाय ।
सवा पहर भर चली सिरोही सागर रक्तन से भरि जाय ।
हाथ जोरि के अभयी बोलैं नौकर चाकर का मारो ना ।
ए हल्के से दाम विकाय ।

मार हमारी तुम्हरी है दोनों बरन चलै तलवार ।
अब मन भयो रूदल के अच्छा कह्यो मुजाका नाय ।
जहाँ अड़ावर है अभयी कै रूदल जुट्यो बराबर जाय ।
धै ललकार कह्यो अभयी से अभयी सुनौ हमारी बात ।
कौने कारन बगिया आया एकर मरम देव बतलाय ।
अभयी बोल्यों तब रूदल से कहा से ठाकुर चल्यो बनाय ।
गाँव तुम्हारा है कहवां पै औ केकर तूं लाल कहाव ।
काव नाव तोहरो है ठाकुर हमका साफ देव बतलाय ।
रूदल बोल्यो तब अभयी से ठाकुर सुनौ हमारी बात ।
गाँव हमार गढ़ महोबा है जैसराज कै लाल कहाव ।
नाँव हमार बध रूदल है याकौ तो हैं देवैं बतलाय ।
इतनी बात सुना अभयी ने खोपड़ी गयो सनाका खाय ।
धिरका तोहरी रजपूती का औ पगिया बाम्हन का धिक्कार ।
पहिले दाँव लेता बापे कै तब बगिया मा करो सिकार ।
जेकरै बाप का दुश्मन मारै लड़िका देख-देख रहि जाय ।
वाकरे जन्में का धिरगा है नहकै जनम दैय करतार ।
तोहरे बाप का करिया मारिन गढ़ माड़न के बीच मझार ।
लास पेराय दीन कोल्हू मा खोपड़ी बरगद दीन टंगाय ।
गीध चील्ह सरगे मा उड़ि जाय खोपड़ी मा मेंड़ लगावैं जाय ।
यहि कारन से समझाइत है एतनी सुनो हमारी बात ।
एतना सुनतै परलै होइगै मन मा गयो सनाका खाय ।
पानी लै लीनौ सगरा कै रूदल कसम लियो उठाय ।
बाप दांव जब तक लेवैं नांय हम ना करव अन्न जलपान ।

—उ० प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उ० प्र०

- गायक—श्री रामकरन दूबे, ग्राम-साहनवाजपुर, पोस्ट-दर्शन नगर, जिला-फैजाबाद ।
- संकलनकर्ता—श्री अशोककुमार सिंह ।

महोबा का राजकवि जगनिक भाट

—जयसिंह

⊙

[श्री जयसिंह आल्हा की महोबा-गायकी के प्रभावी गायक हैं और रासो परम्परा के पक्षधर। उनकी मान्यताएँ अपनी हैं और इस लेख में स्पष्टतः दी गयी हैं। उन पर विद्वानों को विचार करना चाहिए। अल्हैत आल्हा की मौखिक परम्परा के जानकार हैं, अतएव उनकी धारणाओं से आल्हा के रचयिता और आल्ह खण्ड को समझने में मदद मिलेगी। इस लेख में पति और विरतिया दो शब्द आए हैं, जिन्हें लेखक ने स्पष्ट नहीं किया है। "परिपूरन परमाल के यह 'पत' रक्खनहार" पाठ उचित है। पति की जगह 'पत' सही है, जिसका अर्थ है प्रतिष्ठा। इसी तरह 'विरतिया' बुन्देली शब्द है, जो 'वृत्ति' लेने वाले के लिये प्रयुक्त होता है। लेखक की मान्यता है कि आल्ह खण्ड बुन्देली और बनाफरी भाषा में नहीं लिखा गया, वरन् मुगलकाल में किसी कवि ने ही कोरी कल्पना से आल्ह खण्ड की रचना की है। इस मत से सहमति या असहमति पर बहस मुमकिन है। लेखक द्वारा संकेतित चरखारी नरेश गंगासिंह द्वारा प्रकाशित आल्हा जिगनी के कविवर देशराज की रचना है, जो बहुत पुरानी न होकर 19वीं शती की है। उसके पहले की कृति शीबू दा का आल्हा है। और भी कृतियाँ प्राप्त हुई हैं। सबका अनुशीलन जरूरी है। मामुलिया सजग है, ऐसे लेखों का स्वागत करेगी। — सम्पादक]

इतिहासकारों और विद्वानों के बीच आल्हखण्ड की खोज सैकड़ों वर्षों से एक विषम चर्चा का विषय बनी हुई है। आल्ह खण्ड की खोज तो दूर रही, रचयिता के नाम, ग्राम, जाति पर भी विद्वानों को भ्रान्ति है। विद्वानों ने जगन, जागन, जग, जगनिक, जगनक, जगमणि, जगनायक आदि नामों से प्रस्तुत किया है। भले ही शोधकर्ताओं ने भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा हो, लेकिन यह नाम पृथ्वीराज रासो, परमाल रासो, वीर विलास, बलभद्र विलास में कई बार आये हैं। ये नाम एक ही नाम 'जगनिक' के विविध रूप हैं जो

एक ही नाम का भाव प्रदर्शित करते हैं। लेखकों और कवियों ने काव्यदृष्टि से नामाक्षरों में हेर-फेर कर दिया है। आदि ग्रंथों से लेकर अब तक न तो कहीं देखने, सुनने और अध्ययन को ही मिला कि आल्ह खण्ड के रचयिता जगमणि, जगन या जागन थे। यदि अवलोकन और अध्ययन करने को मिला तो यही कि आल्ह खण्ड का रचयिता महाकवि जगनिक राजा परमर्दि-देव या राजा परमाल चन्देल का दरबारी कवि, मंत्री, दिव्यास्त्रों से सुसज्जित चतुर सेनापति, मादन का सुपुत्र, जाति का भाट था।

किसी देश, व्यक्ति, जाति का इतिहास, प्राचीन लेख, अभिलेख, सिक्का, मुद्रा, प्राचीन इमारतें, खण्डहर, मंदिर आदि विदेशी यात्रियों व लेखकों के विवरण से ही जाना जा सकता है। हमारे बीच ऐसी बहुत सी कृतियाँ हैं जो अपने ढंग से साक्ष्य एवं प्रमाण प्रस्तुत कर रही हैं। आदि ग्रंथों के सहारे ही शोध, नयी खोज विद्वान लोग प्रस्तुत करने में सक्षम रहे हैं। जगनिक के राजकवि होने में किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं है। प्रमाण पृथ्वीराज रासो, परमाल रासो में स्पष्ट मिल रहे हैं। यथा—

> तब कविराज बुल्य बरबानी। पाण्डवान की कथा बखानी ॥
> देव दनुज नर-देव को इनको चलन बखानि।
> जगनायक कविराज कहि, इहि कव चित्र न मानि ॥

पृथ्वीराज रासो में स्वयं पृथ्वीराज के कवि चन्द्रवरदायी ने ही जगनायक को कवि कहकर कई बार सम्बोधित किया है—

> बरदाई इमि उच्चरे, सुनि पृथ्वीराज नरेश।
> तीन फतेह कवि राज को, दीन्ही बिहँसि महेश ॥

इसी बात की पुष्टि वीरविलास भी कर रहा है—

> धाये तुरन्त निःशंक बंक दै हंक हाथ किरपान लिये।
> काटी तुरन्त कवि की कमान अस्त्रों शस्त्रों को तान लिये ॥

पृथ्वीराज रासो व परमाल रासो इस बात का पूर्व साक्ष्य प्रकट करते हैं कि जगनिक ग्राम घटहरी का निवासी था। आल्हा, ऊदल और मलखान की माँ ग्राम घटहरी की थीं। ग्राम घटहरी महोबा के पूर्व में कुछ मीलों की दूरी पर जिला छतरपुर (म० प्र०) में स्थित है। इस ग्राम के समीप एक पहाड़ी है जिसके ऊपर एक तालाब है जो देवै तालाब के नाम से आज भी प्रसिद्ध है। वहीं पर एक मठ है जो चंदेली इतिहास का गौरव लिये खड़ा है। यथा—

ग्राम घटहरी पट धरो, द्वि दुर्गा हो आन।
जेठी देवै कुंवर है, लहुरी श्री जस खान॥
अल्ह उद् धां कोख से, मारुत भीम समान।
भैरव श्री जसखान के, भये भूप मलखान॥
तीनों सुत जुग बहिन के, बिकम बली अपार।
परिपूरण परिमाल के, यह पति रखनहार॥
जगनिक ताही गाँव को, वैस वृन्त अनुरक्त।
स्वाभिधर्म हित तात सो, कटो दिवल के मत्त॥

वह किसी अन्य ग्राम या जगनेरी का नहीं था। अपने सुदृढ़ अस्तित्व से ही महोबा के अन्तर्गत जगनेरी नाम का मुहल्ला बसाये होगा जैसे कि आजकल कस्बों और शहरों में किसी-किसी के नाम के मुहल्ले हैं। सैकड़ों वर्षों से परम्परागत गाये हुये बुन्देलखण्ड के अल्हैतों द्वारा आल्हा मनउवा के कुछ अंशों से स्पष्ट हो रहा है कि—

मल्हना बोली तब बान्दी से, बान्दी मोरे सामने आव।
बेग चली जा जगनेरी लौं, जगनायक का आव लिवाय॥
हुकुम पाय कैं अब रानी का, बान्दी दीन कूंच करवाय।
थोड़ी देर के रे अरसा मां, जगनेरी मां जुमकी जाय॥
जहं लाग दरीबा जगनायक का, वहं बान्दी कैं गरद उड़ाय।
तीन कोनिश बारा मुजरा, बांदी झुककर करो सलाम।
तुम्है बुलावो है रानी ने, जल्दी चला हमारे साथ॥
इतना सुन कैं जगनिक चल भे, औ महलन की पकरी राह।
घड़ी न बीती न पल बीतो, पहुँचो राजमहल मां जाय॥

महारानी के आदेश से बांदी का जगनेरी जाना और वहाँ से तत्काल जगनिक को साथ लेकर राजमहल में उपस्थित कर देना, से पूर्णतया स्पष्ट है कि वह जनपद आगरा व फतेहपुर के किसी भी ग्राम जगनेरी का नहीं था। महोबा में ही एक मुहाल था। जगनिक के नाम, निवास को समझ लेने के बाद अब उसकी जाति को समझें—तो वह जाति का भाट था। सभी प्राचीन कृतियों में उसे भाट कहकर ही सम्बोधित किया गया है। जिस समय आल्हा-ऊदल जोगियों का भेष करके कजली महोत्सव पर करियापाठे में पड़े, रानी मल्हना ने जगनिक को आदेश दिया कि यह छल है कि वास्तव में योगी है, वैसा पता लगाकर मुझे सूचना दो। लेकिन जगनिक और जल्हन

जब किसी निर्णय पर न पहुँचे कि कौन जाये तो रानी ने पुनः संकेत किया कि ब्रह्मा चला जाय। तब जगनिक ने कहा (पृथ्वीराज रासो से)—

तबै भट्ट बोल्यो सुनो राजरानी। लसै राज सीशम बड़ी राजधानी।
चलै ब्रह्म कैसे सो यह कल्ल होई। चलै संग हमहू सुनी बैन सोई।

दूसरा प्रमाण वीरविलास से मिल रहा है। जिस समय जगनिक कन्नौज जा रहा है, उस समय माहिल के पत्र को पाकर मंत्री चन्द्रवरदाई पृथ्वीराज चौहान को मंत्रणा दे रहा है कि—

यदपि अश्व मिलबो कठिन, रुकै न जगनिक भाट।
कर प्रयाग देखो सबै, रोको बसौट बाट॥

तीसरा प्रमाण परमाल रासो से—

हिरन आगरे पर चढ़ लिन्यो, जगनिक भाट बिदा तब किन्यो।

जब जगनिक कन्नौज पहुँचता है और आल्हा से महोबा चलने के लिये कहता है, तब आल्हा उत्तर देता है—

जगनिक भाट अबै घर जाहू। नगर महोबा लगै अबाहू॥

परम्परागत बुन्देलखंड के सभी अल्हैत जगनिक को विरतिया राव कह कर गाते हैं। विरतिया कहीं-कहीं भाट को भी कहते हैं। जिस समय महारानी मल्हना मनियां देवता के पूजन को चलीं उस समय चौड़ा ने धांधू से पूछा कि डोला के आगे पीछे कौन-कौन वीर आ रहे हैं। तब धांधू ने उत्तर दिया कि—

डोला के आगे जो घोडा है, घोड़ा ब्रह्मजीत को आय।
डोला के पीछे जो घोड़ा है, घोड़ा आय विरतिया क्यार॥
जगनिक जल्हन बाप पूत हैं, ये हैं भाट महोबे क्यार।
जितनी जागा लड़ै मा पाई, या बैनामा लई कराय॥
ब्रह्मा भाग जई म्वहरा म्वहरा, न छाड़ी विरतिया राय॥

उसकी जाति, मातृभूमि, निवास और कवि होने का दावा प्राचीन कृतियों ने कर दिया और अब विचार करके देखिये कि क्या जगनिक मन्त्री था? तो प्राचीन लेखों से ज्ञात होता है कि जगनिक मन्त्री भी था। जिस समय रानी मल्हना ने बाँदी को भेजकर जगनिक को कन्नौज जाने के लिये बुलाया, जगनिक के आने पर महारानी कहती है—

तुम रहे मन्त्रिवादी हमेश, दशराज संग जीते स्वदेश,
अब रहे कहाँ धौं साध मौन, यह जान जाय कारन्न कौन।
तब जगनिक कहे बैन राजरानी सुन लीजै,
भूप मंत्र नहि मान कहो कवनी विध कीजै।

इसी बात की पुष्टि परमाल रासो ने भी की है—

जगनिक भाट कायथ कल्यान, बहु मंत्रिश्च गा बुल्लय जुवान।

जगनिक साधारण सूरवीरों में नहीं था। जहाँ आल्हा, ऊदल, मलखान का नाम सूरवीरों में आता है, वहीं जगनिक भी सूरों की गणना में आता है। क्योंकि पृथ्वीराज रासो में चन्द्र कवि ने उसे सूर कहकर पुकारा है। चन्देल के सामन्तों में चार ही सूर थे—

चार सूर बलवान चन्द्रकुल राज धरन धर।
मलक्खान, जगनिक्क, आल्ह-ऊदल कारनकर॥

जगनायक राजा परमर्दिदेव परमाल का भांजा नहीं था। ग्राम घटहरी जगनिक का जन्म स्थान होने के कारण आल्हा-ऊदल उसे मामा कहकर सम्बोधित करते थे। क्योंकि आल्हा-ऊदल का ममयारा ग्राम घटहरी था। जिस समय आल्हा को मनाने हेतु जगनिक चन्द्रावति दुर्ग पहुँचा, जिसे रिजगिरि कहते हैं, जगनिक को देखकर ऊदल कहता है (प्रमाण वीरविलास से)—

बंगला ऊँचे ऊदल बैठ तो देखो धौं असवार कहाँ को।
जैसे उड़े मुरवा-तुरवा लख आतुर ह्वै घुड़वा नर नाको॥
दुरबीन दै दृग देखन लगो सुख भौ जिय में मुख देखो ममा को।
राजा दयो हर नागर क्यों ब्रह्मा को कटार अपार जमा को॥

दूसरा प्रमाण पृथ्वीराज व परमाल रासो से एक साथ—

बलि विक्रम मम भुल्लिया, असि बधन्त उर लज्ज।
मातुल अब ना पाँ धरौ, नगर महोबे कज्ज॥

जगनायक चतुर सेनापति था और उसे दिव्यास्त्र व वरदान प्राप्त थे। कीरतसागर के भयंकर संग्राम में सेनापति का सम्पूर्ण कार्यभार कवि जगनिक को ही सौंपा गया (पृथ्वीराज रासो से)—

ब्रह्म कहै जगनिक से सजग करो सब काम।
यथायोग आयसु दई गयो आपने धाम॥
जगनिक राय बुलाइयो सब सांवथ बलवीर।
गेर शहर कर मोरचा संग लेव बहु भीर॥

देवी हरसिद्धि, भरथरी और भगवान शंकर से तीन वरदान उज्जैन में संदीपन गुरु के आश्रम पर तपस्या करके प्राप्त किये थे, जिनका चन्द्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो में वर्णन किया है—

बरदाई इमि उच्चरे सुन प्रथिराज नरेश।
तीन फतेह कवि राज को दीन्ही विहँसि महेश॥
देवी हरसिद्धि दयो, प्रथम जीत को बोल।
द्वितीय भर्थरी ने दियो, तृतिय शंम्भु द्रग खोल॥
इकसत बावन वर्ष की दीन्ही उम्र महान।
नागफनी डमरू दई बाल्या तरुण समान॥
दानव दैत्यन सन रनै, देवन मंडै रार।
जब लगि अरि इक को हनै, तब लग हनै हजार॥

इसी बात को परमाल रासो में भी अवलोकन करिये—

अर्ध्य वर्ष उज्जैन रहि, संदीपन स्थान।
उर्ध्व तुण्ड करि जपि सुकरि, अलि किन्निव बलवान॥
पूरन जप कविराज किय, तन मन अति सुख पाय।
बहु पवित्र दरसन दये, शंकर जी तब आय॥
नागफनी डमरू दई, अरु दिन्निव बरदान।
तृतिय बार जो रन जुरै, अंतक होय पलान॥
फेर दरस भरथरिय नृप, दये जगन जन जान।
तृतिय बार साफल्य हुव, वन्हि बाज दिय बान॥
अस्त्र शस्त्र का भरथरी, दिय वरदान अपार।
जब लगि अरि इक उग्गवै, तब लग हनै हजार॥

अंतिम समय तक जगनिक के हाथों सेनापतित्त्व का भार रहा। जिस समय युद्ध स्थल में जगनिक की कृपाण चमकी, उस समय पृथ्वीराज चौहान के सूर सामन्त कह उठे—

सब सावंत पृथिराज के, सरन गये अकुलाय।
जगनायक पावक भयो, जोधा देत जराय॥—(पृथ्वीराज रासो से)
भरथरी दीन्ह सो मंत्र लीन्ह पढ़ि वन्हि बान सिधिन सु दीन।
छुट्टिव सुजूह ज्वाला उड़ाय सिन्धव सुलगि सिंधुर जराय॥
—(परमाल रासो से)

लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुआ। चन्द्रगुरु राम सहित पृथ्वीराज चौहान व सभी सामन्तों ने जगनिक की वन्दना की। (पृथ्वीराज रासो व परमाल रासो से)—

जगनायक की आप गुरु स्तुति करी विशाल।
विक्रम करि भुवभीम सम, कट्टे करी कराल॥
सत्य सत्य गुरु चन्द कहि, लखि विक्रम रन चाय।
रुप्या भीम अरजुन्न सम, धन्य धन्य कवि राय॥
धन्य भाग चौहान तुम्हारे, तिन प्रताप मादन सुत मारे।
बिन सिर हने हजार भट, स्वामि धर्म मन लाय॥
जगनिक भाट विमान चढ़ि, चल्यो सु सुरपुर जाय॥

आल्ह खण्ड

राम काल से लेकर कृष्ण काल एवं वीर गाथा काल तक अपनी भारतीय भाषा संस्कृत रही। पाणिनी के समय में संस्कृत और भी विलष्ट हो गयी थी। वीर गाथा काल में दो कवि हुये--एक दिल्ली दरबार में, दूसरा महोबा दरबार में दिल्ली पति सम्राट पृथ्वीराज चौहान के यहाँ चन्द्रबरदाई भाट और महोबा के परमालदेव चन्देल के यहाँ जनकवि जगनिक भाट। कुछ विद्वानों का मत है कि हिन्दी का जन्मदाता चन्द्रबरदाई है जिसने संस्कृत और टूटी-फूटी हिन्दी को जन्म देकर डिंगल भाषा में पृथ्वीराज रासो की रचना की। लेकिन कुछ विद्वानों का मत है कि जनकवि जगनिक हिन्दी का जन्मदाता है जिसने वीर गाथा काल में आल्ह खण्ड लिखा है। यद्यपि आल्ह खण्ड उपलब्ध नहीं है। आल्ह खण्ड कैसा है ? कहाँ है ? कैसा होगा ? इस जानकारी से विद्वान लोग सहस्त्रों कोस दूर हैं, लेकिन इस बात से दूर नहीं हैं कि जगनिक चन्द्रबरदाई का समकालीन कवि था। चन्द्रकृत पृथ्वीराज रासो की हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हैं। अब गहराई के साथ बिना किसी पक्षपात के यह अनुमान लगा लेना उचित है कि जब उसी समय के एक कवि का काव्य उपलब्ध है, तो दूसरे कवि का काव्य कैसा और किस भाषा में होगा—ऐसा समझ लेने में फिर कोई कठिनाई नहीं होगी। क्योंकि ऐसा मानना भी कठिन है कि चन्द्रबरदाई के दो-तीन सौ वर्ष बाद जगनिक ने आल्ह खण्ड लिखा हो या जगनिक के दो-तीन सौ वर्ष बाद चन्द्र ने पृथ्वीराज रासो लिखा हो। यदि ऐसा समझ लिया जाय तो दोनों के समय और उम्र में बहुत बड़ी भिन्नता होगी। जो आज के जैसे वैज्ञानिक युग में किसी कवि

की दो तीन सौ वर्ष उम्र नहीं मानी जा सकती, भले ही जगनिक ने पहले आल्ह खण्ड लिखा हो, लेकिन उसकी भाषा पृथ्वीराज रासो की जैसी होगी क्योंकि उस समय बुन्देली और बनाफरी भाषा बिलकुल नहीं थी, जो आजकल के प्रकाशित आल्ह खण्ड में पायी जाती है। जगनिक हिन्दी का जन्मदाता तो कहा जा सकता है, लेकिन बुन्देली व बनाफरी भाषा का नहीं, क्योंकि ऐसी कोई भाषा नहीं थी। किसी भाषा को जन्म देकर तत्काल उसे चरम स्तर तक पहुँचाना, तीन चार सौ वर्ष पुरानी या नवीन करना कठिनाई की बात है। यदि सर इलियट द्वारा तर्जुमा करवाया गया और मुंशी रामस्वरूप द्वारा प्रकाशित एवं अन्य लेखकों के प्रचलित और प्रकाशित आल्हा को आल्ह खण्ड मान लिया जाये तो विद्वानों की बहुत बड़ी भ्रान्ति होगी क्योंकि विद्वान शोधकर्ता बार-बार इसी आल्ह खण्ड की पंक्तियों को लिखकर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। विद्वानों ने परमाल रासो का समय 16वीं सदी, वीरविलास का 17वीं और बलभद्र विलास का 18वीं सदी के आस-पास माना है। यदि प्रचलित और प्रकाशित आल्ह खण्ड को 12वीं सदी की जगनिक की मूलप्रति मान लिया जाये तो उपर्युक्त प्राचीन कृतियों में समस्त आधार पात्र, सूर सामन्त, वाहन, सम्मत, सन, समय एक जैसे होते और स्वाभाविक ही इन कृतियों के लेखक सम्पूर्ण स्तम्भ इस आल्ह खण्ड को मानते। इस आल्ह खण्ड के लेखक से प्रतीत होता है कि चन्देल दरबार के वास्तविक सभी सूर सामन्तों और वाहनों से अनभिज्ञ था, जिसने सम्पूर्ण विवरण के साथ उल्लेख नहीं किया। उसी दरबार का कवि हो, इतिहास व पात्रों की जानकारी न हो, ऐसा कैसे सम्भव हो सकता है। यदि कुछ विवरण दिया है तो केवल युवराज और राजाओं को छोड़कर कल्पना और व्यर्थ की बातों की भरमार की अधिकता है। जबकि विपक्ष के कवि चन्द्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो में चन्देल के सभी सूर सामन्तों की जाति और नाम का विवरण देते हुये मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है जैसे कल्यान राव, सुर्खीराव, बसन्तराव, पुरोहित केशवराय, सिया, सीहां, बच्छराज, देवकुंवर, ईश्वरदास लोधी, चक्रपाणि डोंगर, दऊवा, भारामल, जल्हन, मन्ना गूजर, छत्रसाल वगैरह।

परमाल रासो, वीरविलास, भद्रविलास में भी सभी सामन्तों का विवरण पृथ्वीराज रासो जैसा मिल रहा है। इस आल्ह खण्ड में न तो अंश, वंश, सम्वत, का कहीं क्रमबद्ध उल्लेख है। चन्द्र ने विविध प्रकार के छन्दों को पृथ्वीराज रासो में प्रयोग किया है। जैसे—चौपाई, दोहा, सोरठा, रोला, छप्पय, छन्द, भुजंगी, नगपाल, नीसानी, पद्धरी, मोतीदाम, रसावला,

चन्द्रायन, हनूफाल, अरिल्ल, कुण्डलियाँ, श्लोक, छायाकुल, त्रृभंगी, मधुभार, निशानी, त्रोटक, नाराच, गाथा पाधरी, गीतापति मालती, नराज, राजगति, उत्फाल, मायाकगति चावन्तराज, तोटक, रसाव, निशान, तोमर आदि ।

12वीं सदीं से लेकर 16वीं सदी तक इस प्रकार के छन्दों की भरमार, रही और सभी कवियों ने इस प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया । गोस्वामी तुलसीदास व केशवदास जी ने भी अपने समय में इस प्रकार के बहुत से छन्दों को लिखा । ऐसी स्थिति में यह कैसे कहा जा सकता है कि जगनिक का आल्ह खण्ड बुन्देली और बनाफरी भापा का होगा । यदि जगनिक का काव्य बुन्देली और बनाफरी भाषा में होता, तो इसी सदी में कोई न कोई कवि इसी भापा में कोई न कोई काव्य अवश्य लिखता । क्योंकि भावभापा की नकल क्रमशः कवि लोग एक दूसरे की करते आये हैं । बहुत समय के बाद भी बनाफरी व बुन्देली भापा में निखार आया होगा । उसी समय किसी कवि ने कुछ कोरी कल्पना से इस बनाफरी भापा में मुगलकालीन समय पर काव्य लिखकर "आल्ह खण्ड" नाम रखा होगा । आल्हा के नाम पर ही आल्हा की रचना हुई है । इस प्रकाशित आल्ह खण्ड में कहीं भी आल्हा की वीरता-बहादुरी की प्रसंशा लेखक ने विधिवत नहीं की है, जबकि उसे कई संग्राम लड़ने पड़े । बिना आल्हा के युद्ध किये किसी भी संग्राम में विजय पाना कठिन था । पठानों से आल्हा को युद्ध करना पड़ा, उसका विवरण कहीं भी नहीं है, जबकि परमाल रासो व पृथ्वीराज रासो में इसका पूर्ण विवरण मिलता है ।

मुगलकालीन सम्राटों के समय अपनी बहुत सी कृतियाँ नष्ट-भ्रष्ट एवं लुप्त हो गयीं । इससे प्रतीत होता है कि प्रचलित और प्रकाशित आल्ह खण्ड का लेखक वास्तविकता से दूर भागने के प्रयास में रहा है । इस तरह की भापा और काव्य की कृतियाँ बहुत-सी हैं । जैसे पृथ्वीराज रासो का आधार लेकर किसी कवि ने चरखारी नरेश महाराज गंगासिंह को इसी बनाफरी और बुन्देली भापा में काव्य लिखकर समर्पित किया है । उस प्रति को मैंने देखा, जो बहुत ही पुरानी कृति है । रायनपुर पुस्तकालय, चरखारी में वह अब भी रखी है ।

बुन्देलखण्ड के गायकों की परम्परा ऐतिहासिक स्तम्भ में सम्मिलित है । सैकड़ों वर्षों से अपनी परम्परानुसार आज भी गा रहे हैं । इन गायकों की गायकी में बहुत बड़ा तथ्य और तत्व है । विवाहों एवं अन्य युद्धों का

इतिहास इस आल्ह खण्ड से बहुत कुछ भिन्न है । यदि बुन्देलखण्ड के जानकार अल्हैतों से जानकारी की जाय तो वास्तविकता की झलक मिल सकती है । अप्रासांगिक और प्रकाशित आल्ह खण्ड को जगनिक की मूल प्रति मान लेना विद्वानों की बहुत बड़ी भूल होगी । हिन्दी का जन्मदाता आल्ह खण्ड का रचयिता और जन-जन का प्रिय जनकवि जगनिक जन-जन के हृदय में समाया हुआ है । बुन्देलखण्ड के उच्च कवि के मस्तक पर कपोलकल्पित और अप्रासंगिक काव्य गढ़ देना कहाँ तक उचित है ?

जगनिक राज सम्मानित कवि था । वह कहीं गाँव-गाँव, द्वार-द्वार जाकर अपने काव्य का प्रचार न करता रहा होगा, इसलिये पूर्ण प्रयास से किसी प्रकार खोज करके जगनिक की मूल प्रति जनप्रिय जगनिक के हाथों में सौंप देना ही उचित है । आल्हा प्रतियोगिताओं का हाल तो यह है कि 'आंधर राजा बहिर पतुरिया, नाचे रौह परतीतैं है ।'

—बिढ़ोखर, हमीरपुर, उ० प्र०

आल्हा का महोबा

—श्रीकृष्ण चौरसिया

विन्ध्य पर्वत मालाओं एवं सुरम्य सरोवरों की नैसर्गिक सुषमा से परिपूर्ण महोबा-हमीरपुर जनपद का एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। त्रेता व द्वापर युग में इसके नाम केकयपुर व रतनपुर आदि कहे गये हैं। यह भी मान्यता है कि चित्रकूट के लगभग 12 वर्षीय वनवास काल में—इस क्षेत्र का विचरण करते हुये भगवान राम ने इस नगरी को भी अपने चरण कमलों से पवित्र किया था और स्थानीय गोरखगिरि (गोखार) पर्वत स्थित सीता रसोई गुफा व रामकुण्ड में उनके आगमन के पावन चिन्हावशेष हैं।

चेदि, मौर्य, शुंग एवं गुप्तकाल तथा परवर्ती मध्ययुग में प्रतिहारों के बाद महोबा का उत्थान-पतन चन्देल राजपूतों के गौरवशाली इतिहास से संबद्ध रहा है। चन्देलवंश के संस्थापक नान्नुक देव अथवा चन्द्रवर्मन ने महोबा के तत्कालीन प्रतिहार शासकों पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में लगभग 831 ई० में इसे अपनी मूल राजधानी बनाया और शक्तिपूजा की प्रतीक श्री बड़ी चण्डिका जी की 'महिषासुर मर्दिनी' रूप की 18 भुजी प्रतिमा की स्थापना कराई एवं इसे 'महोत्सव नगर' का नाम दिया। नान्नुक ने धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप अपनी राजधानी महोबा की सीमा-सुरक्षा हेतु चारों दिशाओं में सर्वरक्षिणी देवी चौमुण्डा की मूर्तियों की भी स्थापना कराई। इनमें उत्तरी दिशा की चौमुण्डा मूर्ति चौंसठ भुजी होने के कारण सारे भारत में विशिष्ट हैं। परमाल रासो के अनुसार महोबा लगभग 400 वर्षों तक चन्देलों द्वारा स्थापित जैजाकभुक्ति प्रदेश (वर्तमान बुन्देलखण्ड) की राजधानी रहा। समीप स्थित कालिंजर दुर्ग उनका सैनिक केन्द्र तथा खजुराहो उनकी बैठक या धार्मिक केन्द्र के रूप में विकसित हुये।

चन्देलों की राजधानी रहे होने के कारण महोबा उनके राजत्वकाल में निर्मित अनेक दर्शनीय स्मारकों एवं सरोवरों से परिपूर्ण है। तथापि महोबा की कीर्ति का सर्वाधिक प्रचार अन्तिम प्रमुख चन्देल शासक परमाल के राज-

कवि 'जगनिक' द्वारा रचित लोक-काव्य 'आल्ह-खण्ड' के कारण हुआ जिसमें वर्णित यहाँ के रणबांकुरे वीर आल्हा-ऊदल की ओजस्वी शौर्य गाथायें देश के हिन्दी भाषी क्षेत्रों में विशेषतया वर्षाऋतु में गांव-गांव गाई जाती है और प्रारम्भिक हिन्दी लोक-काव्य की अमूल्य निधि हैं। कदाचित रामचरित मानस के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में आल्ह-खण्ड ही सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला ग्रन्थ है। अपनी सहज, सुगम, ओजपूर्ण भाषा एवं कल्पना व 'मिथिक' युक्त वर्णन के कारण आल्ह-खण्ड 'चन्दवरदायी' रचित 'पृथ्वीराज रासो' से कहीं अधिक लोकप्रिय हो गया है। हाल के वर्षों में अनेक विदेशी विद्वानों ने आल्ह-खण्ड में विशेष रुचि ली और इस पर शोध कार्य कर रहे हैं।

चन्देल शासक हिन्दू सनातन धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे। उनके द्वारा महोबा क्षेत्र में बनवाये गये शैव, वैष्णव व शाक्त मान्यताओं के देव-स्थान व ग्रेनाइट शिलाखण्डों पर निर्मित देव मूर्तियाँ चारों ओर पाई जाती हैं। चन्देल तत्कालीन जैन, बौद्ध तथा मुस्लिम—सभी धर्मों के प्रति उदार रहे एवं उनके राजत्वकाल में अन्य धर्मों के स्मारक भी यहाँ निर्मित हुये। यद्यपि समय, काल और मानव आघातों ने बहुत कुछ नष्ट कर दिया है।

राहिलदेव, कीर्तिवर्मन, मदन वर्मन तथा परमार्दिदेव (परमाल) के राजत्वकाल में महोबा अपने वैभव के सर्वोच्च शिखर पर था। कीर्तिवर्मन के समय (1060-1100 ई०) में यहाँ कला व साहित्य के क्षेत्र में अपूर्व उन्नति हुई। उनके राजकवि कृष्ण मिश्रा रचित विख्यात प्रतीकात्मक संस्कृत नाटक "प्रबोध-चन्द्रोदय" नाट्य साहित्य की अनुपम कृति है। इसी काल में "सर्व-शिल्प विद्याकुशल" छितांक या चित्तनक द्वारा निर्मित सिंहनाद लोकेश्वर आदि बौद्ध प्रतिमायें चन्देल कालीन मूर्तिकला के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। बाद के ऐतिहासिक तथ्य यह दुखद सत्य भी इंगित करते हैं कि अन्तिम प्रमुख शासक परमाल की अदूरदर्शिता के कारण चन्देलवंश का पराभव हुआ और आल्हा, ऊदल, मलखान, सुलखान जैसे पराक्रमी वीरों की सैनिक प्रतिभाओं का दुरूपयोग राजपूतों के आपस के निरर्थक युद्धों में हुआ। अपने ही सम्बन्धी दिल्लीपति पृथ्वीराज चौहान से लड़ा। वर्ष 1182 व 1183 का दुर्भाग्यपूर्ण युद्ध इसका शोचनीय उदाहरण है।

महोबा के प्राचीन वैभव का वर्णन परमाल रासो तथा प्राचीन जैन ग्रंथ प्रबन्धकोश में उपलब्ध है। इनमें महोबा के सुन्दर राजमहलों, देवालयों, सरोवरों व मनोरम वाटिकाओं का प्रभावशाली वर्णन है। दो उदाहरण निम्नांकित है—

1. "जैसे इन्द्रपुरी मनभावनि, सब सुख खानि लेउ पहिचान,
तैसइ धन्य धरणि महुबेकी, भट निर्मोह बीर की खानि,
कंचन भवन विविध रंग रचना, अद्भुत इन्द्र मनोहर जाल,
रत्न जटित सिंहासन शोभित, तापर न्याय करें परिमाल।
—(आल्हाखण्ड)

2. तस्य पुरं खुल नित्यं पश्यति, सोऽपि वर्णयितु न पारयति,
केवल पश्यन्नन्तमनसं मूक इव स्वादं तद्गुणं जानति।
—(प्रबन्ध कोश)

भावार्थ : महोबा नगर का नित्य अवलोकन करने वाला भी गूंगे मनुष्य की भांति इसके सौन्दर्य व विशेषता को अन्तर्मन से अनुभव तो कर सकता है पर इसका वर्णन नहीं कर सकता।

परमाल रासो-अनुसार महोबा का प्राचीन आकार लगभग 12 कोस (35 कि०मी०) के घेरे में था जो 52 उपनगरों में फैला हुआ था। सम्भवतः इसी ऐतिहासिक आधार पर उत्तर प्रदेश शासन के आवास विभाग ने समीपस्थ 16 ग्रामों समेत महोबा के सुनियोजित विकास हेतु वर्ष 1978 से इसे विनियमित क्षेत्र घोषित किया है तथा खजुराहो पर्यटन केन्द्र की भांति महोबा नगर के भावी विकास की महायोजना (मास्टर प्लान) भी स्वीकृत की है। नगर की बढ़ती हुई आवासीय आवश्यकताओं की आपूर्ति हेतु केन्द्र सरकार ने इसे एक करोड़ रुपये की एकीकृत नगर-विकास-योजना हेतु चयनित किया है तथा नवनिर्मित चरखारी बाई-पास मार्ग पर आवास-विकास तथा आधुनिक सुविधायुक्त मण्डी-स्थल निर्माण की योजनायें भी प्रस्तावित हैं। महोबा नगर के पर्यावरण सुधार, पहाड़ियों से भूक्षरण-रोकथाम तथा मदन सागर से प्राप्त पेयजल प्रदूषण के निवारण की एक वृहत योजना भी प्रदेश सरकार से कार्यान्वयन की प्रतीक्षा में है।

पर्यटन विभाग की अपने महोबा स्थित आवासगृह के साथ यहाँ रुपये 40-70 लाख के अतिरिक्त व्यय से विभिन्न पर्यटन सुविधाओं के विकास की योजना है। इसके अन्तर्गत यहाँ के चन्देलकालीन स्मारकों की मरम्मत, एक पुरातत्व संग्रहालय व पुस्तकालय स्थापना, दर्शनीय स्मारकों के लिये पहुँच-मार्ग, प्रमुख सरोवरों में नौकायन व पक्षी-विहार तथा महत्वपूर्ण गोरखगिरि (गोखार पहाड़) पर कैम्पिंग साइट्स आदि की स्थापना प्रस्तावित है। फिलहाल आयुक्त महोदय, झांसी मण्डल के आदेश पर जिला विकास योजना से

वन विभाग द्वारा महोबा के सर्वोत्तम विजय सागर (बीजानगर) में शोभाकार वनीकरण, मृगदाव व सिनि-जू, बच्चों का पार्क तथा नौका विहार हेतु "बोट क्लब व वाटर-स्पोर्ट्स सेन्टर" स्थापित किये जा रहे हैं जो स्थानीय लोगों के अतिरिक्त महोबा-खजुराहो भ्रमण पर आने वाले देशी-विदेशी पर्यटकों के लिये अतिरिक्त आकर्षण होंगे।

अन्य विशेषताओं के अतिरिक्त महोबा अपने सुस्वादु देशी या दिसावरी प्रजाति के पानों के लिये भी देश-विदेश में विख्यात है। ऐसी मान्यता है कि नवीं शताब्दी में प्रथम चन्देल शासक नान्नुक या चन्द्रवर्मन के उदयपुर राजस्थान से पान-बेल व इसके उत्पादक किसानों को यहाँ आमंत्रित कर उस समय राज-दरबारों व धार्मिक अनुष्ठानों के लिये विशेष आवश्यक "नाग-बेल" का उत्पादन यहाँ प्रारम्भ कराया था। स्थानीय गोखार पहाड़ के पश्चिमी छोर पर एक ग्रेनाइट मठ में "शिव" की नागों से युक्त एक अस्पष्ट सी मूर्ति है जहाँ नागपंचमी पर्व पर हर वर्ष पान उत्पादक किसान (बरई-चौरसिया आदि) पूजन-अर्चन करते हैं। कहा जाता है कि महोबा में सबसे प्रथम पान की खेती इसी स्थान से प्रारम्भ हुई थी। महोबा में पान-कृषि को विभिन्न पादप रोगों से बचाने व आधुनिक विज्ञान की सहायता से इसकी खेती का आधुनिकीकरण करने हेतु राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ तथा प्रदेशीय उद्यान विभाग ने यहाँ विकास प्लान की सहायता से शोध केन्द्र भी स्थापित किये हैं जिनके प्रयासों से पान उत्पादन में वृद्धि व किसानों को लाभ हो रहा है।

अन्त में महोबा के चन्देलकालीन दर्शनीय स्थलों का विवरण इस प्रकार है :—

1. श्री बड़ी चन्द्रिका (चण्डिका) देवी :

प्रथम चन्देल शासक नान्नुक या चन्द्रवर्मन द्वारा वर्ष 831 ईस्वी में लगभग 12×9 फुट की ग्रेनाइट शिला पर उत्कीर्ण "महिषासुर-मर्दिनी" रूप की 18 भुजी देवी दुर्गा की यह मूर्ति कला सौष्ठव में भव्य व प्रभावशाली है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार यह एक सिद्ध देवीपीठ है। इसके प्रांगण में ग्रेनाइट की एक सुगढ़ शिव मुखाकृति तथा मध्य युग में धार्मिक आचार्यों द्वारा हिन्दू एकता हेतु प्रतिपादित पांच देवताओं यथा--गणेश, सूर्य, विष्णु, तथा देवी की समन्वित पूजा की प्रतीक पंचदेव-स्मार्त लिंग चौकी स्थापित है। मन्दिर के बाहर ग्रेनाइट शिलाओं पर स्त्री, पुरुष, सूर्य, चन्द्र तथा आशीर्वाद

मुद्रा में हस्त चिन्ह युक्त सात सती चिन्ह भी अंकित हैं पर इनमें कोई शिला-
लेख नही है। मुख्य सड़क से मन्दिर व पीछे जैन मूर्ति क्षेत्र तक पहुँचने के
लिये एक 'एसफाल्टेड'' पक्के मार्ग-निर्माण की आवश्यकता है। साथ ही
मन्दिर क्षेत्र के आस-पास 300 मीटर क्षेत्र के नव आवासीय निर्माण न होने
दिया जाये।

2. चौबीस जैन तीर्थंकर मूर्तियाँ :

बड़ी चन्द्रिका मन्दिर के पीछे स्थित पहाड़ी पर 24 जैन तीर्थंकरों की
मूर्तियाँ उकेरी हुई है। शिलालेखों के अनुसार ये 1149 ईस्वी में निर्मित
हुई। यहीं 3 मान स्तम्भ व 2 सर्वतोभद्र स्तम्भ भी पाये गये है जिनसे
प्रतीत होता है कि 12वी शताब्दी में यह जैन अतिशय क्षेत्र रहा होगा। ये
पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित हैं।

पहाड़ी के उत्तर में ग्रेनाइट गुफाओं का कण्ठेश्वर महादेव नामक एक
आकर्षक गुफा मन्दिर भी है।

3. आल्हा की लाट (आल्हा गिल्ली) :

इसी क्षेत्र में मुहल्ला भटीपुरा में मदनताल के पूर्वी छोर पर ग्रेनाइट का
गोल व ऊपर कुछ नोकदार एक विजय स्तम्भ है। पुरातत्व विभाग द्वारा ये
संरक्षित घोषित है तथापि नगरपालिका द्वारा इस क्षेत्र की गन्दगी समाप्त
करने हेतु एक पार्क-निर्माण तथा पहुँच-मार्ग की आवश्यकता है। संलग्न
आबादी में शिला पर ''चन्द्र मतावर'' (चन्दू मतवारा) नामक अश्वारोही की
मूर्ति अंकित है जिसे विवाह अवसरों पर हिन्दू व मुस्लिम स्त्रियाँ समान रूप
से तेल चढ़ा कर पूजती थीं।

4. ककरामठ शिव मन्दिर व मंझारी दीप ध्वस्त देवालय के भग्नावशेष तथा 6 हस्ति प्रतिमायें :

चन्देल शासक मदनवर्मन द्वारा लगभग वर्ष 1128 ईस्वी में निर्मित
मदनसागर सरोवर के मध्य उक्त त्रिभुजाकार शैली का ग्रेनाइट शिव मन्दिर
व हस्ति प्रतिमायें दर्शनीय हैं। ककरामठ ग्रेनाइट के 103 फीट × 42 फीट
आधार पर निर्मित हैं। कनिंघम ने अपने सर्वेक्षण में इसे शिव मन्दिर माना
है। यद्यपि अब वहाँ कोई शिवमूर्ति नहीं है।

समीप ही मंझारी द्वीप पर किसी यज्ञशाला या ध्वस्त मन्दिर के भग्ना-
वशेष है व ग्रेनाइट शिला-खण्डों के बीच तीन दिशाओं में 6 बलुआ पत्थर

की अलंकृत जीवाकार हस्ति प्रतिमायें स्थित हैं। अनुमान है कि कि ये संख्या
में 8 होंगे और अष्टादिक पाल के प्रतीकरूप में स्थापित किये गये होंगे।
इस द्वीप से सागर के उत्तरी बाँध तक एक सम्पर्क मार्ग (काज़ वे) है जो वर्ष
के अधिकांश भाग में जलमग्न रहता है।

5. श्री छोटी चन्द्रिका (चण्डिका) देवी :

मदनसागर के दक्षिण-पश्चिमी किनारे पर गोखार पहाड़ के नीचे छोटी
चन्द्रिका जी का विशाल वाटिका प्रांगण युक्त मन्दिर है। देवी की मूल
ग्रेनाइट मूर्ति क्षरित हो जाने पर श्रद्धालु लोगों ने वहाँ सीमेन्ट की दुर्गामूर्ति
बनवा दी है। अनेक सती चिन्हावशेष भी यहाँ शिलाओं पर अंकित हैं।
समीप ही काली देवी व ''सांकरे मनेह'' के देव स्थान है। इन सभी मन्दिरों
का निर्माण लगभग सौ वर्ष पूर्व तक स्थानीय दानवीर सेठ श्री मिट्ठू पुरवार
द्वारा कराया गया था, किन्तु समुचित रख-रखाव के अभाव में अब ये जीर्ण
हो रहे हैं।

छोटी चन्द्रिका मार्ग के समीप मदनसागर ''एस्केप'' के पश्चिमी छोर
पर ''कजरियों के युद्ध'' में शहीद हुये महोबा के वीर अभई व रन्जित के
के स्मारक चबूतरे हैं जिन पर श्रद्धालु स्त्रियाँ जल चढ़ाती है।

6. मनियाँदेव, परमाल महल के भग्नावशेष व ध्वस्त चंदेल दुर्ग :

मदनसागर सरोवर के उत्तरी तट बाँध की पहाड़ी पर ध्वस्त किले व
परमाल के महल के भग्नावशेष की पाद भूमि पर आल्हा-ऊदल के सम्मानित
मनियाँदेव का देव स्थान है। मूर्ति लगभग आकृतिहीन है पर ऐतिहासिक व
धार्मिक रूप से इसका विशेष महत्व है। चन्देलवंश की कुल देवी ''मनियाँ-
देवी'' का स्थान खजुराहो के आगे केन नदी के किनारे मनियाँगढ़ में विद्यमान
है। सम्भवतः मनियाँदेव की यहाँ स्थापना चन्देलों ने अपने कुल देवता के रूप
में कराई होगी।

मनियाँदेव मन्दिर के ऊपर पहाड़ी पर परमाल महल के भग्नावशेषों पर
जल संस्थान का जलाशय व अन्य भवन निर्मित हो गये हैं तथापि उत्तरी
छोर पर ध्वस्त चन्देल दुर्ग के बुर्ज, प्राचीर तथा भैंसासुर दरवाजा अभी
अवशेष हैं। 1202 ईस्वी के कुतुबद्दीन ऐबक के हमले में इस दुर्ग को सर्वा-
धिक क्षति हुई थी। पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित ये सभी व्यापक मरम्मत
की प्रतीक्षा में हैं। मन्दिर के सामने ग्रेनाइट का 18 फुट ऊँचा 1½ फुट घेर का
शिरोभाग में अलंकृत द्वीप स्तम्भ है जिसे यहाँ दीवट कहते हैं। प्राचीन दुर्ग

के पश्चिमी भाग पर सरोवर तट के समानान्तर, लगभग 6 एकड़ भूमि पर नगरपालिका ने नेहरू जी के नाम पर एक पार्क निर्मित कराया है। जिससे इस क्षेत्र की सुन्दरता में अभिवृद्धि हुई है। सरोवर में नगरपालिका द्वारा नौका विहार की सुविधा उपलब्ध कराना अपेक्षित है।

7. दरगाह पीर मुबारक शाह और तुगलक-कालीन मस्जिद :

मदनसागर तट बाँध के किनारे –किला मिस्मार के दक्षिण में अरब देश से 13वीं सदी के मध्य आये विख्यात मुस्लिम संत पीर मुबारिक शाह की दरगाह है। तत्कालीन चन्देल शासक राजा कीरत सिंह ने उनकी सिद्धियों व चमत्कारों से प्रभावित होकर उन्हें 500 एकड़ से भी अधिक कृषि भूमि "माफी" के रूप में प्रदान की थी। किले के भैंसासुर दरवाजे के नीचे शाह गयासुद्दीन तुगलक के सरदार मुहम्मद अहमद द्वारा चन्देल भवन पर वर्ष 722 हिज़री (1322 ई०) में बनवाई ऐतिहासिक महत्व की जामा मस्जिद है। इसके द्वार पर लगे फारसी शिलालेख में इसके निर्माण का विवरण उभरे हुये अक्षरों में अंकित है।

अन्य प्रमुख मुस्लिम स्मारकों में यहाँ रेल्वे स्टेशन के समीप ऐतिहासिक "करिया पठवा" के नीचे 13वीं सदी के सैनिक फकीर हजरत मलिकहसन शाह का मजार व सुदूर दक्षिण-पश्चिम की एक पहाड़ी पर जिकरिया पीर की दरगाह है।

8. गजान्तक शिव तथा पठवा के बाल हनुमान आदि :

मदनसागर के पश्चिम में गोरखगिरि की उत्तरी पाद भूमि पर एक ग्रेनाइट शिला पर 11वीं सदी में निर्मित भगवान शिव की—महाकाल मुद्रा में नृत्यरत् 10 भुजी गजान्तक प्रतिमा है जिसे यहाँ "शिव ताण्डव" कहते हैं। वास्तव में यह कूर्मपुराण के गजासुर वध कथानक के आधार पर निर्मित है। दक्षिण में ऐलोरा, हैलिविड, दारासुरम आदि में गजासुर/अन्धकासुर वध की अनेक प्रतिमायें हैं, किन्तु उत्तर में महोबा में यह एक अनूठी प्रतिमा है। शिव के प्रमुख गण "काल भैरव" की एक ग्रेनाइट मूर्ति भी समीप स्थित है।

समीप ही एक पृथक मन्दिर में हनुमान की बालरूप में एक सुन्दर प्रतिमा है। दक्षिण मुखी होने से इसे विशेष धार्मिक मान्यता प्राप्त है। मन्दिर की सीढ़ियों से संलग्न एक ग्रेनाइट शिला पर शिव परिवार की 5 दर्शनीय प्रतिमायें हैं। पश्चिम में रहलिया की ओर गोखार पहाड़ की एक शिला पर नाथ सम्प्रदाय से प्रभावित एक नृत्यरत् स्त्री से वैराग्य मुद्रा में विदा ले रहे पुरुष

की व समीप ही चट्टान पर "पशुपतिनाथ" शिव की अत्यन्त प्राचीन प्रतिमायें हैं।

9. कीरत सागर सरोवर :

प्रमुख चन्देल शासक कीर्तिवर्मन द्वारा वर्ष 1060 ई० में निर्मित इस सरोवर का महोबा के इतिहास से विशेष सम्बन्ध है। तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा, कमल पुष्प आच्छादित इसकी जलराशि तथा पूरब में इसके सुडौल ग्रेनाइट प्रस्तर घाट एक मनोरम दृश्य का सृजन करते हैं। वर्ष 1182 ई० में दिल्लीपति पृथ्वीराज चौहान द्वारा राजा परमाल की रानी मल्हना के कजली पर्व के जुलूस पर आक्रमण व उस एक दिवसीय युद्ध में वीर आल्हा, ऊदल के पराक्रम से महोबा को मिली विजय की स्मृति में बुन्देलखंड का विख्यात कजली मेला हर वर्ष रक्षाबन्धन के अगले दिन इसी सरोवर तट पर आयोजित होता है। सरोवर क्षेत्र में "आल्हा" बारादरी, उत्तरी पहाड़ी पर आल्हा-ऊदल के सैनिक गुरू ताला सैयद की कब्र व देवा की चौकी आदि अनेक ऐतिहासिक अवशेष अब भी स्थित हैं।

10. बौद्ध धर्म के चिन्हावशेष :

बुन्देलखण्ड में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित बहुत कम मूर्तियां प्राप्त हैं तथापि कीर्तिवर्मन के समय में निर्मित कीरत सागर सरोवर के समीप 'आल्हा का अखाड़ा' नामक टीले से वर्ष 1912 ई० के आसपास बलुआ पत्थर की सिंहनाद लोकेश्वर, पद्मपाणि व तारादेवी आदि की अपूर्व सुन्दर मूर्तियाँ प्राप्त हुई थीं। ये उत्कृष्ट कला कृतियाँ राज्य पुरातत्व संग्रहालय लखनऊ व झाँसी में प्रदर्शित हैं। सिंहनाद लोकेश्वर प्रतिमा के चित्र पर भारत व अन्य देशों द्वारा डाक टिकट भी जारी हो चुके हैं। इन विशिष्ट प्रतिमाओं के कारण महोबा नगर ने कला व पुरातत्व के क्षेत्र में विशेष गौरव व अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है।

11. विजय सागर सरोवर :

महोबा नगर के पूरब में लगभग 5 कि० मी० दूर कानपुर-सागर मार्ग पर, चन्देल शासक विजयपाल वर्मन द्वारा वर्ष 1035 ई० में निर्मित यह सरोवर यहाँ सभी चन्देली सरोवरों में विशाल तथा नैसर्गिक सुषमा में अपूर्व है। वर्ष 1909 ई० में जिला गजेटियर में इसे उत्तर-प्रदेश की सुन्दरतम झीलों में कहा गया है। आयुक्त, झांसी मण्डल की प्रेरणा से जिला प्रशासन,

वन एवं सिचाई-विभाग के सहयोग से यहाँ मृगदाव, बालक्रीड़ा केन्द्र, नौका विहार व वाटर स्पोर्ट केन्द्र तथा शोभाकार वृक्षारोपण आदि विकास कार्य करा रहा है। सरोवर के उत्तर-पश्चिमी छिछले भाग में वन-विभाग द्वारा 'पक्षी विहार केन्द्र' भी स्थापित करने की योजना है।

सरोवर बाँध के पूरबी छोर पर 17वीं शताब्दी के वीर छत्रसाल के पुत्र दीवान मोहन सिंह द्वारा निर्मित एक गढ़ी के ध्वस्तावशेष है जिनकी मरम्मत अपेक्षित है।

12. दिसरापुर सरोवर :

विजय सागर के उत्तर में कानपुर-सागर मार्ग के पास दिसरापुर सरोवर वीर आल्हा-उदल के पिता दस्सराज तथा मलखान-सुलखान के पिता बच्छराज से सम्बन्धित होने के कारण ऐतिहासिक महत्व का है। अन्तिम प्रमुख चन्देल परमाल ने दस्सराज-बच्छराज के शौर्य से प्रभावित होकर इन्हें बक्सर से बुलाकर अपना सेनापति नियुक्त किया था एवं उन्हें आस-पास के 10 लघु ग्राम (पुरवा) माफी में प्रदान किये थे। माड़ों के राजकुमार करिंगाराय ने महोबा को लूटने के उद्देश्य से रात्रि में आक्रमण कर दस्सराज-बच्छराज की यहाँ उनके आवासरों में सोते समय हत्या कर दी थी। बाद को वयस्क होने पर वीर आल्हा-ऊदल आदि ने अपने पराक्रम से अत्यन्त दुर्गम माड़ौगढ़ के दुर्ग को विजित करके अपना बदला लिया था। आल्हा-खण्ड में इस युद्ध का विस्तार से वर्णन है।

13. कल्याण सागर सरोवर क्षेत्र :

राजा परमाल के बाद 13वीं सदी के मध्य में हुये 23वें चन्देल शासक वीर वर्मन ने अपनी रानी कल्याण देवी के नाम पर इस लघु सरोवर का निर्माण कराया था। वर्षा ऋतु में मदन सागर के पूरबी एस्केप व सुदूर विजय सागर के बीच यह सम्पर्क सरोवर का काम देता है। इसके आस-पास भी कुछ प्रमुख दर्शनीय स्थल यथा—सिंह भवानी, भरवंशीय राजा कीरतपाल के चौदह पुत्रों की रानियों के सती चबूतरे (चौथराना), चौमुण्डा शिला व पहाड़ी पर स्थित सिद्ध शैव स्थल वनखण्डेश्वर आदि हैं। वनखण्डेश्वर मन्दिर व इसकी सीढ़ियों का निर्माण लगभग एक सदी पूर्व यहाँ के प्रसिद्ध नायक परिवार द्वारा कराया गया था।

14. सूर्य मन्दिर व सूरजकुण्ड :

महोबा के दक्षिण-पश्चिम में लगभग 3 किलोमीटर दूर रहिलिया ग्राम में 5वें चन्देल शासक राहिलदेव वर्मन द्वारा 890 ई० में निर्मित ग्रेनाइट पाषाणों का सूर्य मन्दिर अत्यन्त प्रभावशाली स्थापत्य का नमूना है, किन्तु काल-समय के आघातों ने इसका अधिकांश भाग क्षतिग्रस्त कर दिया है। इसकी प्रारम्भिक मरम्मत विख्यात पुरान्वेषी मेजर जनरल कनिंघम के वर्ष 1843 ई० के सर्वेक्षण पर हुई थी पर अब इसका दक्षिण भारतीय शिल्पियों द्वारा सम्पूर्ण जीर्णोद्धार आवश्यक है। मन्दिर से संलग्न राहिल सागर व सूरज कुण्ड हैं, जहाँ कार्तिक पूर्णमासी को हर वर्ष धार्मिक मेला लगता है।

वर्ष 1972 में मन्दिर के समीप एक गड्ढे से सूर्य व विष्णु की सुन्दर कलात्मक मूर्तियाँ प्राप्त हुई थीं, जो ग्राम में ही स्थापित कर दी गई। पुरातत्व विभाग के सर्वेक्षण के बावजूद इन कलाकृतियों को सुरक्षित रखने का प्रबन्ध नहीं किया गया फलस्वरूप वर्ष 1984 ईस्वी में विष्णु जी की मूर्ति चोरी हो गई। बाद को वर्ष 1985 ई० में सूर्य प्रतिमा की अपूर्व सुन्दर मुखाकृति गर्दन से तराश कर गायब कर दी गई जिसका अभी तक कोई पता नहीं चल सका है। इन कलाकृतियों की चोरी से महोबा की पुरासम्पदा की अपूर्व क्षति हुई है। स्थानीय नागरिकों ने शासन से इस क्षेत्र में यत्र-तत्र बिखरी पड़ी पुरासम्पदा के संरक्षण व सुरक्षा हेतु नगरपालिका के सहयोग से महोबा में लघु संग्रहालय स्थापित करने की मांग की है।

15. गोरखगिरि (गोखार पहाड़) :

लगभग 270 एकड़ क्षेत्र के इस ग्रेनाइट पर्वत समूह का विशेष धार्मिक व ऐतिहासिक महत्व है। अपनी अन्धेरी-उजेली गुफाओं, घाटियों, झरनों तथा मर्गन-टौंगा जैसे दुर्गम शिखरों के कारण वर्षा ऋतु में यह सैलानियों का प्रिय भ्रमण स्थल (पिकनिक केन्द्र) बन जाता है। वीर 'आल्हा-ऊदल' के आराध्य एवं नाथ सम्प्रदाय के प्रणेता गुरु गोरखनाथ व उनके सातवें शिष्य सिद्ध दीपकनाथ का यह पर्वत तपस्थली रहा है। त्रेतायुग में यहाँ भगवान राम के वनवासकालीन परिभ्रमण से सम्बन्धित सीता रसोई गुफा व पवित्र रामकुण्ड भी इसी पर्वत में स्थित है। वन-विभाग द्वारा इसके सघन वनीकरण से इसमें उगने वाली आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों की उन्नति हेतु घाटियों में वर्षा जल संरक्षण के लिये 'चेक डैम' निर्माण की भी योजना है।

16. हवेली दरवाजा शहीद स्थल :

ब्रिटिश राज के विरूद्ध 1857 ई० की क्रान्ति में महोबा क्षेत्र के लोगों ने भी सक्रिय विद्रोह किया था। यहाँ के प्रबल विद्रोह के कारण तत्कालीन अंग्रेज मजिस्ट्रेट मि० कारने को रातों-रात भाग कर चरखारी राज्य में शरण लेनी पड़ी थी। बाद में जनरल व्हिटलॉक की सेनाओं ने यहाँ अंग्रेजी शासन पुनर्स्थापित किया और प्रतिशोध में अनेक विद्रोहियों को हवेली दरवाजे के मैदान में उस समय लगे पेड़ों पर फाँसी दी थी। उन अज्ञात शहीदों की स्मृति में यहाँ हर वर्ष कजली मेले के तीसरे दिन 'शहीद मेला' आयोजित होता है। इस स्थान पर एक स्मारक स्थापित करने की भी योजना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. जिला गजेटियर, हमीरपुर, वर्ष 1909 ई०।
2. दि अर्ली रूलर्स ऑफ खजुराहो (डॉ० एस० के० मित्रा)।
3. एनफेन्ट सिटी ऑफ महोबा (डॉ० आर० के० दीक्षित)।
4. दि ले ऑफ आल्हा (वाटर फील्ड व डॉ० ग्रियर्सन)।
5. आल्हा-खण्ड, बड़ा (द वेंकटेश्वर प्रेस)।

—पर्यटन एवं परिवहन विकास समिति,
महोबा (हमीरपुर), उ० प्र०

गुड़ानो चरित्र

—मूल : भवानी कवि, नैगवाँ
—सम्पादन एवं टिप्पणी : नर्मदा प्रसाद गुप्त

[प्रस्तुत रचना गया (बिहार) से प्रकाशित और लाला भगवान दीन द्वारा 'लक्ष्मी' मासिक पत्रिका के अप्रैल, 1909 ई० से ली गयी है। प्रकट है कि इसका रचना-काल 1909 ई० के पूर्व का है। रचना अपूर्ण है, अतएव पुरानी है। 'लक्ष्मी' के सम्पादक ने इसे कुछ संशोधन कर छापा है। क्योंकि दसा और देस की जगह दशा और देश शब्द रखे गये हैं। और भी कई भूलें हैं जैसे 'करवन' की जगह 'कर वन'। इस कारण रचना का सम्पादन दुबारा किया गया है और टिप्पणियाँ भी दी गयी हैं।—**नर्मदा प्रसाद गुप्त**]

चौपाई—दसा गुड़ाँने[1] की का कइये। देस देख मन में दै रइये[2]।
धरती है पतरौना[3] सोई। मोटो नाज[4] इतै नइँ होई ॥1

गाड़न[5] पथरा पुरे जहाँ ते। उपजै मोटो नाज कहाँ ते।
समाँ,[6] लठारा,[7] कुदवा[8] सोई। राली[9], कुटकी,[10] धान[11] जुहोई ॥2

तिली उर्द को है अधिकारा। नामी कहिये नाज लठारा।
दस पैला[12] जाके घर देखैं। साहूकार ताहि कर लेखैं ॥3

जाके है दस गौन[13] लठारा। सूझत नहीं कुटुम परिवारा।
ऐसे बनचर मानस सोई। दया धरम जानत नहिं कोई ॥4

दोहा—एक परदनी[14] में रहैं, जुरै न कुरती लौक[15]।
इतने पै टोपी दिये, करैं बड़ो ही सौक ॥1

---

1. गौंड़ > गौंड़वाना > गुड़ाना 2. मन में रखना 3. पथरीली 4. अनाज 5. गाड़ियों भर 6. एक विशेष प्रकार का चावल 7-8. विशेष प्रकार के मोटे अनाज 9-11. विशेष प्रकार के चावल 12-13. अनाज के पुराने माप—आठ चौंरी का एक पैला 14. धोती 15. तक।

चौपाई—बेर, मकुइयाँ, तेंदू[16] खावें। टुकना[17] भर भर घर को लावें।
धवा, खैर[18] की गादें सोई। कुछ खावें कछु बेंचें ओई ॥1

अरू कुल्ला[19] की गाद जो टोरें। नानी[20] कर कर चून[21] में घोरें।
ताते इनको करौं प्रसंगा। नेह न जान देस है नंगा।2

चैत मास महुआ जब आवें। लै टुकना बीनन को जावें।
महुआ चोंहें[22] सूकर[23] टोरें। अरू खपरा में डार अँकोरें[24] ॥3

महुअन संग चिरौंजी खावें। तब निज पूरब पुन्न सरावें[25]।
डुबरी[26] खांयें दूध के संगा। मानें आज अन्हाई गंगा ॥4.

दोहा—होत भोर महुआ भुंजें, दुपरै[27] डुबरी खायें।
ब्यारी में बिरचुन[28] घुरै, चाट-चूट पर रायँ[29] ॥2

चौपाई—महुआ कूटें लटा[30] बनावें। ताको खाय अधिक सुख पावें।
सब जुरमिल[31] जा करत बड़ाई। लटा समान चीज नहिं भाई।1

लगो असाढ़ बिछाये कमरा। मनो आयँ जनम के चमरा।
बिन चूना की खायँ तमाखू। जर्दा पियें जुरै न गुराखू ॥2

बाती दिया कबहुँ नहिं बारें। करत बिछौना लूघर[32] जारें।
एकै ठौर सबै पर सोवें। घर भर में जेते जन होवें ॥3

एक ओर कछु भैंसें बाँधी। एक ओर गैयाँ हैं धाँधी।
एक ओर कछु घास धरो है। बीचैं-बच्चा लये परो है ॥4

दोहा—गीली घास जराय कें, धुँवाँ करै अति जोर।
मसा डांस फटकार तैं, गई रात ह्वै भोर ॥3

---

16. तेंदू नामक विशेप वृक्ष के फल 17. टोकरा 18. वृक्षों के नाम 19. विशेप वृक्ष 20. महीन करते हुए 21. आटा 22. चूसें 23. महुआ के सफेद रंग से जुड़े पूँछ जैसे हिस्से को संभवतः सूकर कहते है, क्योंकि उसे तोड़कर महुआ चूसा जाता है 24. भूनें 25. सराहें 26. महुआ के बना विशेष भोजन, जो बुंदेलखण्ड में लोकप्रचलित है, 27. दोपहर 28. सूखे बेरों को पीस-छान कर बनाया चूर्ण (बर<बेरों का + चुन = चून = चूर्ण) 29. पड़ रहें 30. महुआ को कूट कर बनाया खाद्य विशेष 31. एक साथ 32. जलती लकड़ी।

बरसा ऋतु सब गत भई, अब ऋतु आई सर्द।[33]
मूंद खोल महुआ भुंजे, मुरका कीन्हो गर्द ॥4

सोरठा—भूंजो तिली मिलाय, और चिरौजी डार कें।
हींसा[34] दये लगाय, चौंरी दो के अटकरैं[35] ॥1

चौपाई–जब कातिक में रहँट चलावैं। बांध पुटरिया[36] लै लै जावें।
मुरका[37] खावैं पानी पीवैं। कछू दिनन येई में जीवैं ॥1

जौन[38] साल महुआ नईं आवें। तौन साल भूखन मर जावें।
महुआ खायँ जियें सब प्रानी। वेर मकुइयाँ राखें पानी ॥2

दोहा—तरकारी जब तब मिलै, नोन संग नित खायँ।
करबन[39] सें पानी पियें, फूले[40] न बदन समायं ॥5

चौपाई–कमरा ओढ़ें प्याँर[41] बिछावें। भरी सुपेती[42] कभउँ न पावें।
जुरै न मिरजाईं उर कुरता। करें रात हैं तापर सुरता[43] ॥1

ईसानगर सें चली बराता। महुआ तेन्दू बीनत खाता।
दो दो लटा पोटरा कांधें। बड़े खरच को[44] मुरका बांधें ॥2

धन धन दूला[45] तोरी सुघरी[46]। कुँवर कलेउ आई डुबरी।
महुआ दाख[47] खुरूरू[48] खरी। सो समधी के आगें धरी ॥3

---

33. शरद 34. हिस्से 35. दो चौंरी के अनुमान से 36. पोटरी या गठरी 37. महुओं को भून और कूटकर बनाया चूर्ण जो बुंदेलखण्ड का लोकप्रचलित खाद्य है 38. जिस 39. मिट्टी के छोटे लोटे, जिनमें टोंटी भी बनी रहती है 40. स्वस्थ या फूले हुए शरीर 41. बाजरा या कोदों से दाने निकल जाने पर बचा हुआ सूखा घास-पात या चारा 42. रजाई 43. उस पर अपनी सुरत या याद लगाये रहते हैं 44. कीमती 45. दूल्हा 46. सुन्दर घड़ी या समय 47. महुआ को बुंदेलखण्ड में दाख कहते हैं 48. गरी।

सियहिं झुलावहिं पिय कबहुं पियहिं झुलावहिं सोय

—मूल : वृषभानु कुंवरि
—टिप्पणी : डॉ० नर्मदा प्रसाद गुप्त

⊙

रामभक्ति की रसिक भावना के विकास में बुंदेलखण्ड का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह सही है कि राजस्थान में रसिक साधना का प्रवर्तन हुआ था, किन्तु उसका विकास और प्रसार बुंदेलखण्ड में ही हो सका। प्रमाण के लिए चित्रकूट का इतिहास देखा जा सकता है। महाकवि कालिदास के मेघदूत में चित्रकूट के रामगिरि आश्रम को एक प्रतिष्ठित राम-तीर्थ कहा गया है।[1] सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय की सुपुत्री एवं वाकाटक नरेश रूद्रसेन द्वितीय की राजमहिषी प्रभावती गुप्ता रामगिरि-स्वामिन् की उपासना करती थी। श्री सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य नाथमुनि (824-924 ई०) ने चित्रकूट तीर्थ के दर्शन किए थे।[2] रामानुजाचार्य (1016-1117 ई०) ने तो शैव नरेश से चित्रकूट का उद्धार किया था।[3] इन उल्लेखों से स्पष्ट है कि चित्र-कूट ईसा की तीसरी-चौथी शती से रामभक्ति का प्रमुख केन्द्र रहा है, लेकिन मुसलमानों के आक्रमण-काल में उसकी महत्ता और अधिक बढ़ गई। समतलीय भाग में स्थित अयोध्या जब विनष्ट कर दिया गया, तब पहाड़ी भाग में बसा और बुंदेलखण्ड के शक्तिशाली राजाओं से संरक्षित चित्रकूट रामभक्तों की प्रमुख साधनाभूमि हो गया। दूसरे, चित्रकूट-कालिंजर क्षेत्रों में रहने वाले राउत कलाप्रेमी थे। चंदेल-काल में राउतों ने तालाबों और मंदिरों का निर्माण करवाया था और राम सम्बन्धी लोकनाट्यों को अभिनीत करने में उनका योगदान बहुचर्चित था। चित्रकूट मे राम की लीलाओं पर आधृत लोकनाट्यों से प्रेरित होकर ही तुलसी के मन में रामचरितमानस की कल्पना उद्बुद्ध हुई होगी। इस तरह चित्रकूट राम की मर्यादावादी ऐश्वर्योपासना का पवित्र स्थल बना। वैष्णव भक्ति के श्री सम्प्रदाय ने चित्रकूट को मान्यता दी थी और रामावत सम्प्रदाय ने वहाँ प्रमुख पीठ स्थापित किया था। रसिक सम्प्रदाय में उसे सीताराम की विहार-भूमि माना गया और रामसखे, प्रेमसखी, कृपा-

निवास जैसे रसिक आचार्य एवं भक्त विभिन्न स्थानों से आकर वहीं से रसिक भावना का प्रसार करते रहे। इस कारण चित्रकूट रसिकोपासना का प्रमुख केन्द्र हो गया, जिससे पूरे बुंदेलखण्ड में रसिक भक्ति की भावमयी धारा प्रवाहित हुई।

बुंदेलखण्ड में रसिक भक्ति का विकास कब से हुआ है, यह खोज करना कठिन है, लेकिन रसिक काव्य के विकास के आधार पर उसका अनुमान लगाया जा सकता है। डॉ० भगवती प्रसाद सिंह ने ओरछा के मधुर अली को रसिक भक्तकवि माना है और उसका समय 1558 ई० बताया है।[4] इससे स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में कम से कम 16वीं शती के प्रथम चरण में रसिक भक्ति का प्रसार था, जबकि रसिक भक्ति का प्रवर्तन उन्होंने अग्रदास-कृत 'ध्यान-मंजरी' से माना है, जो उन्हीं के अनुसार 16वीं शती के अंतिम चरण या 17वीं शती के प्रथम चरण की रचना ठहरती है।[5] वस्तुतः डॉ० सिंह ने पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर अनेक कवियों को रसिक भक्त मान लिया है। उदाहरण के लिए मंडन, खुमान (मान कवि), प्रतापसाहि, मोहनदास आदि। यदि आप किसी एक कवि जैसे खुमान (मान) की रचनाओं को ठीक से परखें, तो यह भ्रान्ति शीघ्र ही दूर हो सकती है। अभी तक की खोज के आधार पर मैंने पर्वतदास को बुंदेलखण्ड का प्रथम रसिक भक्त कवि माना है। उनकी रचना 'दशावतार कथा' का रचना-काल सं० 1721 (1664 ई०) है, अतएव बुंदेलखण्ड में रसिक भक्ति का उत्थान इससे सौ वर्ष पूर्व हुआ होगा। उसे 17वीं शती का प्रथम चरण मानना तो उचित ही है। आश्चर्य है कि रसिक भक्ति की धारा राजस्थान और बुंदेलखण्ड में एक साथ बही।

पर्वतदास ने अपनी रचनाओं में जन पर्वत, परबत दास, पर्वत आदि नामों से अपने को अभिहित किया है, जिससे पर्वतदास नाम सही ठहरता है। उनकी रचनाएँ हैं—दशावातर कथा (1664 ई०), रामकलेवा रहस्य (लि० काल सं० 1726 अर्थात् 1670 ई०), विनय नव पंचक, जानकी ब्याह चतुर्थ रहस्य और षट रहस्य (1683 ई०)। रसिक भक्ति के सम्बन्ध में उनकी पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

सीताराम रहस्य यह, भक्त रसिक सुख मूल।
ध्यान मनन करिहैं जेइ, तिन्ह दंपति अनुकूल॥
जन परवत जे परम उपासक रस माधुर्जहि जाना।
रहस्य ध्यान ते अमित पाठ सुख होइहि मंगल नाना॥

यहाँ इस कवि के सम्बन्ध में संकेत भर किया गया है। इसके बाद बुंदेल-खण्ड में नवलसिंह प्रधान (1816-69 ई०), कामदानाथ 'सीताशरण' (1856-1909 ई०), जानकी प्रसाद 'रसिक बिहारी' (1863-82 ई०), वृषभानु कुंवरि 'रामप्रिया' (1875-1903 ई०), रामचरण कनकने 'कनकलता' (1867-80 ई०), पं० रामवल्लभाशरण 'प्रेमनिधि' (1880-1941 ई०), सीतारामशरण 'रामरसरंगमणि' (1880-1912 ई०), सीतारामशरण 'शुभशीला' (1880-1901 ई०), रानी सुजान कुंवरि (1893-97 ई०) आदि जैसे प्रमुख कवियो ने इस काव्यधारा को निरंतर प्रवहमान रखा। 19वीं शती के अंतिम चरण में भाण्डेर के जनकदुलारीशरण और ग्वालियर के सियालालशरण 'प्रेमलता' को छोड़ कर अधिकतर रानियों ने रसिक काव्य को प्रसार दिया, जिनमें छतरपुर की महारानी कमलकुमारी 'जुगलप्रिया', बिजावर की महारानी कांचन कुंवरि, महारानी रतन कुंवरि आदि प्रमुख हैं। रानियों के रसिक काव्य का एक अपना मनोविज्ञान है, अपनी मानसिकता और भावुकता तथा शैली के प्रति एक नई दृष्टि। महारानी वृषभानु कुंवरि 'रामप्रिया' को भी इसी गहराई से देखने की जरूरत•है।

वृषभानु कुंवरि का जन्म सं० 1912 (1855 ई०) में तिवारी ग्राम में हुआ था। उनके पिता विजयसिंह परमार बाघाटपति थे। 'अनुरागचंद्रिका' में उन्होंने अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

> औड़छेन्द्र राजेन्द्र मनि, वर बुंदेल कुल ईस।
> महत महेन्द्र सपाद प्रभु, भूपित जस रजनीस ॥4
>
> प्रभु तारा पति सिंधु हरि, पंच सब्द रमनीय।
> आदि वरन जुरि नाम जिहिं, जस कीरति रमनीय ॥5
>
> श्री महेन्द्र महराज पद, सहित सवाई जास।
> विद्यमान टिहरी नगर, टीकमगढ़ जु प्रकास ॥6
>
> राज गान बुंदेल वर, सर आमद इलकाब।
> जी सी आई ई सहित, दिय अंग्रेज सिताब ॥7
>
> विजयसिंह बाघाटपति, प्रमर सुता मम नाम।
> श्री वृषभानु कुमारि भनि, उक्त महीपति वाम ॥8
>
> श्रीसीता सहचरि सदा, रामप्रिया उपनाम।
> सरस उपासक रीति तें, दंपति रत सब जाम ॥9

> पटरानी पद पाय कैं, तिहिं मन्हेद्र प्रभु संग।
> श्री दंपति पद प्रीति करि, साधहुँ सुकृत अभंग ॥10
>
> श्री अनुराग सु चंद्रिका, यह सुग्रंथ रमनीय।
> श्री दंपति जस रस रसिक, सोधहिं कवि कमनीय ॥16
>
> नभ रस अंक निशेश मित, ससि मार्ग गुरुवार।
> ग्रंथ पूर्ण टिहरी नगर, औड़छेन्द्र थल सार ॥17[6]

उक्त पंक्तियां से स्पष्ट है कि वे ओरछानरेश महाराज प्रतापसिंह जू देव की पटरानी थीं। उनका उपनाम रामप्रिया था और वे रसिकोपासिका थीं। अनुरागचंद्रिका की रचना सं० 1960 (1903 ई०) में टिहरी नगर (टीकमगढ़) के राजमहल में हुई थी। रामप्रिया का विवाह 1869 ई० में हुआ था। पति की प्रेरणा और परिवार के भक्तिमय वातावरण के कारण महारानी में भक्ति का अंकुर पल्लवित हुआ। उन्होंने अनेक तीर्थों की यात्रा की और अयोध्या में कनक भवन का निर्माण करवाया। अलि वृषभानु कुंवरि, रामप्रिया सहचरि और रामप्रिया नाम से उनके स्फुट और ग्रंथ उपलब्ध हैं। सं० 1963 (1906 ई०) में रोगग्रस्त होकर वे साकेतवासिनी हो गई, किन्तु उनका काव्य आज भी जीवित है।

रामप्रिया की कुछ रचनाएं जो मुझे प्राप्त हुई हैं, दंपतिविनोद लहरी, मिथिला जी की बधाई, बना, होली रहस, झूलन रहस और पावस हैं, जिनका उल्लेख विनोदकार ने किया है।[7] नागरी प्रचारिणी सभा के विवरण में भक्तविरुदावली, औरंगचंद्रिका और दानलीला—तीन ग्रंथों का पता चलता है, पर वे मुझे उपलब्ध नहीं हो सके। लेकिन मुझे उनकी एक महत्वपूर्ण रचना—'अनुरागचंद्रिका' मिली है, जिसमें राम सम्बन्धी 104 पद और अनेक दोहे हैं। पहले भूमिका दोहों में है, फिर एक पद दिया गया है और बाद में पद की हर पंक्ति का बुंदेली गद्य में वार्तिक (टीका) है। कवि ने स्वयं संकेत किया है—

> रचि दोहन मधि भूमिका, तदनंतर तिहि पद्य।
> रचत तासु भावार्थ पुनि, वार्तक सुखप्रद सद्य ॥9॥[8]

श्रीमद्रामचन्द्र माधुर्जलीलामृत सार और वृषभान विनोद उनके प्रकाशित ग्रंथ हैं, पर प्रथम उपलब्ध नहीं हुआ। इन सबसे अलग अनुरागचंद्रिका की विशेषता यह है कि उसमें वार्तिक के रूप में बुंदेली का व्याख्यात्मक और

आलोचनात्मक गद्य है । मेरा प्रयोजन यहाँ केवल परिचय देने का है, समीक्षा करने का नहीं, इसलिए अनुरागचंद्रिका का सिर्फ एक अंश उद्धृत करना उचित समझता हूँ ।

⊙

अथ एकादशम प्रकाशः ॥ तस्य भूमिका ॥

दोहा—पावस बिसद बहार लखि, बिहरत बन चहुँ ओर ।
सिय सुप्रेमरस तैं पगे, प्रमुदित अबधकिसोर ॥1

कहूँ नर्तहि गावहि कबहुं, कबहुं बजावहि बेनु ।
लखि सहचरि सेवहि सुहृद, सिर धरि वर पद रेनु ॥2

सघन सोभ घनमाल की, दामिनि दमक विसाल ।
केकी कलित कुहूक तैं, बन मुद वलित रसाल ॥3

बरसत जल मृदु बुंद तैं, सरसत भिबिध समीर ।
परसत पावन प्रेम प्रभु, दरसत कतहुँ न पीर ॥4

श्रीमति मानस नंदनी, जगवंदन सुख हेत ।
तरल तरंगनि तैं भई, मुदरंगनि चित चेत ॥5

हरित अवनि रमनीय अति, जल बुंदनि दुति देति ।
मनु गुंथित मुकुतानि तैं, वसन बिछावन चेति ॥6

पेखि सुथल सिय भाव गुनि, हिंदोलक सजवाइ ।
परम प्रिया संजुत लगे, झूलन पिय रघुराइ ॥7

सियहि झुलावहि पिय कबहुँ, पियहि झुलावहि सीय ।
लखि प्रसून बरसाइ सुभ, गावहि अलि सुचि हीय ॥8

पद—झुलत राय सिया प्यारी ।
सावन सुखद मास सरसत सुचि मृदु बुंदियान झरत वारी ।
चपला चमकि चारू चहुं दिसि तैं पुनि पुनि दुरति सोभ सारी ।
दुहुन झुलावन आइ मनहुँ लखि रहि लजाइ अगनित बारी ।
घन गरजन केकीन कूक जुत मनु गावत गुन गन भारी ।
इंद्रवधुन पूरि हरियर महि मनु सेवति चूनरि धारी ।
सांझ समय अरूनित जलधर अनुराग प्रगट जनु दिसि चारी ।
गावहि सब सहचरी गीत वृषभानु कुंवरि अलि बलिहारी ॥

मूल—झुकि झूलत राम सिया प्यारी ॥1

टीका—पूर्व प्रकार सखीं वर्नन करै हैं कि हे प्यारी देखो श्रीमान राजकुमार राम नाम करिकैं प्रकासित रमनसील श्रीमान प्रीतम तथा श्रीमती निमिराज किसोरी जी ए दोऊ परम सोभायमान दंपतिहि डोल के मध्य झुकि करि झूलत नाम झूलि रहे हैं ॥1

मूल—सावन सुखद मास सरसत सुचि मृदु बुंदियान झरत वारी ॥2

टीका—कैसो समयो है जा विषैं हिंडोल क्रीडा श्रीमान दंपति करै हैं । सावन नाम करिकैं विदित सुखद नाम सुखदाता मास नाम महीना सो सुख जो है ताहि सरसत नाम सरसित करि रह्यो है । तथा सुचि कहै पवित्र मृदु कहै कोमल बुंदियान करिकैं वारि जो जल सो झरत नाम आकास तैं बरस रह्यो है ॥2

मूल—चपला चमकि चारू चहुँ दिसि तैं पुनि पुनि दुरति सोम सारी ॥3
दुहुन झुलावन आइ मनहुँ लाख रहि लजाइ अगनित वारी ॥4

टीका—चपला जो बिजुरी चारू कहैं सुन्दर सो चहुँ दिसि नाम चारो दिसा तैं चमकि नाम कौंधि करिकैं पुनि पुनि कहैं बार-बार सोभ जो सोभा ताहि सारी नाम अनुसरित करिकैं दुरित नाम दुरि दुरि जावै है ॥3 सो मनहु कहैं मानो दुहुँन के झुलावन के हेत अर्थात् श्रीमान दंपति के झुलावन के हेत अगनित वारी कहैं अनेक बार आइ करिकैं परम सोभायमान कौं लखि नाम निहारि करि लजाइ नाम लज्जित होय करि रहि जावै है ॥ अर्थात् अपनी सोभा कौं मलिन जानि लज्जित होय करि मेघ मंडल के मध्य मै लीन होय करि रहि जाय है ॥ इहाँ मानो सब्द के सम्बन्ध करि उत्प्रेक्षालंकार जाननैं भावार्थ प्रकासित है ॥4[9]

संकेत-संदर्भ :

1. टीकाकार मल्लिनाथ ने रामगिरि आश्रम का अर्थ—'रामगिर्याश्रमेपु चित्रकूटस्थ आश्रमेपु' किया है 2. प्रपन्नामृत, पृष्ठ 450 3. वही, पृष्ठ 87 4. रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय, पृष्ठ 539 5. वही, पृष्ठ 379 6. अनुरागचंद्रिका, हस्तलिखित, पृष्ठ 331-32 7. मिश्रबंधु विनोद, क्रम 2179 8. अनुरागचंद्रिका, हस्तलिखित, पृष्ठ 1 9. वही, पृष्ठ 166-67.

—शुक्लाना, छतरपुर, म० प्र०

आल्हा की कथा से संबंधित प्राचीन साहित्य

—उदय शंकर दुबे

⊙

लोककवि जगनिक द्वारा शताब्दियों पूर्व गाया गया लोक-काव्य आल्हा परंपरागत रूप से आज भी जनमानस में अपना स्थान बनाये हुए है। जगनिक ने जिस स्वतंत्र छंद और रोचक शैली में आल्हा की कथा का गान किया उसका मूल स्वरूप निर्धारित करना कठिन है क्योंकि जगनिक के बाद के अल्हैतों (आल्हा गायकों) ने अपने-अपने ढंग से बहुत-सी पंक्तियाँ मिला दीं। जगनिक के इस कथाकाव्य का कोई लिखित रूप नहीं था। वह एक कंठ से दूसरे कंठ तक स्मृति के सहारे चलता रहा। जगनिक सही माने में लोककवि थे। उनकी वाणी में साधारण जन को आकृष्ट करने की शक्ति निहित है। यही कारण है कि आज भी लोग आल्हा की पंक्तियां बड़े चाव से सुनते हैं। जगनिक के इस लोकगाथा का सन् 1865 ई० में प्रथम बार संकलन हुआ। फर्रुखाबाद के कलेक्टर सर चार्ल्स इलियट ने अल्हैतों के माध्यम से आल्ह का संकलन कर प्रकाशित कराया। तभी से इसे आल्ह-खंड का अभिधान दिया गया।

ऐसा कहा जाता है कि जगनिक ने बनाफरी बोली (संभवत: महोबा की बोली) में आल्हा का गायन किया था। ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी में इस बोली का क्या रूप था, यह शोध का विषय है। जगनिक ने जिस लोक-गीत को चुना और उसमें आल्हा की कथा को पिरोया, उन्नीसवीं शताब्दी में उसने एक स्वतंत्र छंद का स्थान ले लिया। बुन्देलखंड के प्रसिद्ध कवि नवल सिंह प्रधान ने इसी छंद में आल्ह रामायण और आल्ह महाभारत की रचना की। समय-समय पर कुछ श्रेष्ठ कवियों ने आल्हा की कथा को साहित्यिक रूप दिया। चन्दबरदाई ने पृथ्वीराज रासो के अंतर्गत 'महोबा समय' में परमाल के साथ आल्हा का भी वर्णन किया है। इसी प्रकार 'परमाल रासो' में आल्हा की कथा को थोड़ा विस्तार मिला है, इन दोनों ग्रंथों पर पर्याप्त चर्चा हो चुकी है। इसके अतिरिक्त जगतराज दिग्विजय ग्रंथ में आल्हा की संक्षिप्त कथा मिलती है। वीर-विलास ग्रंथ में आल्हा

मनीआ और बेला के सती होने का रुचिकर वर्णन हुआ है। यहाँ पर इन्हीं दो ग्रंथों में वर्णित कथा का विवेचन करना अभीष्ट है।

संवत् 1778 वि० (सन् 1721 ई०), में कवि हरिकेश ने अपने आश्रय-दाता के नाम पर जगतराज दिग्विजय ग्रंथ की रचना की। नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी की खोज विवरणिकाओं से ज्ञात होता है कि हरिकेश जहाँगीराबाद (वर्तमान सेवढ़ा-दतिया, म०प्र०) के निवासी थे। महाराज छत्रसाल की वीरता से आकृष्ट होकर कवि हरिकेश पन्ना राजदरबार में चले गये और कुछ समय पश्चात् छत्रसाल के पुत्र जगतराज के निजी कवि के रूप में चरखारी आ गये। यहीं पर रहकर उन्होंने जगतराज दिग्विजय ग्रंथ की रचना की थी।

इस ग्रंथ में कवि ने छत्रसाल के अंतिम युद्धों का वर्णन किया है जिसमें जगतराज ने अपनी वीरता प्रदर्शित की थी। इसमें जगतराज को उपदेश देने के लिए कवि ने चन्देलों का पूरा इतिहास प्रस्तुत किया है। जगतराज दिग्विजय ग्रंथ को कवि हरिकेश के मुख से आद्यान्त सुनने पर जगतराज ने प्रसन्न होकर कवि को विजयपुर गाँव, विजय हाथी, विजय नाम का घोड़ा, आभूषण, सिरोपाव, धनुष, बाण-तरकस, ढाल-तलवार, जड़ाऊ गजरा, गुंजा, हीरे की अँगूठी, कुंडल और तोड़ा भेंट किया।

जगतराज दिग्विजय ऐतिहासिक वीरकाव्य है। एक प्रसंग में कवि हरिकेश ने जगतराज को चन्देलों की उत्पत्ति से लेकर उनके द्वारा किये गये कार्यों का विस्तृत विवरण सुनाया। इसी क्रम में कवि ने 51 छंदों में परमाल और आल्हा की कथा का अत्यंत संक्षेप में वर्णन किया है। कवि के वर्णन का आधार-ग्रंथ पृथ्वीराज रासो का महोबा समय है। हरिकेश कवि का कथन है कि महाभारत के युद्ध में जब वीरों की इच्छा पूरी नहीं हुई तो वे पुन: अपनी युद्धेच्छा की पूर्ति के लिए कलियुग में उत्पन्न हुए—

चौपाई :

पृथ्वीराज दुर्योधन राजा। चावंडरा दुशासन भ्राजा ॥
शत बंधहु सब सामंत जानहु। गुरु राम सुर गुरु पहिचानहु ॥
चंद कवि इमि भाखि भवानी। सो कैमास सुनउ मो बरनी ॥
लाखन करन समर बड़ दानी। तालन घट पति कच्छ बखानी ॥
जरासंध जयचंदहि जानहु। रती जुन्हाई रानी मानहु ॥
वित्तवाहु लक्षण कह कहिये। धर्मराज परमाल जतैये ॥
मल्हन कही द्रोपदी रानी। कहि हरिकेश चन्द्र कृत वानी ॥

दोहा :

आल्हा की जननी जगत देवल देवि बखान।
जगदेवी यश खान कहि जाको सुत मलखान॥
मल्हखान भैरव बली ऊदल राजा शल्ल।
डिरियासी दोनोक हिति कहि विराट को अल्ह॥
कहति विकरणें वरणि बुध सो बल्हारो वीर।
भारत करि करि भरहि महि करि भारत रणधीर॥

कवित्त :

सात्विक यदुवंशी सो छत्रसाल गहिरवार,
शक्तिसिंह तीर ताहि भूरिश्रवा जानिहो।
भीषम पिता महान जान जगनायक को,
पार्थसुत आप अहि वरण बखानो हो।
हौं तो हों विराट सुता उत्तरा कुमार ख्यात,
ईश्वरी प्रभात स्वप्न दीन्हों सो प्रमानो हो।
वरणि बखाने महाभारत के वीर तुमें,
हमें सत्य लोक को संयोग भोग आनो हो॥

बेला ने यह पूर्व प्रसंग अपने पति ब्रह्मजित को एकांत में सुनाया था। इससे यह ज्ञात होता है कि कवियों ने आल्हा की कथा को महाभारत की पुनरावृत्ति मानकर उसे मिथक का रूप दे डाला। एक प्रकार से कवियों ने आल्ह की प्रचलित कथा का मिथकीकरण किया। कवि हरिकेश ने एक छंद में ऊदल की वीरता का बखान करते हुए कहा है—

ऊदल-ऊदल मारि प्रचारि करी बहुरार महारण ऊदल।
शूर महालखि शूर कहें करणी भरपूर मूरति भूतल।
आल्ह करी परमाल लखी करवालहि ब्रह्महिजीत हितू तल।
वीर बली समरथ्य कहैं हरिकेस दुहूँ दल ऊदल-ऊदल॥

चूंकि हरिकेश कवि ने पृथ्वीराज रासो को अपना आधार बनाया था अत: महोबा समय के वर्णन को ही उन्होंने संक्षेप में प्रस्तुत कर दिया। इससे यह ज्ञात होता है कि सन् 1721 ई० तक 'महोबा समय' का पूरा प्रचार हो गया था और उसे एक प्रामाणिक ग्रंथ भी स्वीकार कर लिया गया था।

कवि हरिकेश के पश्चात् बुन्देलखण्ड के ही कवि ज्ञानीराम ने संवत् 1798 वि० (सन् 1741 ई०) में वीर-विलास ग्रंथ की रचना की। इसका विषय है—चन्देलों और चौहानों का युद्ध। इस ग्रंथ की तीन हस्तलिखित प्रतियाँ ज्ञात हैं। यह बहुत छोटा-सा काव्य ग्रंथ है।

ज्ञानी कवि का विशेष परिचय ज्ञात नहीं है। कवि ने सर्वप्रथम रस-विलास ग्रंथ की रचना की थी, जो संप्रति अनुपलब्ध है। यह शृंगार रस प्रधान ग्रंथ था। शृंगार रस से सराबोर रस विलास ग्रंथ के छंदों को, जब ज्ञानी कवि के मित्रों ने सुना तो उनसे वीर रस प्रधान ग्रंथ लिखने का आग्रह किया। अपने मित्रों के अनुरोध पर ज्ञानी जू ने वीर-विलास ग्रन्थ की रचना की—

तब सब मिलिकै या कही, अब कछु बरनौ वीर।
भयो दरेरो कौन विधि, नदी बेतवे तीर॥

आल्हखण्ड का प्राण 'आल्हा मनौआ' है। ज्ञानी राम ने इसी को साहित्यिक रूप में वीरविलास में प्रस्तुत किया है। ज्ञानीराम द्वारा वर्णित कथा का सारांश इस प्रकार है—"वर्तमान जलालपुर के पास बेतवा नदी के किनारे चौहानों ने चंदेलों का रास्ता रोक लिया और युद्ध करने का आह्वान किया। इस समय आल्हा-ऊदल कन्नौज में थे। परमाल ने उन्हें अपने देश से निष्कासित कर किया था। माहिल के कहने पर अच्छा मौका पाकर पृथ्वीराज ने भारी सेना के साथ महोबा पर चढ़ाई कर दी। रानी मल्हना को जब पृथ्वीराज के महोबा पर आक्रमण करने का समाचार मिला तो उसने जगनिक से विनती की, कि वह शीघ्र कन्नौज जाय और आल्हा को मनाकर महोबा लिया लाये। बिना आल्हा के पृथ्वीराज से कौन युद्ध करेगा। मल्हन दे रानी की दशा का वर्णन कवि ज्ञानीराम के शब्दों में—

रोवति धोवत सोचति है तुम सो विनयो दुःख काहि सुनैये।
की कर सो धरि देहु पिथौरहि लै हर नागर पारस दैये।
द्रोपती कैसी दसा अब होत है श्री करुनानिधि को कह पैये।
की अब मैं जग जोगनी होती हौं की जगनाइक आल्ह मनैये॥

जगनायक रानी मल्हना दे की कारुणिक दशा को देखकर आल्हा को मनाने जाने के लिए तैयार हो गया। राजा परमाल ने उसे सिरोपाव दिया, ब्रह्मा ने अपनी कटार तथा हरनागर घोड़ा, मल्हना दे रानी ने अपना मुक्ता-माल देकर, जगनिक का पैर पकड़कर बार-बार विनती की कि "कन्नौज

जाने में विलंब न करना।" रानी कीरत सागर तक जगनायक को पहुँचाने गई। कीरत सागर चंदेलों का पूरा इतिहास अपने में समेटे हुए है। इसी सागर के तट पर रानी ने जगनिक की विदाई की थी। रानी कीरत सागर के तट पर आम्र वृक्ष के तले खड़ी हो जगनिक से कहती है—"देश को चौहान ले रहा है, तुम आल्हा को साथ लेकर, कन्नौज से हरबर (जल्दी) लौटना।" वह तब तक कीरत सागर पर खड़ी जगनायक को कन्नौज जाने के मार्ग की ओर एकटक देखती रही जब तक जगनायक आँखों से ओझल न हो गया।

इधर माहिल ने पृथ्वीराज को पत्र लिखकर सन्देशा भेजा कि "जगनिक, आल्हा को मनाने के लिए कन्नौज जा रहा है। वह कन्नौज तक न पहुँच पायें, उसे रास्ते ही में रोक कर हरनागर घोड़ा छिनवा लें।" अपने दूतों से माहिल का सन्देशा पाकर पृथ्वीराज ने धाँधू और चामुंड वीर को आज्ञा दी कि वे जाकर रास्ते ही में जगनिक को पकड़ लें। पृथ्वीराज का आदेश पाकर चामुंड वीर ससैन्य जगनिक को पकड़ने के लिए चल पड़ा। पृथ्वीराज की सेना को अपनी ओर आते ही जगनिक ने अपने घोड़े को और तेजी से दौड़ाया। वह धांधू की पाग छीनकर आगे निकल गया। चामुंड राय और उसके साथी हाथ मलते रह गये। वहाँ से चलकर जगनिक कालपी—जमुना के तट पर पहुँचा। उसने यमुना में स्नान कर भगवान् का पूजन कर भोग लगाया—हरनागर को सहलाया-पुचकारा। पान-मसाला खाकर वह आगे बढ़ा। सूर्य डूबने के दो घड़ी पूर्व वह कुरहट पहुँचा। कुरहट गांव के लोगों ने उसका घोड़ा छीनना चाहा किन्तु वह सबको धता बताकर आगे निकल गया। यहाँ से चलकर वह काली नदी के तट पर पहुँचा। स्नान पूजन करके वह सीधे कन्नौज की ओर चला तथा उसी दिन कन्नौज पहुँच गया।

कन्नौज पहुँचकर वह सीधे आल्हा के महल में गया। ड्योढ़ीदार ने उसका उचित आदर-सत्कार किया। भोजनोपरांत जगनिक आल्हा को महोबा की स्थिति से अवगत कराता है। आल्हा महोबा लौटने को तैयार नहीं होता। जगनिक मल्हन दे रानी की कारुणिक व्यथा सुनाता है और अपने देश की रक्षा का स्मरण दिलाता है। अंत में आल्हा जगनिक की बात मानकर महोबा आने की तैयारी में जुट जाता है। आल्हा सेना सहित महोबा आता है। आल्हा के आगमन से महोबा में खुशी छा जाती है।

पृथ्वीराज और परमाल की सेनाओं में भयंकर युद्ध होता है। अन्त में आल्हा की विजय होती है। रानी मल्हन दे ने अपनी सखियों के साथ मनिया-

देव का विधिवत पूजन किया। इसी के साथ वीर-विलास ग्रंथ का समापन हुआ है।

आल्हा की गाथा को रुचिकर बनाने के उद्देश्य से ज्ञानीराम ने बीच-बीच में सरस कथा-प्रसंगों का वर्णन किया है। कन्नौज स्थित आल्हा के महल का ड्योढ़ीदार जगनिक द्वारा बोली जाने वाली भाषा को समझ जाता है। ज्ञानीराम ने इसे महोबा की भाषा कहा है—

पौरिया नैके जुहार करी कर सोहन कंकन कंचन आसा।
द्वार खड़ो जगनाइक जु कहै जान गयो है महोबे की भासा।
आइ बतावै लगै लरिका सब बांट दियो तिन्हैं पान बतासा।
आये पुरा के पुरातन भैंट को ज्वान औ बालक जानत भासा॥

जिस समय जगनिक कन्नौज आल्हा के घर पहुँचा उस समय आल्हा पूजा में तल्लीन था। पूजनोपरांत आल्हा ने जगनिक से कहा कि, 'कीन्ही कृपा सुधि लीन्ही भली बहुते दिन पीछे इहाँ पगु धारे।' आल्हा ने जगनायक का विधिवत् सत्कार किया। जगनिक जब भोजन कर रहा था उसी समय बालक इन्दल वहाँ आ जाता है। कवि ज्ञानीराम कहते हैं—

जेंवत जात बतात विलास सौं खेलत आइ गयो इंदल बारो।
मोद सो गोद लियो जगनाइक पूछत लाइक सौं पुचकारो।
संग हमारे मैं जैबो लला बहुतें दिन मैं जगे भाग हमारो।
हाथ में भात विराजत है मनो बाल मराल चरावत चारो।
चूरा औ साँकर आकर मोल की काढि भडैंरे ते माल्हन आनी।
इंदुल को पहिरावत है पहिराइ दई सो भई जो उमानी।
मछलै दीन्हों जवाहिर हार जुहार कह्यो कर जोर कै रानी।
ल्यावन काज पठायो जो हमें लगे तुम्हैं बिना फीकी रजधानी॥

ऐसे कई प्रसंग वीर-विलास ग्रंथ में मिलते हैं। इस ग्रंथ में दोहा, कवित्त, सवैया आदि मिलाकर कुल 442 छंद हैं। जगनिक ने जिस आल्हा का जन-साधारण की भाषा में गान किया उसी को अन्य कवियों ने समय-समय पर अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किया किन्तु लोककवि जगनिक की समता अन्य कवि न कर सके।

—साहित्य विभाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
इलाहाबाद-211003

बिजावर के कविवर बिहारीलाल भट्ट
की जन्मशताब्दी पर
उनका ही छप्पय और दोहा

⊙

अशुभ का संहार

कबिता, काब्य, कबित्त नाम तीनों यह जानों,
तासु प्रयोजन चार सकल बुधजन अनुमानों।
इक जस दूजे द्रब्य तृतिय ब्योहार बिचारौ,
चौथे असुभ बिनष्ट उदाहरनहु निरधारौ।
इमि बिनस्यौ असुभ मयूर कौ भारवि लह ब्यवहार है,
कबि धावक कों धनगन मिलो कालिदास जस-सार है।

—साहित्य-सागर से

⊙

गोवर्धन

तुम मोहन बन राष्ट्र कौ, लेव गुबर्धन धार।
लकुट सहारे काव्य के, हम दैबे तैय्यार।।

—भारत-दर्शनावली से